वोट कार
के लिए
तेलंगाना
के लिए वोट

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वोट कार
के लिए
तेलंगाना
के लिए वोट

वर्ष-28 अंक : 238 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) कार्तिक शु.4 2080 शुक्रवार, 17 नवंबर-2023

प्रधान संपादक – डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये

तेलंगाना पिछला कल

2014 के पहले की दुनिया

बिजली संकट से किसानों की फसल योजना प्रभावित

17 दिसंबर, 2012. टाइम्स ऑफ इंडिया

टीओआई से बात करते हुए, वर्णी मंडल के मोसरा गांव के एच गंगाधर ने किसानों के हितों की रक्षा नहीं करने के लिए सरकार को दोषी ठहराया. उन्होंने कहा कि अधिकांश किसानों ने धान की आधी फसल खेतों में ही छोड़ दी है, क्योंकि सरकार पिछले खरीफ सीजन में कृषि क्षेत्र को सात घंटे बिजली उपलब्ध कराने में विफल रही है। निज़ामाबाद मंडल के मल्लाराम गांव के एक अन्य किसान बानोथु किशन ने कहा कि सरकार का अपनी जिम्मेदारियों से भागना उचित नहीं है.

ग्रामीण हिस्सों को अधिक बिजली कटौती का सामना करना पड़ेगा

25 नवंबर 2011. बिजनेसलाइन

ग्रामीण इलाकों में दिन के समय 2 घंटे से लेकर 12 घंटे तक बिजली आपूर्ति के बिना रहना पड़ सकता है.

कोयला उत्पादन में वृद्धि के बावजूद बिजली कटौती जारी रहेगी

13 अक्टूबर 2011. द हिंदू

सिंगरेनी खदानों में कोयला उत्पादन बुधवार को बढ़कर 65,000 टन हो गया, कुछ खनिकों ने करीमनगर जिले के गोदावरीखनी क्षेत्र में काम करना जारी रखा.

किसान की दुर्दशा

15 जुलाई, 2002. द हिंदू

लगातार फसल बर्बादी के बाद बढ़ते कर्ज के कारण एक किसान दंपत्ति ने आत्महत्या कर ली.

आइए फिर पुराने दिनों को आने न दें.

शहर में आज बिजली गुल

1 मार्च, 2008. टाइम्स ऑफ इंडिया

शहर के कुछ इलाकों में शनिवार को बिजली आपूर्ति नहीं होगी.

बिजली कटौती के खिलाफ उद्योगपतियों का प्रदर्शन

आज से चार घंटे की बिजली कटौती

1 अक्टूबर, 2012, द हिंदू

हैदराबाद.

प्रमुख उद्योगों के लिए तीन दिवसीय बिजली अवकाश

12 जुलाई, 2012. बिजनेस स्टैंडर्ड

पॉवर यूटिलिटी ने बुधवार को प्रमुख उद्योगों को तीन दिन और छोटे उद्योगों को एक सप्ताह में दो दिन बिजली आपूर्ति बंद करने की घोषणा की, क्योंकि राज्य में चल रहे सूखे के कारण आपूर्ति–माँग परिदृश्य बिगड़ गया है.

वोट कार
के लिए
तेलंगाना
के लिए वोट

भारत राष्ट्र समिति

'मैंने जीवन में ऐसा प्रधानमंत्री नहीं देखा'

शरद पवार ने पीएम मोदी पर दिया बडा बयान

मुंबई, 16 नवंबर (एजेंसियां)। एनसीपी सुप्रीमो शरद पवार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर बिना नाम लिए निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि मैंने अपने समय में कई प्रधानमंत्रियों को देखा और उनका भाषण सुना है लेकिन मैंने जीवन में कभी ऐसा कोई प्रधानमंत्री नहीं देखा जो किसी प्रदेश में जाने के बाद वहां के मुख्यमंत्रियों पर निजी बयान दिया हो। शरद पवार ने कहा कि मैंने कभी ऐसा कोई प्रधानमंत्री नहीं देखा जो किसी मुख्यमंत्री का नाम लेकर उन पर आरोप लगाते हों। एनसीपी प्रमुख शरद पवार मुंबई में मर्चेंट एसोसिएशन की एक बैठक में व्यापारियों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान शरद पवार ने व्यापारियों और किसानों की समस्याओं पर गंभीर चर्चा की।

उन्होंने किसानों और व्यापारियों के हित को लेकर भी केंद्र सरकार की नीतियों पर निशाना साधा।

जल्द सीट बंटवारे पर भी होगी चर्चा

एनसीपी प्रमुख शरद पवार ने इस दौरान एक सवाल के जवाब में महाविकास अघाड़ी की सीटों के बंटवारे को लेकर भी जवाब दिया। उन्होंने कहा कि जल्द ही कांग्रेस, एनसीपी और शिवसेना के नेताओं के साथ स्थानीय पहलुओं पर विचार विमर्श किया जाएगा, इसके बाद तीनों दलों के बीच सीटों का बंटवारा होगा। वहीं दिवाली पर अजित पवार के साथ देखे जाने पर पूछे गए सवाल के संदर्भ में उन्होंने कहा कि हम एक साथ त्योहार मनाते हैं, ये हमारे परिवार की परंपरा है, इसका राजनीतिक महत्व नहीं है। दरअसल पिछले दिनों दिवाली पर अजित पवार अपने पूरे परिवार के साथ शरद पवार से मिलने पहुंचे थे।

केंद्र को व्यापारी-किसान की चिंता नहीं

शरद पवार ने कहा कि व्यापार और सहकारी क्षेत्र में जो भी लोक कल्याणकारी कानून पारित किये गये हैं, वे किसानों और व्यापारियों के हित में नहीं लगते। उन्होंने कहा कि हर व्यापारी और किसान चार पैसे कमाने के लिए मेहनत करते हैं लेकिन इस संबंध में सरकार का नजरिया ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि सरकार ने जो इस संबंध में नीतियां तैयार की हैं, वे किसानों और व्यापारियों के हित में नहीं हैं। शरद पवार ने कहा कि अफसोस की बात है कि प्रधानमंत्री का ध्यान इस समस्या की तरफ नहीं है।

गुजरात : खराब सिग्नल के कारण रुकी ट्रेन के यात्रियों से लूटपाट

खेड़ा, 16 नवंबर (एजेंसियां)। गुजरात के खेड़ा जिले में खराब सिग्नल के कारण ट्रेन रुकने पर लुटेरों के एक गिरोह ने यात्रियों से 3.20 लाख रुपये मूल्य का कीमती सामान लूट लिया। रेलवे पुलिस ने यह जानकारी दी। पश्चिम रेलवे की पुलिस अधीक्षक सरोज कुमारी ने बताया कि यह घटना 14 नवंबर को तड़के हुई। उन्होंने बताया कि रेलवे पुलिस ने अज्ञात बदमाशों को पकड़ने के लिए कई टीम गठित की हैं और यह भी जांच की जा रही है कि क्या सिग्नल की खराबी किसी साजिश का नतीजा तो नहीं थी। आणंद रेलवे पुलिस थाने में दर्ज प्राथमिकी के अनुसार, इंदौर की ओर जा रही गांधीधाम-इंदौर एक्सप्रेस 14 नवंबर को तड़के अनघड़ी गांव के बाहरी इलाके में रुकी। पुलिस अधीक्षक ने कहा, "लुटेरों ने खिड़कियों के पास बैठे पांच यात्रियों को निशाना बनाया।

बंगाल की खाड़ी के ऊपर बना गहरे दबाव का क्षेत्र ले सकता है चक्रवाती तूफान का रूप

भुवनेश्वर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने कहा है कि बंगाल की खाड़ी में बना गहरे दबाव का क्षेत्र शुक्रवार तक चक्रवाती तूफान का रूप ले सकता है और बांग्लादेश तट को पार कर सकता है। उसने एक बुलेटिन में कहा कि बृहस्पतिवार को दबाव के क्षेत्र ने मजबूत होकर गहरे दबाव के क्षेत्र का रूप ले लिया और वह 17 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से उत्तर-उत्तरपूर्व दिशा में बढ़ रहा है। उसने कहा कि बृहस्पतिवार सुबह साढ़े आठ बज यह आंध्रप्रदेश के विशाखापत्तनम के पूर्व-दक्षिणपूर्व में करीब 390 किलोमीटर तथा ओडिशा में पारादीप के दक्षिण-दक्षिणपूर्व में 320 किलोमीटर की दूरी पर था। आईएमडी ने बुलेटिन में कहा, " इस तंत्र के उत्तर-उत्तपूर्व दिशा की ओर बढ़ते रहने एवं अगले 24 घंटे में मजबूत होकर चक्रवाती तूफान का रूप लेने एवं शनिवार तड़के मोंगला एवं खेपूपारा के बीच बांग्लादेश तट को पार कर लेने की आशंका है। हवा की रफ्तार 55-65 किलोमीटर प्रति घंटे से 75 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंच सकती है।" विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि उसके प्रभाव से ओडिशा के कई हिस्सों खासकर तटीय क्षेत्र में भारी वर्षा होगी तथा 40 से 70 किलोमीटर प्रति घंटे तक की रफ्तार से तेज हवाएं चलेंगी। मछुआरों को 18 नवंबर तक गहरे समुद्र में नहीं जाने की सलाह दी गयी है क्योंकि इस दौरान वहां स्थिति बहुत खराब रहेगी।

एसआर ओझा हो सकते हैं अगले डीजीपी, अप्रैल में सेवानिवृत्त होंगे कुंडू

शिमला, 16 नवंबर (एजेंसियां)। हिमाचल प्रदेश के अगले पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) आईपीएस अधिकारी एसआर ओझा हो सकते हैं। डीजीपी संजय कुंडू अप्रैल में सेवानिवृत्त हो जाएंगे। कुंडू का नाम एक विवाद से जुड़ने के बीच वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी ओझा नई दिल्ली से प्रतिनियुक्ति से लौट चुके हैं। वह कुंडू के बैच के ही हैं। इनके प्रतिनियुक्ति से लौटने से पुलिस महकमे में चर्चा है कि वरिष्ठता के चलते उन्हें डीजीपी बनाया जा सकता है। हालांकि इन दोनों से पहले 1988 बैच के वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी तपन कुमार जून में सेवानिवृत्त होंगे। वह अभी आईबी में वरिष्ठ पद पर तैनात हैं। डीजीपी कुंडू और एसआर ओझा 1989 बैच के हैं। ओझा पांच साल पहले प्रतिनियुक्ति पर गए थे। अब लौटकर हिमाचल सरकार के पास अपनी ज्वाइनिंग दे दी है। पुलिस मुख्यालय ने अभी उन्हें कोई जिम्मा नहीं सौंपा है। कुंडू के दो माह छुट्टी पर जाने पर एडीजी विजिलेंस सतवंत अटवाल को डीजीपी का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया था।

डोडा में भूकंप के झटके

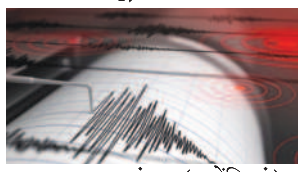

जम्मू, 16 नवंबर (एजेंसियां)। जम्मू संभाग के डोडा जिले में गुरुवार को भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र ने इसकी जानकारी दी है। भूकंप विज्ञान केंद्र ने बताया कि सुबह नौ बजकर 34 मिनट पर डोडा में रिक्टर स्केल पर 3.9 तीव्रता के भूकंप के झटके दर्ज किए गए। इसके चलते किसी तरह के जानमाल के नुकसान की फिलहाल सूचना नहीं मिली है।

मंगलवार को कारगिल में लगे झटके

केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के कारगिल में मंगलवार को भूकंप के झटके महसूस किए गए। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र ने ट्वीट कर बताया कि कारगिल में भूकंप की तीव्रता 4.4 रही। इस दौरान भी किसी के हताहत होने या घायल होने की सूचना नहीं मिली।

दो पूर्व सांसदों की आलोट में जंग, भाजपा के मालवीय के सामने निर्दलीय गुड्डू की चुनौती

रतलाम, 16 नवंबर (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश में रतलाम जिले की आलोट विधानसभा सीट पर दिलचस्प मुकाबला है। कांग्रेस के पूर्व सांसद प्रेमचंद गुड्डू के निर्दलीय प्रत्याशी बनने से मुकाबला रोचक हो गया है। भाजपा ने पूर्व सांसद चिंतामण मालवीय को उम्मीदवार बनाया है। वहीं, कांग्रेस ने मनोज चावला को मैदान में उतारा जरूर है लेकिन मुख्य मुकाबला दो पूर्व सांसदों के बीच ही है। आलोट विधानसभा सीट उज्जैन संसदीय क्षेत्र में आती है। अनुसूचित जाति वर्ग के लिए आरक्षित इस सीट पर 2018 में कांग्रेस के मनोज चावला ने भाजपा प्रत्याशी जितेन्द्र गेहलोत (थावरचंद गहलोत के पुत्र) को 5,448 मतों से परास्त किया था। इससे पहले 2013 में भाजपा के जितेन्द्र गहलोत, 2008 में भाजपा के ही मनोहर ऊंटवाल, 2003 में कांग्रेस के प्रेमचंद गुड्डू, 1998 में भाजपा के मनोहर ऊंटवाल, और 1980 से 1993 तक पूर्व केन्द्रीय मंत्री थावरचंद गहलोत इस सीट को जीत चुके हैं। इस बार भाजपा ने पूर्व सांसद चिंतामण मालवीय पर दांव लगाया है। 2019 के लोकसभा चुनावों में मालवीय का टिकट कटा था और अब उन्हें विधानसभा चुनावों में उतारा गया है। चिंतामण मालवीय को जब भाजपा ने प्रत्याशी घोषित किया, तब उनके नाम पर विरोध भी कम नहीं था। स्थानीय भाजपा नेता और कार्यकर्ता बाहरी प्रत्याशी थोपे जाने का विरोध कर रहे थे। सांसद नहीं थे तो मालवीय का संबंध भी इस इलाके से टूट गया था। दूसरी ओर, उज्जैन के सांसद रहे प्रेमचंद गुड्डू ने ऐसा नहीं किया। गुड्डू 2003 और 2008 में भाजपा की लहर के बावजूद यहां से विधायक बने। उसके बाद जब लोकसभा सदस्य बने तब भी आलोट से उनका संपर्क कायम रहा।

जहां सुरंग में फंसे हैं 40 मजदूर, वहाँ आया भूकंप

देहरादून, 16 नवंबर (एजेंसियां)। उत्तराखंड में एक बार फिर धरती हिली है। इस भूकंप के झटके उत्तरकाशी के सिलक्यारा इलाके में भी महसूस किए गए हैं। ये वही इलाका है, जहां टनल में 40 श्रमिक फंसे हुए हैं, जिनको बचाने के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया जा रहा है। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के अनुसार, रिक्टर स्केल पर इस भूकंप की तीव्रता 3.1 मापी गई है। एनसीएस के अनुसार, उत्तरकाशी में ये भूकंप देर रात 02 बजकर 02 मिनट 10 सेंकड पर आया था। इसका केंद्र के जमीन के अंदर गहराई में पांच किलोमीटर था। आपको बता दें कि उत्तरकाशी में 12 नवंबर की प्रातः चारधाम प्रोजेक्ट के तहत बन रही टनल में एक हिस्सा धंस गया था। इस मलबे में 40 श्रमिक हर पल मौत से जूझ रहे हैं। अच्छी बात ये है कि अभी सभी 40 श्रमिक सुरक्षित बताए जा रहे हैं। टनल के प्रवेश द्वार से लगभग 200 मीटर अंदर 40 मजदूर जहां फंसे हैं।

'कद में छोटे लेकिन अहंकार बहुत है'

प्रियंका गांधी ने ज्योतिरादित्य सिंधिया को बताया गद्दार

भोपाल, 16 नवंबर (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश की 230 विधानसभा सीटों के लिए 17 नवंबर को मतदान होगा। चुनाव से पहले दतिया विधानसभा में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने ज्योतिरादित्य सिंधिया पर जमकर निशाना साधा। प्रियंका ने सिंधिया को गद्दार बताया। प्रियंका गांधी ने कहा, "क्या आप सिंधिया जी को जानते हैं? हमने उत्तर प्रदेश में एक साथ काम किया। हम यूपी के लोग अपनी शिकायत या गुस्सा व्यक्त कर देते हैं। हम सब कुछ बाहर निकाल देते हैं। हमें महाराज बोलने की आदत नहीं है।" कांग्रेस नेता ने तंज कसते हुए कहा कि क्या है कि वो कद में थोड़े छोटे पड़ गए लेकिन अहंकार में तो भई, वाह भई वाह। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता उनसे कहते थे कि उन्हें अपना काम कराने के लिए सिंधिया को महाराज बोलना पड़ता है और यह कार्यकर्ताओं की आदत नहीं है। कांग्रेस महासचिव ने ज्योतिरादित्य सिंधिया पर कटाक्ष करते हुए कहा, "उन्होंने अपने परिवार की परंपरा अच्छे से निभाई है।

विश्वासघात तो बहुतों ने किया है लेकिन इन्होंने ग्वालियर और चंबल की जनता के साथ विश्वासघात किया है। आपकी पीठ में छुरा घोंपा है। बनी-बनाई सरकार को गिरा दिया और वो सरकार आपकी थी, आपने वोट दिया था उसके लिए।"प्रियंका ने सिंधिया का जिक्र करते हुए आगे कहा, "एक बात है, मोदी जी लोगों को पहचानने में माहिर हैं। उन्होंने दुनिया भर से गद्दारों और कायरों को इकट्ठा किया और उन्हें अपनी पार्टी में ले लिया।" प्रियंका ने कहा कि उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और भाजपा के पुराने कार्यकर्ताओं पर दया आती है जिन्होंने संगठन के लिए कड़ी मेहनत की। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मार्च 2020 में कांग्रेस छोड़ दी थी और भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए थे। उसके बाद मध्य प्रदेश में कांग्रेस सरकार गिर गई। इस संदर्भ में प्रियंका ने उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी पर इस बात के तंज किया कि वह हमेशा इस बात की शिकायत करते रहते हैं कि विपक्षी नेता उन्हें कैसे-कैसे नाम से बुलाते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री मोदी इस बात को दोहराते रहते हैं कि उन्होंने मुझे इतनी गालियां दीं। क्या आपने सलमान खान की फिल्म 'तेरे नाम' देखी है जिसमें वह शुरू से आखिर तक रोते रहे थे? प्रियंका ने चुटकी लेते हुए कहा, "मैं कहती हूं, आइए मोदी जी पर भी इसी नाम से एक फिल्म बनाएं।"

आकांक्षा दुबे आत्महत्या केस

7 महीने बाद जेल से बाहर आया आरोपी भोजपुरी सिंगर समर सिंह

प्रयागराज, 16 नवंबर (एजेंसियां)। भोजपुरी एक्ट्रेस आकांक्षा दुबे की मौत मामले में आरोपी सिंगर समर सिंह को मिली जमानत के बाद आज यानी गुरुवार को उसे जिला जेल से रिहा कर दिया गया है। जमानतदारों के वैरिफिकेशन के बाद सुबह वाराणसी के जिला जेल से उसे रिहा किया गया। इसके बाद समर दोस्तों के साथ आजमगढ़ के लिए रवाना हो गया। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एक सप्ताह पहले ही समर सिंह को बॉन्ड पर रिहा करने का आदेश दिया था, जिसके बाद परिजनों ने वाराणसी के जिला जेल में परवाना दाखिल किया था। दीपावली की छुट्टी होने की वजह से समर सिंह के जमानत के कागज तैयार नहीं हो सके थे। उसके दस्तावेज और जमानतदारों का वैरिफिकेशन नहीं हो सका था। 15 नवंबर को समर सिंह के सभी दस्तावेजों की जांच पूरी हो गई। गुरुवार सुबह जेल अधीक्षक की संस्तुति के बाद समर सिंह को रिहा कर दिया गया। भोजपुरी सिंगर समर सिंह 7 महीने से वाराणसी जेल में बंद था। दो महीने पहले वाराणसी कोर्ट ने उसकी जमानत याचिका खारिज कर दी थी,

उम्र 98 साल, 73 साल का करियर और अब गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

कौन हैं सबसे उम्रदराज वकील मेनन, अब भी कर रहे वकालत

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर और सबसे लंबे समय तक वकालत करने वाले वकील पी बालासुब्रमण्यन मेनन 98 साल के हो चुके हैं, मगर अब भी वह वकालत करना नहीं छोड़ रहे हैं। उनका कहना है कि वह अभी रिटायरमेंट के बारे में नहीं सोच रहे हैं। जब उनसे रिटायरमेंट के बारे में पूछा गया तो एडवोकेट पी बालासुब्रमण्यम मेनन ने कहा कि मैं जितना हो सके, उतना काम करूंगा। मैं 98 साल का हूं। मैं रिटायरमेंट के बारे में सोच भी नहीं रहा हूं। अब भी मैं काम करता हूं और अपनी आजीविका कमाता हूं। बार एंड बेंच की खबर के मुताबिक, पी बालासुब्रमण्यम मेनन ने हाल ही में दुनिया में सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले वकील के रूप में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज कराया है। हैरानी की बात है कि उनकी उम्र 98 साल है और उन्होंने वकालत के पेशे में 73 साल और 60 दिन पूरे कर लिए हैं। इस तरह उन्होंने जिब्राल्टर सरकार के वकील लुईस ट्राय के 70 साल और 311 दिनों के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया है।

बार एंड बेंच से बातचीत में पी बालासुब्रमण्यम मेनन ने कहा कि मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मेरा नाम गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज होगा। मेनन ने वकालत करियर की शुरुआत साल 1950 में की थी और साल 1952 से सिविल लॉ में विशेषज्ञता हासिल कर रहे हैं। भले ही मेनन ने वकालत में 73 साल से अधिक का समय पूरा कर लिया हो, मगर यह पेशा उनकी पहली पसंद नहीं थी। अपने भाई-बहनों के साथ इंजीनियरिंग और मेडिकल की पढ़ाई करने के बाद उनके माता-पिता ने उनके लिए कानून में करियर बनाने के सपने देखे। इस सपने को उन्होंने लॉ कॉलेज में दाखिला लेकर पूरा किया। मेनन ने शुरुआत में मद्रास हाईकोर्ट में एडवोकेट जनरल यानी महाधिवक्ता के जूनियर के रूप में दो साल बिताए। फिर वह अपने माता-पिता के आग्रह पर पलक्कड़ में आ गए।

कानून में रुचि न होने के बावजूद उन्होंने मुख्य रूप से आपराधिक अदालतों में भाग लिया। एक बार फोर्ट कोच्चि में एक मामले के दौरान पीठासीन न्यायाधीश उनके तर्क से प्रभावित हुए और उन्हें नागरिक कानून में विशेषज्ञता के लिए प्रेरित किया। मेनन इस घटना को अपनी जिंदगी का टर्निंग प्वाइंट मानते हैं।

छठ महापर्व पर सजेगी दिल्ली, बनाए गए 1000 से अधिक घाट: आतिशी

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। छठ महापर्व के मद्देनजर यूपी और बिहार में तैयारियां तो जोरों पर हैं। इस बीच देश के अलग-अलग शहरों में भी राज्य सरकारों द्वारा छठ के लिए तैयारियां की जा रही हैं। दिल्ली सरकार छठ के मद्देनजर तैयारियां करने में जुटी हुई है। इस बारे में न्यूज एजेंसी एएनआई से बात करते हुए दिल्ली की मंत्री आतिशी ने कहा कि छठ दिल्ली के लोगों के लिए महत्वपूर्ण त्योहार है। पूर्वी यूपी और बिहार के पूर्वांचली लोग भारी संख्या में दिल्ली रहते हैं। पूर्वांचल के लोग दिल्ली को अपना घर ही समझे इसके लिए साल 2015 से अरविंद केजरीवाल सरकार द्वारा हर साल छठ पूजा के लिए भव्य व्यवस्था की जा रही है। उन्होंने कहा कि हम अभी एक घाट पर हैं। दिल्ली में इस तरह के 1000 घाटों की व्यवस्था छठ पूजा के मद्देनजर कराई गई है। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि जब दिल्ली में कांग्रेस या भाजपा की सरकारें थी तो मुझे नहीं लगता कि यहां 1000 छठ के घाट बनाए गए थे। उस दौरान पूरी दिल्ली में छठ पूजा के लिए 100 घाटों की ही व्यवस्था की जाती थी। आज पूरी दिल्ली में 1000 से अधिक छठ घाट बनाए गए हैं। ये काम अरविंद केजरीवाल की सरकार ने किया है। मैं कांग्रेस और भाजपा सरकार से पूछना चाहती हूं कि आप अपने शासन वाले राज्यों में छठ की व्यवस्था के लिए क्या करते हैं।

असम के मंत्री अतुल बोरा को दी सोशल मीडिया पर धमकी, पुलिस ने एक व्यक्ति को लिया हिरासत में

गुवाहाटी, 16 नवंबर (एजेंसियां)। सोशल मीडिया पर असम के मंत्री अतुल बोरा को धमकी देने के आरोप में एक व्यक्ति को हिरासत में लिया गया है। पुलिस महानिदेशक ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह ने गुरुवार को ये बात कही। असम पुलिस के आपराधिक जांच विभाग (सीआईडी) ने एक मामला दर्ज किया था और बोरा को सोशल मीडिया पर जान से मारने की धमकी मिलने पर जांच शुरू की थी। सिंह ने कहा कि शिवसागर जिले के गौरीसागर में बामुन मोरन गांव के एक 31 वर्षीय युवक को उसके फेसबुक पोस्ट के लिए उठाया गया है, जिसमें कथित तौर पर राज्य के कृषि मंत्री को धमकी दी गई थी।

बोरा राज्य में सत्तारूढ़ भाजपा के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार की सहयोगी असम गण परिषद के अध्यक्ष भी हैं। इससे पहले, प्रतिबंधित उल्फा का हिस्सा होने का दावा करने वाले एक व्यक्ति ने एक स्थानीय समाचार पोर्टल के फेसबुक पेज के टिप्पणी अनुभाग में बोरा के क्वार्टर में बम होने की कथित धमकी दी थी। डीजीपी ने कहा था, निर्वाचित प्रतिनिधियों के खिलाफ ऐसी कोई भी धमकी स्वीकार्य नहीं होगी क्योंकि यह लोकतांत्रिक राजनीति को खतरे में डालती है।

वडोदरा में तीन किशोर नर्मदा नदी में डूबे, दिवाली की छुट्टी मनाने आए थे

वडोदरा, 16 नवंबर (एजेंसियां)। गुजरात के वडोदरा जिले में दिवाली की छुट्टियों के दौरान एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल पर गए तीन किशोर नर्मदा नदी में डूब गए। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। वडोदरा के भदारी गांव के निवासी थे तीनों शिनोर के पुलिस निरीक्षक ए.आर। महिदा ने बताया कि तीनों किशोर मित्र थे और मंगलवार शाम को दिवेर गांव में नर्मदा नदी में नहाते समय लापता हो गए। उन्होंने बताया कि तीनों नदी में प्रवेश करते ही बह गए और उनके शव बुधवार शाम को घटनास्थल से लगभग तीन किलोमीटर दूर बरामद किए गए। अधिकारी ने बताया कि मृतकों की पहचान किशन वसावा (15), अक्षय वसावा (15) और सोहिल वसावा (14) के तौर पर की गई है।

ठाणे में जाली चेक के जरिए ठगने वाला वतीन साल बाद पकड़ा गया

ठाणे, 16 नवंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र पुलिस ने जाली चेक और अन्य दस्तावेजों के जरिए लोगों को कथित रूप से ठगने के बाद तीन साल से फरार एक व्यक्ति को ठाणे से गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। केंद्रीय अपराध इकाई के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक राहुल रख ने बताया कि यहां 11 मार्च, 2020 को मीरा रोड पुलिस से एक निजी बैंक के प्रबंधक ने शिकायत की थी कि किसी ने तीन जाली चेक के माध्यम से एक खाते से 11,92,500 रुपये की हेराफेरी की है। शिकायतकर्ता के अनुसार इस ठग ने उस खाते से ये पैसे अन्य बैंकों के खातों में अंतरित किये और फिर उन पैसों को उसने निकाल लिया। रख ने बताया कि पुलिस ने तब भादंसं की धाराओं– 420 (धोखाधड़ी), 467 (मूल्यवान दस्तावेजों में छेड़छाड़), 468 (ठगी के लिए जालसाजी) और 471 (जाली दस्तावेज को असली के रूप में इस्तेमाल करना) में एक अज्ञात अपराधी के खिलाफ मामला दर्ज किया था।

'मणिपुर में खुद का शासन स्थापित करेंगे', कुकी उग्रवादियों ने दे डाली बड़ी धमकी

खालिस्तानी आतंकियों से भी मिल रहा समर्थन !

इम्फाल, 16 नवंबर (एजेंसियां)। पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर की कुकी-ज़ो जनजातियों के एक संयुक्त निकाय, इंडिजिनस ट्राइबल लीडर्स फ़ोरम (आईटीएलएफ) ने दावा किया कि अगर राज्य सरकार ने उनकी मांग नहीं सुनी, तो वह कुकी-ज़ो बसे हुए क्षेत्रों में अगले कुछ हफ़्तों में एक स्वशासित अलग प्रशासन स्थापित करेगी। मंच ने कहा कि मणिपुर में छह महीने से अधिक समय से चले आ रहे जातीय संघर्ष के बाद भी केंद्र सरकार ने अभी तक अलग प्रशासन की उनकी मांग को स्वीकार नहीं किया है। बुधवार को चुराचांदपुर जिले में एक विरोध रैली के दौरान आईटीएलएफ के महासचिव मौन टॉम्बिंग ने आरोप लगाया कि सरकार आदिवासियों की आवाज नहीं सुन रही है। टॉम्बिंग ने कहा कि, छह महीने से अधिक समय हो गया है और मणिपुर सरकार से अलग प्रशासन की हमारी मांग के संबंध में कुछ भी नहीं किया गया है। अगर कुछ हफ्तों के भीतर हमारी आवाज नहीं सुनी गई, तो हम अपनी स्वशासन स्थापित करेंगे। केंद्र की परवाह किए बिना इसे पहचानें या नहीं, हम आगे बढ़ेंगे।₹ टॉम्बिंग ने कहा कि, एक राज्य या केंद्र शासित प्रदेश की तरह, हम एक स्वशासन स्थापित करेंगे जो कुकी-ज़ो क्षेत्रों में सभी मामलों को देखेगी। हमें ऐसा करना होगा क्योंकि हमारी आवाज़ नहीं सुनी गई है। आदिवासी समूह ने चुराचांदपुर जिले में विरोध रैली आयोजित की, मणिपुर सरकार के खिलाफ नारे लगाए और आदिवासियों के खिलाफ अत्याचार के मामलों की जांच एजेंसियों से कराने की मांग की। बता दें कि, मई में पहली बार जातीय संघर्ष भड़कने के बाद से मणिपुर बार-बार होने वाली हिंसा की चपेट में है। तब से अब तक 180 से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं। झड़पें कई शिकायतों को लेकर हुई हैं, जो दोनों पक्षों के पास एक दूसरे के खिलाफ हैं। हालाँकि, संकट का मुख्य बिंदु मेइती समुदाय को अनुसूचित जनजाति (एसटी) का दर्जा देने का कदम रहा है, जिसे बाद में वापस ले लिया गया है, और संरक्षित वन क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासियों को बाहर करने का प्रयास किया गया है। बता दें कि, मणिपुर की आबादी में मैतेई लोगों की संख्या लगभग 53 प्रतिशत है और वे ज्यादातर इम्फाल घाटी में रहते हैं, जो कि पूरे मणिपुर का लगभग 10 फीसद क्षेत्र है। वहीं, जबकि आदिवासी, जिनमें नागा और कुकी शामिल हैं, की आबादी 40 प्रतिशत हैं और मुख्य रूप से पहाड़ी जिलों में रहते हैं। मणिपुर का 90 फीसद हिस्सा पहाड़ी है, जिसमे केवल कुकी-नागा जैसे आदिवासियों को ही रहने और संपत्ति खरीदने की अनुमति है,

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वर्ष-28 अंक : 238 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) कार्तिक शु.4 2080 शुक्रवार, 17 नवंबर-2023

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये

हवा में है ओबीसी की बात!

प्रत्याशियों की सूची में ऊंची जाति का दबदबा , राज्य में 50% से ज्यादा पिछड़े

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। देश की राजनीति में इस वक्त अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) की चर्चा काफी जोरों पर हो रही है। तेलंगाना विधानसभा का चुनाव प्रचार भी इसी वर्ग के इर्द-गिर्द घूम रहा है। मैदान में तीन प्रमुख दल- सत्तारूढ़ भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस), कांग्रेस और भाजपा हैं, लेकिन ओबीसी की वकालत के बीच सभी राजनीतिक पार्टियों ने ओबीसी की अपेक्षा बड़ी संख्या में उच्च जाति (सवर्ण जाति) के उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी है। मुख्य रूप से रेड्डी समुदाय राज्य में प्रभावशाली है, लेकिन आबादी या संख्या के लिहाज से यह कम है। बीआरएस और कांग्रेस के प्रत्याशियों की सूची में उच्च जाति के उम्मीदवारों की हिस्सेदारी ओबीसी से ज्यादा है।

बीजेपी ने 30 रेड्डी उम्मीदवार मैदान में उतारे

उदाहरण के तौर पर, भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी), जिसने सत्ता में आने पर एक ओबीसी मुख्यमंत्री बनाने का वादा किया है। ऐसे में भाजपा ने कुछ अन्य उच्च जाति के उम्मीदवारों के बीच 30 रेड्डी उम्मीदवारों (27%) को मैदान में उतारा है। पार्टी 119 में से राज्य में 111 सीटों पर चुनाव लड़ रही है, बाकी सीटें अभिनेता से नेता बने पवन कल्याण की जन सेना पार्टी के लिए छोड़ी गई हैं।

कांग्रेस और बीआरएस ने भी सवर्ण जातियों पर खेला दांव

दूसरी ओर, कांग्रेस को अपने ओबीसी नेताओं के दबाव का सामना करना पड़ रहा है, जो अधिक प्रतिनिधित्व की मांग कर रहे हैं। 15 अक्टूबर को पार्टी की पहली सूची जारी हुई थी, जिसमें रेड्डी समुदाय का वर्चस्व था, पार्टी नेताओं ने ओबीसी के लिए कुल 51 सीटों की मांग की थी। हालांकि, पार्टी ने अभी भी उच्च जाति के 11 अन्य उम्मीदवारों के बीच 26 रेड्डी (25%) उम्मीदवारों को टिकट दिया है। सबसे पुरानी पार्टी 119 सीटों में से 116 सीटों पर चुनाव लड़ रही है, जबकि तीन सीटें उसने वामपंथी सहयोगियों के लिए छोड़ी हैं।

बीआरएस, जिसे अपनी सरकार द्वारा ओबीसी की उपेक्षा को लेकर विपक्ष के लगातार हमलों का सामना करना पड़ा है। उसने भी उच्च जातियों को टिकट बंटवारे में प्राथमिकता दी है, जिसमें 35 रेड्डी (29%) उम्मीदवारों को टिकट दिया है। इसके अलावा, पार्टी ने वेलमा (केसीआर की जाति), कम्मा और ब्राह्मण जैसी अन्य ऊंची जातियों के 16 अन्य उम्मीदवारों को टिकट दिए हैं। राज्य की सत्ता पर काबिज केसीआर के नेतृत्व वाली पार्टी सभी 119 सीटों पर चुनाव लड़ रही है।

तेलंगाना में ओबीसी को सभी पार्टियों की तरफ कितनी टिकट दी गईं। उसमें बीजेपी ने 39 (35%) के साथ सबसे ज्यादा टिकट दिया है। सत्तारूढ़ बीआरएस ने 24 ओबीसी (20%) उम्मीदवारों को टिकट दिया है, जबकि कांग्रेस 20 (18%) टिकट ओबीसी को दिए हैं।

>14

चंद्रयान-3 के रॉकेट का हिस्सा नियंत्रण से बाहर

पृथ्वी के वातावरण में लौटा, प्रशांत महासागर में गिरा, इसरो ने कहा- वजह पता नहीं

बेंगलुरू, 16 नवंबर (एजेंसियां)। चंद्रयान-3 के लॉन्च व्हीकल एलवीएम3 एम4 का एक हिस्सा नियंत्रण से बाहर हुआ और पृथ्वी के वातावरण में फिर से प्रवेश कर गया। इसकी जानकारी भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने दी।

अनियंत्रित होने वाला हिस्सा लॉन्च व्हीकल का क्रायोजेनिक अपर स्टेज था, जिसने चंद्रयान-3 को 14 जुलाई को तय कक्षा में स्थापित किया था। इसरो ने बताया, यही हिस्सा बुधवार 15 नवंबर की दोपहर 2:42 बजे पृथ्वी के वातावरण में दाखिल हुआ। यह हिस्सा प्रशांत महासागर में गिर गया। इसके अनियंत्रित होने की वजह अभी साफ नहीं हुई है। इसका फाइनल ग्राउंड ट्रैक भारत के ऊपर से होकर नहीं गुजरा।

पैसिवेशन की प्रक्रिया से गुजरी थी अनियंत्रित हुए रॉकेट की बॉडी :

इसरो के बयान के मुताबिक चंद्रयान-3 को लॉन्च किए जाने के 124 दिन बाद एनओआरएडी आईडी 57321 नाम की यह रॉकेट बॉडी पृथ्वी में री-एंटर हुई। चंद्रयान-3 के ऑर्बिट में स्थापित होने के बाद अपर स्टेज को निष्क्रिय (पैसिवेशन) करने की प्रक्रिया से भी गुजारा गया था। पैसिवेशन में रॉकेट में मौजूद प्रोपेलैंट और एनर्जी सोर्स को हटाया गया, ताकि अंतरिक्ष में विस्फोट के खतरे को कम किया जा सके। यह प्रक्रिया भी इंटर-एजेंसी स्पेस डेब्रिस कोऑर्डिनेशन एजेंसी (आईएडीसी) और यूनाइटेड नेशंस की गाइडलाइंस के तहत आती है।

जयपुर में सोनिया का डेरा

पॉल्यूशन या कुछ और...

जयपुर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। राजस्थान का चुनाव कांग्रेस के लिए बेहद अहम हो चुका है। कांग्रेस वहां अपना किला बचाए रखने के लिए हर संभव कोशिश कर रही है। जहां जीत के लिए कांग्रेस में दो अहम चेहरे सीएम अशोक गहलोत व पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट में सुलह हो गई, जहां पार्टी लगातार लोगों के बीच इस सुलह को सामने रखकर ऑल इज वेल का संकेत देने की कोशिश कर रही है, वहीं दिल्ली भी जयपुर पर निगाहें लगाए चुनावी तैयारियों पर पैनी नजर रखे हुए है। गुरुवार को राहुल गांधी जयपुर पहुंचे, जहां एयरपोर्ट पर गहलोत व पायलट दोनों साथ नजर आए। उन्हें साथ में देखकर राहुल ने मीडिया में कहा कि हम एक साथ नजर नहीं आ रहे, बल्कि एक साथ हैं। हम एकजुट रहेंगे और कांग्रेस यहां स्वीप करेगी।

जयपुर में सोनिया गांधी :

मंगलवार की शाम कांग्रेस पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी जयपुर पहुंचीं। वह डॉक्टरों के मशवरे पर

स्वास्थ्य लाभ के लिए दिल्ली के दमघोंटू माहौल से दूर जयपुर पहुंची हैं। लेकिन चर्चा है कि बात सिर्फ इतनी भर नहीं है। कहा जा रहा है कि इस कवायद का आशय चुनावी तैयारियों पर करीब से नजर रखना भी हैं। दरअसल, कांग्रेस की ओर से बाकायदा बयान जारी कर सोनिया गांधी के जयपुर प्रवास और राहुल गांधी की राजस्थान की रैलियों की तारीखें साझा की गई हैं, उससे साफ है कि चुनाव के आखिर में गांधी परिवार राजस्थान में रहकर सभी तैयारियों को सुनिश्चित करना चाहता है। राहुल गांधी 16, 19, 21 और 22 नवंबर को राजस्थान में चुनाव प्रचार करेंगे।

दरअसल, वहां जिस तरह से केंद्रीय चुनाव समिति की पहली मीटिंग में हुई गरमा गरमी के बीच सोनिया गांधी को खुद कमान संभालनी पड़ी, उसके बाद वहां कुछ टिकट कटे, जिसके चलते कुछ नाराजगी सामने आई, उसे देखते हुए पार्टी कोई जोखिम उठाने के मूड में नहीं है। इसके अलावा, सोनिया गांधी के पहुंचने के कुछ घंटों बाद ही आधी रात को संगठन महासचिव के सी वेणुगोपाल राजस्थान के अहम नेताओं के साथ मीटिंग करते हैं, वह भी काफी कुछ इशारा करता है।

इस मीटिंग की तस्वीर खुद सीएम गहलोत ने सोशल मीडिया पर जारी की। इसमें वेणुगोपाल के साथ गहलोत, पायलट, राजस्थान के प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा, प्रदेश के सीनियर नेता भंवर जीतेंद्र सिंह जैसे नेता शामिल थे। इसके साथ गहलोत ने सोशल मीडिया पर लिखा- एम साथ जीत रहे हैं फिर से हैश टैग कांग्रेस फिर से। मीटिंग के जरिए कांग्रेस अपनी पार्टी के वर्कर्स व समर्थकों के साथ-साथ वोटर्स सहित सभी को एकजुट होने का संकेत दे रही है।

>14

राजस्थान में राहुल बोले : मोदी की गारंटी का मतलब अडाणी की गारंटी है

तारानगर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। आगामी विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने तारानगर में जनसभा को सम्भोदित करते हुए कहा मोदी की गारंटी का मतलब अडाणी की गारंटी है। प्रधानमंत्री मोदी, स्कूल-कॉलेज और अस्पतालों का निजीकरण करते हैं और पूरा फायदा अरबपतियों को देते हैं।

उन्होंने कहा मोदी जी कृषि

कानून लेकर आए और कहा कि किसानों को फायदा होगा, लेकिन देश के सारे किसान इसके खिलाफ धरने पर बैठ गए। किसानों ने कहा- यह हमारा नहीं, अडाणी-अंबानी का कानून है। अंत में किसानों के साथ कांग्रेस ने मिलकर इस काले कानून को खत्म किया। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा, हम यहां गरीबों की सरकार चलाते हैं, आपकी रक्षा करते हैं। नरेंद्र मोदी जी ने जीएसटी लागू किया। भारत में पहली बार किसानों को टैक्स देना पड़ रहा है।

ठंड से कंपकपाया एमपी-राजस्थान

दिल्ली में न्यूनतम तापमान 11.3 डिग्री, माउंट आबू में पारा 6 डिग्री पहुंचा

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। पहाड़ी राज्यों पर बर्फबारी से दिल्ली, मध्य प्रदेश, राजस्थान सहित कई राज्यों में ठंड बढ़ गई है। गुरुवार 16 नवंबर सुबह दिल्ली का न्यूनतम तापमान 11.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। यह सामान्य से दो डिग्री कम है। राजस्थान के जयपुर में न्यूनतम तापमान 13.8 डिग्री सेल्सियस रहा। बुधवार 15 नवंबर की रात माउंट आबू में पारा 6 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया था। सीकर में 7.5 और चूरू में 9.4 डिग्री सेल्सियस तापमान रहा। मध्य प्रदेश के भोपाल में पिछले 5 दिन के दौरान तापमान में 4.4 डिग्री की गिरावट आई। गुरुवार को भोपाल का न्यूनतम तापमान 15 डिग्री रहा। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के मुताबिक नवंबर के आखिरी हफ्ते तक उत्तर भारत के राज्यों में ठंड और बढ़ेगी। दूसरी तरफ आईएमडी ने केरल, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा और नगालैंड में गुरुवार को बारिश का अलर्ट जारी किया। प्राइवेट वेदर एजेंसी स्काईमेट ने शुक्रवार दोपहर तक तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और ओडिशा में भारी बारिश की संभावना जताई है।

नीतीश कुमार ने मोदी सरकार को दी चेतावनी

कहा- बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दें वरना...

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एक बार फिर बिहार के लिए विशेष राज्य के दर्जे की मांग की है और कहा है कि सरकार उनकी इस मांग को नहीं मानती है तो वह इसके लिए आंदोलन खड़ा करेंगे। नीतीश कुमार ने पटना में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हम सबका विकास करना चाहते हैं और सबके उत्थान के लिए पांच साल लग जाएगा, इसलिए बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिया जाए ताकि 2 साल में विकास किया जा सके। गौरतलब है बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार राज्य के लिए विशेष दर्जे की मांग लगातार करते रहे हैं। यह बिहार के हर चुनाव में मुद्दा बना है लेकिन अभी तक इसे विशेष राज्य का दर्जा नहीं मिला है।

क्या बोले नीतीश कुमार

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपनी मांग को दोहराते हुए कहा, हम केंद्र सरकार से आग्रह करेंगे कि सबके विकास और उत्थान के लिए बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिया जाए ताकि 2 साल में सबका उत्थान हो सके।

>14

बच्चों के साथ मस्ती करते दिखे पीएम मोदी

माथे पर सिक्का चिपका कर दिखाया जादू

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो साझा किया है, जिसे खूब पसंद किया जा रहा है। दरअसल, वीडियो में पीएम बच्चों के साथ शरारत करते नजर आ रहे हैं। वैसे सभी को ही पता है कि मोदी को बच्चों से अलग लगाव है। आए दिन वह बच्चों के साथ मस्ती करते या उन्हें बढ़ावा देते नजर आते हैं। हालांकि, इस बार उनका अंदाज पहले से काफी अलग रहा। पहले वो बच्चों का आपस में सिर लड़ाते हुए दिखे। फिर एक रुपये के सिक्के से बच्चों से मस्ती करते दिखे।

बच्चों के साथ बिताए पल :

पीएम मोदी ने वीडियो के साथ कैप्शन में लिखा है कि बच्चों के साथ बिताए कुछ यादगार पल।

पीएम मोदी ने एक परिवार से मुलाकात की :

दरअसल, प्रधानमंत्री आवास पर पीएम मोदी ने एक परिवार से मुलाकात की थी। परिवार के दो बच्चे भी पीएम से मिलने पहुंचे थे। पीएम ने बच्चों के साथ खूब मस्ती की। यहां उन्होंने पहले दोनों बच्चों को कान पकड़ कर हिलाया। इसके बाद एक सिक्के को सिर पर चिपका कर बच्चों को एक ट्रिक दिखाई, जिसे बच्चे जादू समझ रहे थे। इसके बाद पीएम ने बच्चों से भी ये करतब कराया। सोशल मीडिया पर पीएम मोदी के इस वीडियो को लोग जमकर लाइक कर रहे हैं। खबर

लिखे जाने तक इस वीडियो पर लाखों व्यूज और हजारों लाइक्स आ चुके थे।

पहली बार नहीं...

यह पहली बार नहीं है, जब पीएम मोदी ने बच्चों को अपना समय दिया हो। वह पहले भी कई बार बच्चों के साथ शरारत और मस्ती करते देखे गए हैं। इसी साल राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तीन साल पूरे होने के अवसर पर अखिल भारतीय शिक्षा समागम के उद्घाटन कार्यक्रम में पीएम मोदी बच्चों से मिले थे। बच्चों के साथ तस्वीर को ट्विटर पर साझा करते हुए पीएम मोदी ने लिखा था कि मासूम बच्चों के साथ आनंद के कुछ पल! इनकी ऊर्जा और उत्साह से मन उमंग से भर जाता है।

उत्तर प्रदेश के इटावा में वैशाली एक्सप्रेस में लगी आग

19 यात्री जख्मी, 12 घंटे में दूसरी घटना, कल दरभंगा एक्सप्रेस में आग लगी थी

इटावा, 16 नवंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के इटावा में बुधवार देर रात वैशाली एक्सप्रेस के एक कोच में आग लग गई। हादसे में 19 यात्री घायल हुए हैं। इनमें 11 की हालत गंभीर है। हादसा रात 2.30 बजे हुआ। उस वक्त ज्यादातर यात्री सो रहे थे। कोच में आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। भगदड़ के बीच यात्रियों ने ट्रेन से कूदकर जान बचाई। ट्रेन दिल्ली से बिहार के सहरसा जा रही थी।

इटावा में 12 घंटे से कम वक्त में ट्रेन में आग लगने की यह दूसरी घटना है। इससे पहले बुधवार शाम 6 बजे नई दिल्ली-दरभंगा एक्सप्रेस (02570) के स्लीपर कोच एस-1 में आग लगी थी। यह हादसा सराय भूपत रेलवे स्टेशन के पास हुआ था। दोनों स्टेशनों के बीच की दूरी 6-7 किमी है। आग कैसे लगी यह अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है। सीओ जीआरपी ने बताया कि जांच के बाद ही इसका पता चल पाएगा।

बाथरूम के पास धुंआ उठा, पूरी बोगी में फैल गया :

वैशाली एक्सप्रेस (12554) के स्लीपर कोच एस-6 में लगी। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक इटावा में फ्रेंड्स कॉलोनी रेलवे फाटक के पास यात्रियों ने बाथरूम के पास से धुआं उठता देखा। कुछ ही देर में पूरी बोगी में धुआं भर गया। कोई कुछ समझ ही नहीं पाया कि क्या हुआ।

रेप विक्टिम के बच्चे का डीएनए टेस्ट सही नहीं

हाईकोर्ट बोला- इसी में बच्चे का हित, लड़की ने डिलीवरी के बाद गोद दे दिया था

मुंबई, 16 नवंबर (एजेंसियां)। बॉम्बे हाईकोर्ट ने कहा है कि गोद लेने (एडॉप्शन) के बाद रेप विक्टिम के बच्चे का डीएनए टेस्ट कराना सही नहीं है। ऐसा करना बच्चे और उसके भविष्य के हित में नहीं है।

जस्टिस जीए सनप की सिंगल बेंच ने 17 साल की लड़की से रेप करने के आरोपी को जमानत देते हुए यह टिप्पणी की।

पुलिस ने कोर्ट को बताया कि रेप के बाद लड़की प्रेग्नेंट हो गई थी। इस पर कोर्ट ने पुलिस से पूछा कि क्या उसने बच्चे का डीएनए टेस्ट कराया था? इस पर पुलिस ने बताया कि डिलीवरी के बाद लड़की ने बच्चे को एडॉप्शन के लिए एक संस्था में दे दिया था। वहां से रेप पीड़ित के बच्चे को किसी ने गोद ले लिया।

बच्चे को गोद लेने वाले माता-पिता के बारे में संस्था ने पुलिस को कोई जानकारी नहीं दी। हाईकोर्ट ने कहा कि संस्था का ऐसा करना बिल्कुल सही था। कोर्ट ने यह भी कहा, चूंकि बच्चे को गोद ले लिया गया है, इसलिए उस बच्चे का डीएनए टेस्ट उसके और उसके भविष्य के लिए ठीक नहीं हो सकता।

आरोपी ने कहा था, लड़की की सहमति से शारीरिक संबंध बनाए

महाराष्ट्र की ओशिवारा पुलिस ने नाबालिग से रेप मामले में पॉक्सो एक्ट के तहत 2020 में आरोपी को गिरफ्तार किया था। पीड़ित ने शिकायत में बताया था कि आरोपी ने उसके साथ जबरन शारीरिक संबंध बनाए और उसे प्रेग्नेंट कर दिया। हालांकि आरोपी ने कोर्ट में दावा किया कि संबंध सहमति से बना था। कोर्ट ने आरोपी के दावे को मानने से इनकार कर दिया। जस्टिस सनप ने कहा, हम नहीं मान सकते कि पीड़ित की सहमति से दोनों के बीच संबंध बने थे।

हाईकोर्ट बोला, आरोपी की सजा बढ़ाने की जरूरत नहीं

बॉम्बे हाईकोर्ट ने आरोपी को जमानत देते हुए कहा, पुलिस ने आरोपी के खिलाफ चार्जशीट दायर की थी, लेकिन स्पेशल कोर्ट ने अभी तक आरोप तय नहीं किए। आरोपी पिछले दो साल 10 महीने से जेल में बंद है। इसलिए उसे और जेल में नहीं रखना चाहिए।

न्यूजक्लिक मामले में अमेरिकी कारोबारी सिंघम को ईडी का समन

नेविल रॉय पर आरोप- चीनी प्रोपेगैंडा फैलाने के लिए भारतीय वेबसाइट्स को फंडिंग दी

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। न्यूजक्लिक मनी लॉन्ड्रिंग मामले में एनफोर्समेंट डायेक्टरेट (ईडी) ने गुरुवार को अमेरिकन करोबारी नेविल रॉय सिंघम को समन जारी किया है।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, सिंघम चीन के शंघाई में रह रहा है। इसलिए ईडी ने विदेश मंत्रालय की मदद से चीनी अधिकारियों को समन भेजा ताकि वे उसे सिंघम तक पहुंचा सकें। ईडी ने ईमेल भेजकर क्यूबा-श्रीलंकाई मूल के सिंघम को भारत स्थित ऑफिस आकर अपने बयान दर्ज कराने के लिए कहा है। दरअसल, न्यूजक्लिक पर चीनी प्रोपेगेंडा फैलाने के बदले पैसे लेने का आरोप है। न्यूजक्लिक को मुख्य तौर पर सिंघम की ओर से पैसे मिलने का आरोप है।

पिछले साल भी ईडी ने सिंघम को समन जारी किया था, लेकिन चीनी अधिकारियों ने तब इस समन को स्वीकार करने से मना कर दिया था। न्यूजक्लिक मामले में सुनवाई के दौरान दिल्ली कोर्ट की ओर से चीनी अदालत के नाम एक फॉर्मल रिक्वेस्ट जारी की गई।

रक्षा मंत्रियों की बैठक में राजनाथ सिंह ने की शिरकत

कहा- हिंद-प्रशांत में आजाद परिवहन के लिए प्रतिबद्ध

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। इंडोनेशिया के जकार्ता में आयोजित आसियान के रक्षा मंत्रियों (एडीएमएम प्लस) की बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शिरकत की। संबोधित करते हुए राजनाथ सिंह ने कहा, दुनिया में शांति और स्थिरता के लिए बातचीत जरूरी है। साथ ही उन्होंने कूटनीति के महत्व पर भी जोर दिया। दक्षिण चीन सागर में चीन की बढ़ती सैन्य ताकत के मुद्दे पर राजनाथ सिंह ने कहा, भारत वैश्विक मानदंडों के अनुरूप अंतर्राष्ट्रीय जल क्षेत्र में नौवहन, हवाई उड़ान और निर्बाध वैध वाणिज्य की स्वतंत्रता के लिए प्रतिबद्ध है।

राजनाथ सिंह ने कहा, वर्तमान युग युद्ध का नहीं है। आतंकवाद को अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए एक गंभीर खतरा बताया। उन्होंने इससे निपटने के लिए ठोस प्रयासों का आह्वान किया। उन्होंने क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा बढ़ाने के लिए एडीएमएम प्लस के साथ व्यावहारिक, दूरदर्शी और परिणामोन्मुखी सहयोग को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने कहा, पूरे दक्षिण चीन सागर पर संप्रभुता के चीन के व्यापक दावों पर वैश्विक चिंताएं बढ़ रही हैं।

गौरतलब है कि आसियान रक्षा मंत्रियों की एडीएमएम-प्लस बैठक में रक्षा मंत्री ने टिप्पणी की। दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र और इसके आठ संवाद भागीदार- भारत, चीन, ऑस्ट्रेलिया, जापान, न्यूजीलैंड, कोरिया गणराज्य, रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं। इंडोनेशिया एडीएमएम प्लस के वर्तमान अध्यक्ष के रूप में बैठक की मेजबानी कर रहा है। 1992 में भारत आसियान का संवाद भागीदार बना।

भारत-नेपाल संबंध मजबूत होंगे

मंदिर से सकारात्मक संदेश, द्विपक्षीय रिश्ते पर बोले राजदूत

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के अयोध्या में राम मंदिर का उद्घाटन अगले साल होने वाला है। भगवान राम के भक्तों और श्रद्धालुओं के लिए आस्था के इस बड़े केंद्र का नेपाल से भी रिश्ता है। दरअसल, मान्यताओं के अनुसार राम का विवाह जनकपुर में हुआ जो वर्तमान भूगोल के मुताबिक नेपाल में है। दोनों देशों के संबंधों के मद्देनजर अयोध्या के राम मंदिर की भूमिका क्या होगी? इस पर राजदूत शंकर पी शर्मा का कहना है कि मंदिर के उद्घाटन से दोनों देशों के नागरिकों को मजबूत और सकारात्मक संदेश मिलेगा। उन्होंने कहा, दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने राम मंदिर काफी महत्वपूर्ण महत्व रखता है।

एक विशेष साक्षात्कार में, नेपाल के राजदूत ने कहा, मुझे लगता है कि अयोध्या में राम मंदिर का यह उद्घाटन सभी नेपाली लोगों को एक बहुत मजबूत और सकारात्मक संदेश देगा। जब इसका उद्घाटन होगा, तो नेपाल में लगभग हर कोई इस जगह का दौरा करना पसंद करेगा। खास बातचीत के दौरान राजदूत शंकर पी शर्मा ने कहा, राम मंदिर नेपाल के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि भविष्य में हर साल नेपाल से लाखों लोग अयोध्या आएंगे।

उन्होंने कहा, अयोध्या नेपाल से बहुत मजबूती से जुड़ा हुआ है, क्योंकि नेपाल में हर कोई जानता है कि नेपाल की बेटी सीता का विवाह राम से हुआ था। इसलिए, हर साल उनकी अयोध्या से बारात आती है।

मणिपुर में असम राइफल्स के जवानों पर हमला

आईईडी ब्लास्ट के बाद फायरिंग

इंफाल, 16 नवंबर (एजेंसियां)। पिछले कुछ महीनों से हिंसा की आग से जूझ रहे मणिपुर से एक बड़ी आतंकी घटना सामने आयी है। यहां असम राइफल्स के जवानों पर हमला किया गया है। जानकारी के मुताबिक, आईईडी ब्लास्ट के बाद उन पर फायरिंग की गई। फिलहाल सभी जवान सुरक्षित हैं। घटना टेंगनौपाल जिले की बताई जा रही है।

ब्लास्ट के बाद सुरक्षाबलों को सतर्क कर दिया गया है और इलाके में तलाशी अभियान चलाया जा रहा है।

मणिपुर में उग्रवादियों ने गुरुवार सुबह सैबोल इलाके में इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) लगाने के बाद असम राइफल्स की एक टुकड़ी पर घात लगाकर हमला कर दिया, जब जवान नियमित गश्त कर रहे थे। सूत्रों के मुताबिक सुबह करीब 8.30 बजे भारत म्यांमार सीमा के पास टेंगनौपाल पुलिस स्टेशन के अंतर्गत नारुम शैबोल (मारिंग नागा गांव) में तैनात एफ/20 असम राइफल्स की एक टुकड़ी पर अज्ञात हथियारबंद बदमाशों ने घात लगाकर हमला किया था। अभी तक किसी ने इसकी जिम्मेदारी नहीं ली है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने
छुट्टी के दिन आवास पर ही लगा दी अदालत

प्रयागराज, 16 नवंबर (एजेंसियां)। एमिटी यूनिवर्सिटी नोएडा में उपस्थिति कम होने के कारण छात्रा सानिया यादव को बृहस्पतिवार को होने वाली परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी गई। जिसको लेकर छात्रा ने बुधवार को ही छुट्टी वाले दिन इलाहाबाद हाईकोर्ट में अपील की। सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायाधीश ने छात्रा को परीक्षा में बैठने की अनुमति दे दी।

घर में लगी अदालत, हुई सुनवाई

यूनिवर्सिटी में काम हाजिरी होने के कारण में परीक्षा में बैठने की अनुमति न देने के मामले में सुनवाई करते हुए मुख्य न्यायाधीश प्रीतिंकर दिवाकर की अदालत ने छात्रा को परीक्षा में बैठने की अनुमति देने का आदेश जारी किया है। यह फैसला मुख्य न्यायाधीश ने बुधवार को भैया दूज की छुट्टी के दौरान दिया। एमिटी यूनिवर्सिटी में आज होने वाली परीक्षा को लेकर यह आदेश दिया गया है।

अगली सुनवाई 14 दिसंबर को होगी

एमिटी यूनिवर्सिटी नोएडा की छात्रा सानिया यादव ने वकील डॉ। अवनेश त्रिपाठी के माध्यम से अदालत का दरवाजा खटखटाया था। उसे बृहस्पतिवार दोपहर दो बजे होने वाली परीक्षा में शामिल नहीं होने दिया जा रहा था। कोर्ट ने डॉ। अवनीश त्रिपाठी की सुनवाई के बाद एमिटी यूनिवर्सिटी को निर्देश दिया कि वह छात्रा को परीक्षा में बैठने की अनुमति दें। इस मामले की अगली सुनवाई 14 दिसंबर को निर्धारित की गई है।

लखनऊ में इंजीनियरिंग की छात्रा से छेड़छाड़
चेहरे पर पिस्टल तानकर अपहरण की कोशिश बोले- जान से मार दूंगा

लखनऊ, 16 नवंबर (एजेंसियां)। प्रदेश की राजधानी में आए दिन महिलाओं के साथ अपराध हो रहे हैं, बावजूद इसके पुलिस इन अपराधियों पर लगाम नहीं लगा पा रही है। पीजीआइ थाना क्षेत्र में दीपावली की सुबह घर के बाहर एक इंजीनियरिंग की छात्रा का पीछा कर रास्ता रोक छेड़छाड़ किया। विरोध पर आरोपित ने छात्रा पर पिस्टल तान अपहरण कर अपनी बाइक पर बैठने का दबाव बनाने लगा। आरोपित ने छात्रा से कहा कि चुपचाप बाइक पर बैठ जाओ वरना जान से मार दूंगा। छात्रा के शोर मचाने से आसपास के लोगों को आता देखकर आरोपित फरार हो गया। पुलिस ने छात्रा की शिकायत पर आरोपित अमित कुमार को गिरफ्तार कर लिया है।

यादवों को आरजेडी से अलग करने की हो रही कोशिश?
बीजेपी के 'यदुवंशी सम्मेलन' पर आई तेजस्वी की प्रतिक्रिया

पटना, 16 नवंबर (एजेंसियां)। भारतीय जनता पार्टी की नजर यादवों के वोट बैंक पर है। शायद यही वजह है कि बीते मंगलवार को बीजेपी की ओर से पटना के बापू सभागार में गोवर्धन पूजा पर यदुवंशी समाज मिलन समारोह का आयोजन कराया गया। बीजेपी दावा कर रही है कि यादव समाज के 21 हजार लोगों ने पार्टी की सदस्यता ली है। इसको लेकर राजनीति जारी है। इस बीच गुरुवार को बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव की इस पर प्रतिक्रिया सामने आई है। इस सवाल पर कि क्या आरजेडी से यादवों को अलग करने की कोशिश हो रही है? इस पर तेजस्वी यादव ने बीजेपी के यदुवंशी सम्मेलन को लेकर कहा, छोड़ दीजिए, करने दीजिए, क्या दिक्कत है? किसी को मनाही है? लोकतंत्र है, जिसको जो मर्जी है वो करे। खूब प्रयास करें। हमारी शुभकामना है। तेजस्वी यादव ने पटना एयरपोर्ट पर पत्रकारों के सवालों के जवाब में यह बयान दिया है।

ममता बनर्जी के भतीजे की शादी में गए तेजस्वी-लालू

गुरुवार की सुबह को तेजस्वी यादव और आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ममता बनर्जी के भतीजे की शादी में शामिल होने के लिए रवाना हुए। पटना से कोलकाता जाने के दौरान तेजस्वी यादव ने बीजेपी को तंज कसते हुए शुभकामना दी।

लोकसभा चुनाव को देखते हुए बनाई जा रही रणनीति?

बता दें कि 2024 में लोकसभा का चुनाव है। हाल ही में बिहार में जातीय सर्वे की रिपोर्ट जारी की गई है। सर्वे में यादवों की जाति की संख्या सबसे अधिक बताई गई है। ऐसे में यदुवंशी समाज मिलन समारोह को देखकर ऐसा लग रहा है कि बीजेपी अभी से रणनीति बनाने में जुट गई है। हालांकि बीजेपी 21 हजार यादवों को जोड़ने की बात कह रही है लेकिन इसमें यादव समाज से कोई बड़े नेता का नाम शामिल नहीं है।

जुए की ऐसी लत, एक रात के लिए कर डाला पत्नी का सौदा

झांसी, 16 नवंबर (एजेंसियां)। यूपी के झांसी जिले के मऊरानीपुर थाना क्षेत्र के स्यावनी गांव से एक अजीबोगरीब खबर सामने आई है। इस गांव में पति को जुए की ऐसी लत लगी कि वह जुए के लिए उधार दिए गए रुपये के एवज में सूदखोरों को अपनी पत्नी एक रात के लिए दे दी। दरअसल सूदखोरों में से एक शख्स ने एक रात के लिए पति से उसकी बीवी की डिमांड कर दी तो जुए में पैसा हार चुका शख्स सूदखोरों की बात भी मान गया और बीवी को लेकर उनके घर भी पहुंच गया। उसकी पत्नी ने इसका विरोध किया और थाने में शिकायत दर्ज करा दी। दरअसल, स्यावनी गांव की रहने वाली एक महिला का आरोप है कि उसके पति को जुए खेलने की लत लग गई है। वह दीपावली के दिन भी जुआ खेल रहा था और वह सारे पैसे हार गया था।

स्वामी प्रसाद के बयान सपा के लिए बन सकते हैं शूल

लखनऊ, 16 नवंबर (एजेंसियां)। सपा के महासचिव स्वामी प्रसाद मौर्या की देवी देवताओं पर लगातार आ रही टिप्पणियां विवाद का केंद्र बन रही हैं। सपा मुखिया परिवार और उनके ज्यादार समर्थक धार्मिक रुझान वाले रहे हैं। वह इन बयानों से अपने को असहज महसूस कर रहे हैं। इसी कारण अगर सपा स्वामी से दूरी बना ले तो कोई आश्चर्य नहीं होगा। क्योंकि पार्टी अपने खिलाफ भाजपा को धार्मिक विरोधी हथियार देने के मूड में नहीं है। स्वामी प्रसाद के बयान कहीं सपा की राह के शूल न बन जाएं, इस पर मंथन हो रहा है। राजनीतिक जानकर बताते हैं कि दीपावली के दिन से लक्ष्मी देवी पर उठाए सवाल ने भाजपा को बैठे बिठाए एक बड़ा मुद्दा दे दिया है। वहीं इस मुद्दे पर कांग्रेस भी स्वामी के जरिए अखिलेश को घेरने में जुट गई है। दूसरी ओर सपा के प्रवक्ता ने स्वामी को ऐसी टिप्पणी न करने की हिदायत दी है। दरअसल समाजवादी पार्टी के नेता स्वामी प्रसाद मौर्य ने सोशल मीडिया साइट पर एक विवादित बयान दिया है। उन्होंने कहा कि दुनिया में किसी भी नस्ल और जाति में दो हाथ वाले बच्चे पैदा होते हैं, तो चार हाथ वाली लक्ष्मी कैसे पैदा हो गईं। अगर आपको पूजा करनी ही है, तो अपनी पत्नी की करें जो कि पूरी निष्ठा से पूरे परिवार की देखभाल करती है। इसी के बाद पूरा बवाल मचा है। समाजवादी पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने नाम न जाहिर करने की शर्त पर बताया कि हमारी पार्टी में अधिकतर यादव हैं, वो धार्मिक रुझान वाले लोग हैं। चाहे रामचरित मानस की बात हो या फिर लक्ष्मी माता पर विवादित टिप्पणी वह स्वामी के इन बयानों के खिलाफ हैं। उनका सीधा मत है कि ऐसे बयानों पर रोक लगनी चाहिए। वो शीर्ष नेतृत्व को इस बारे में बता चुके हैं। जब पार्टी के मुखिया और उनके परिवार वाले समय समय पर अपने धार्मिक रुझान को प्रस्तुत करते रहते हैं।

एसआई प्रभात रंजन मर्डर केस
राजद के आगे नीतीश कुमार ने टेके घुटने, बढ़ा बालू माफियाओं का दुस्साहस

गैंगवार, पुलिस और खनन अधिकारियों पर हमले की 50 घटनाएं- सुशील मोदी
तेजस्वी यादव, चंद्रशेखर के बयान से बालू माफियाओं को मिला पॉलिटिकल कवर।
बलिदानी दारोगा के आश्रितों को मिले 1 करोड़ का मुआवजा- सुशील कुमार मोदी।
खनन विभाग अपने पास रखें मुख्यमंत्री नीतीश कुमार- सुशील कुमार मोदी।

पटना, 16 नवंबर (एजेंसियां)। बिहार में बढ़ते अपराध के बीच जमुई में दारोगा प्रभात रंजन हत्याकांड से फिर यह साबित हुआ कि प्रदेश में अपराधी बेखौफ हैं। उन्हें कानून का कोई डर नहीं और सरेआम वह पुलिसकर्मियों तक की हत्या करके सुरक्षित रह सकता है। इसको लेकर भाजपा ने सीधे सीएम नीतीश कुमार को घेरा है। पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सांसद सुशील कुमार मोदी ने कहा है कि नीतीश कुमार ने बालू माफिया को संरक्षण देने वाले राजद के आगे घुटने टेक दिये हैं, इसलिए पुलिस और खनन विभाग के अधिकारियों पर लगातार जानलेवा हमले होने के बाद भी न माफिया पर कड़ी कार्रवाई होती है, न राजद के बड़बोले मंत्रियों पर शिकंजा कसा जाता है। सुशील मोदी ने कहा कि मुख्यमंत्री को खनन विभाग अपने पास रखना चाहिए और माफिया से लड़ते बलिदान हुए दारोगा प्रभात रंजन के आश्रितों को 1 करोड रुपये की विशेष अनुग्रह राशि देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जमुई में बालू माफिया के लोगों ने ट्रैक्टर से कुचल कर दारोगा की हत्या कर दी, जबकि राजद कोटे के डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव को इस "घटना की जानकारी नहीं' थी और उन्ही की पार्टी के मंत्री चंद्रशेखर इसे रुटीन क्राइम बता कर हत्यारों का बचाव करते रहे। पूर्व सीएम ने कहा कि बालू माफिया ने सारण, औरंगाबाद से जमुई तक, पूरे खनन क्षेत्र में इस साल के 11 महीनों में 12 बड़े हमले किये। जमुई में केवल दारोगा प्रभात रंजन को नहीं, बिहार पुलिस का मनोबल कुचलने की कोशिश की गई। उन्होंने कहा कि राजद की पोलिटिकल फंडिग कर बालू माफिया पुलिस ही नहीं, नीतीश सरकार पर दबाव बनाने की स्थिति में आ गया है, इसलिए सशस्त्र खनन पुलिस बल के गठन और ड्रोन कैमरे से निगरानी की डपोरशंखी घोषणाएं लागू नहीं हो पाईं। सुशील मोदी ने कहा कि लालू और बालू का पुराना रिश्ता नीतीश कुमार के पलटी मारने और राजद के सत्ता में आने से खनन क्षेत्र में अपराध बढ़ने का कारण बन गया। उन्होंने कहा कि सत्ता-संरक्षित बालू माफिया के कारण इस सरकार के 14 महीनों में गैंगवार, पुलिस और खनन विभाग के अधिकारियों पर हमले की 50 से अधिक घटनाओं में दो दर्जन लोग मारे जा चुके हैं। गैंगवार में हजारों राउंड गोलियां चलीं और दो दर्जन पोकलेन मशीनें फूंकी गईं।

गाजीपुर से मिला लोकसभा का टिकट तो अवश्य लड़ूंगा चुनाव: ओमप्रकाश राजभर

गाजीपुर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। कासिमाबाद ब्लॉक पर आयोजित कार्यक्रम में पहुंचे विधायक ओमप्रकाश राजभर ने आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर चुप्पी तोड़ दी है। ओमप्रकाश राजभर ने एक प्रश्न के जवाब में बताया कि एनडीए गठबंधन में हमने बिहार की दो सीट के अलावा उत्तर प्रदेश की एक सीट मांगी है। वहीं उन्होंने यह भी कहा कि गठबंधन में गाजीपुर की सीट मिली तो मै स्वयं चुनाव लड़ूंगा। वहीं एक बार फिर मंत्रिमंडल में शामिल होने को लेकर बयान दिया कि जब भी मंत्रिमंडल का विस्तार होगा मंत्रिमंडल में मुझे शामिल कर लिया जाएगा। सुभासपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर ने बताया कि अभी भाजपा पांच राज्यों के चुनाव में व्यस्त है। ऐसे में इन चुनावों के बाद जैसे ही मंत्रिमंडल का विस्तार होगा उसमे मेरा नाम शामिल होगा। उन्होंने कहा कि चुनाव में व्यस्त होने की वजह से भारतीय जनता पार्टी मंत्रिमंडल का विस्तार नहीं कर पाई है। मंत्रिमंडल के विस्तार में ओमप्रकाश राजभर निश्चित रूप से होंगे। ओमप्रकाश राजभर से जब पूछा गया की आप एनडीए में लोकसभा की कितनी सीट मांग रहे हैं। इसपर उन्होंने कहा कि हमने एनडीए गठबंधन से तीन सीट की मांग की है। इसमें बिहार की नेवादा और बक्सर के साथ उत्तर प्रदेश की एक सीट मांगी है। उन्होंने कहा कि यदि हमें गाजीपुर की सीट मिलती है तो मै स्वयं चुनाव लड़ूंगा। इसकी तैयारी भी शुरू कर दी गई है। बिहार के मुख्यमंत्री द्वारा महिलाओं पर टिप्पणी करने पर उन्होंने कहा कि एक कहावत है कि 60 साल के बाद बुद्धि काम नहीं करती तो नितीश कुमार के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ है।

नेपाल के रास्ते भारत में प्रवेश करते पाकिस्तानी महिला ब बच्चा पकड़े गए

किशनगंज, 16 नवंबर (एजेंसियां)। भारत-नेपाल सीमा पर तैनात सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) 41वीं बटालियन ने अवैध तरीके से भारत में प्रवेश कर रही एक महिला और एक बच्चे को पकड़ा है। दोनों मां और बेटे बताए जा रहे हैं। देर शाम दोनों किशनगंज की बॉर्डर से संदिग्ध तरीके से घुसने की कोशिश कर रहे थे। एसएसबी के जवानों ने दोनों को पकड़ कर पुलिस को सौंप दिया है। पुलिस दोनों से पूछताछ कर रही है। दोनों पाकिस्तानी नागरिकों में महिला ने अपनी पहचान शाइस्ता हनीफ (62) पति-मोहम्मद हनीफ और बच्चे की पहचान आर्यन (11) पिता- मोहम्मद हनीफ के रूप में हुई है। दोनों गहनमार स्ट्रीट, सराफा बाजार, करांची, पाकिस्तान के रहने वाले बता रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि गलगलिया थाना क्षेत्र से सटे भारत-नेपाल अंतरराष्ट्रीय सीमा क्षेत्र पर तैनात एसएसबी 41वीं बटालियन के जवानों ने पानी टंकी बीओपी के बीआईटी सुरक्षाकर्मियों ने नेपाल की ओर से भारत में प्रवेश करते दोनों को पकड़ा है। दोनों ने अब तक भारत आने का कोई वैध कागजात नहीं दिखा सके। एसएसबी अब आगे की कारवाई में जुटी है।

नशे में कार चालक ने आठ वाहनों में मारी टक्कर, एक का पैर टूटा

गोरखपुर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। शाहपुर के कौआबाग के पास साइकिल सवार को टक्कर मारने के बाद भाग रहे कार चालक को पादरी बाजार चौराहे पर भीड़ ने पकड़ लिया। पीटने के बाद उसे पुलिस को सुपुर्द कर दिया। इस बीच एक किमी के अंदर उसने और चार कार व तीन बाइक सवारों को टक्कर मारी। गनीमत रही कि किसी को गंभीर चोटें नहीं आईं। जंगल मातादीन के बबलू चौधरी का पैर टूट गया। कार चालक को हिरासत में लेकर पुलिस पूछताछ कर रही है। पिपराइच के जंगल धूसड़ के नीतीश सिंह शाम के समय स्विफ्ट डिजायर कार से घर की तरफ जा रहे थे। कौआबाग के पास उन्होंने एक साइकिल सवार को टक्कर मारकर घायल कर दिया। इसके बाद वह कार से भागने लगे। पादरी बाजार पहुंचने पर उसने विनोद दूबे के फार्च्युनर में टक्कर मार दी। आगे जाकर संदीप त्रिपाठी के इनोवा में, मनीष सिंह के आटो में, रूपेश के अर्टिगा में, मधुसूदन शर्मा की बाइक में और स्कूटी सवार को टक्कर मारते हुए जंगल धूषड़ की तरफ भागने लगा। पादरी बाजार प्राथमिक विद्यालय के पास स्थित मेडिकल स्टोर के सामने लगी भीड़ ने शोर सुनकर भाग रहे कार को चालक समेत पकड़ लिया। इसके बाद भीड़ ने उसकी पिटाई शुरू कर दी। पुलिस ने पहुंचकर कार को कब्जे में लेते हुए चालक को हिरासत में ले लिया।

ताजमहल में फौजी ने बचाई बीमार पिता की जान, फेल दिखे सारे सरकारी इंतजाम

आगरा, 16 नवंबर (एजेंसियां)। दुनिया के सातवें अजूबे ताजमहल में एक बार फिर बड़ी लापरवाही देखी गई। ताज दीदार करने आए दिल्ली के पर्यटक रामराज को अचानक दिल का दौरा पड़ा और वो बेहोश हो गया। करीब 45 मिनट तक पर्यटक का फौजी बेटा उसकी जान बचाने के लिए मशक्कत करते रहा, लेकिन ताजमहल की सुरक्षा में तैनात किसी अधिकारी और व्यवस्था में लगे किसी जिम्मेदार व्यक्ति ने उनकी मदद नहीं की। गनीमत रही कि पर्यटक के फौजी बेटे को प्राथमिक चिकित्सा के बारे में जानकारी थी और उन्होंने तत्काल बेहोश पिता को सीपीआर देना शुरू कर दिया। करीब 1 घंटे तक बिना रुके लगातार प्रयास के बाद पर्यटक की सांसे लौट आई। इसके बाद वो पर्यटक को सदर स्थित मिलट्री हॉस्पिटल लेकर चले गए। पर्यटक को उपचार न मिलने और साथियों द्वारा सीपीआर देने का वीडियो सामने आने के बाद एक बार फिर पर्यटकों के लिए प्राथमिक चिकित्सा की सुविधाओं पर सवाल उठ रहे हैं। इसी तरह लापरवाही के कारण पूर्व में भी फ्रांस की महिला पर्यटक की समय पर इलाज न मिलने से जान चली गई थी।

इस घटना के बाद कुछ दिन तक आला अधिकारियों की सख्ती दिखाई दी, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया परिस्थितियां पहले जैसी होती गईं। ताजमहल पर बीमार पर्यटक की मदद के लिए करीब 45 मिनट तक सीआईएसएफ और पुरातत्व विभाग का कोई भी जिम्मेदार नहीं पहुंचा।

हैवानियत की हदें पार: सिगरेट से दागकर दी यातनाएं
बारी-बारी से लूटी आबरू, फिर लाखों की डकैती डाल बदमाश फरार

बिजनौर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। बिजनौर में नगीना देहात थाना क्षेत्र के एक प्रमुख थोक व्यापारी के घर में घुसे पांच बदमाशों ने खूब तांडव मचाया। घर में अकेली व्यापारी की पत्नी को बंधक बनाकर जलती सिगरेट से दागकर यातनाएं दीं और सामूहिक दुष्कर्म किया। बेहोश पीड़िता (35) को कमरे में बंद कर बदमाश 25 तोले सोने के आभूषण, दो किलो चांदी और करीब डेढ़ लाख रुपये नकदी लूट ले गए। इस सनसनीखेज वारदात के खुलासे के लिए एसपी ने पुलिस की तीन टीमों का गठन किया है। इस मामले में नगीना देहात थाना प्रभारी विकास कुमार को निलंबित कर दिया गया। नगीना देहात के एक गांव निवासी थोक व्यापारी ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि वह अपनी मां और बच्चों संग मंगलवार की शाम दवाई लेने धामपुर गए थे। घर में उनकी पत्नी अकेली थी। शाम को साढ़े सात बजे हथियारबंद पांच बदमाश पड़ोसी की छत से होकर उसके घर में घुसे। बदमाशों ने उसकी पत्नी को मारपीट के बाद कपड़े से नशा सुंघाकर बेहोश कर दिया। वहीं, कुछ देर बाद होश आने पर उनको बांध दिया। बदमाशों ने सामने बैठकर सिगरेट पी और जलती सिगरेट से पत्नी के हाथ को दागते हुए यातनाएं दीं। इसके बाद सभी बदमाशों ने सामूहिक दुष्कर्म किया।

कानपुर गर्ल्स हॉस्टल की केयर टेकर की रेप के बाद हुई थी हत्या, पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में हुआ खुलासा

कानपुर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। कानपुर में गर्ल्स हॉस्टल की केयर टेकर कमरे में खून से लथपथ बिना कपड़ों के बेहोशी की हालत में मिली थी। इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई थी। हुए पोस्टमॉर्टम में चौकाने वाला खुलासा हुआ है। महिला केयर टेकर की दुष्कर्म के बाद सिर पर भारी वस्तु से हमला किया गया था। जिससे उसके सिर की हड्डी टूट गई और महिला कोमा में चली गई, जिसकी वजह से उसकी मौत हो गई थी। हालांकि, पुलिस ने दावा किया था कि महिला की बीमारी की वजह से मौत हुई है। पुलिस ने मुकदमे में दुष्कर्म की धारा बढ़ाई है। काकादेव थाना क्षेत्र स्थित गीता नगर में एक गर्ल्स हॉस्टल की केयर और टिफिन संचालिका मंजू त्रिवेदी (35) मूलरूप से हरदोई की रहने वाली थी। महिला के पति का पांच साल पहले निधन हो गया था। उसके परिवार में तीन बेटे और एक बेटी है। मृतका की बेटी ने बताया कि मेरी मां गर्ल्स हॉस्टल की देखरेख के साथ ही टिफिन भी बनाती थी। मृतका की बेटी ने टिफिन डिलीवरी करने वाले अर्जुन यादव पर रेप के बाद हत्या का आरोप लगाया था। मृतका की बेटी ने बताया कि अर्जुन ने मुझे दूध लाने के लिए भेजा दिया। अर्जुन ने मेरे साथ अपने भाई टिंकू और अपने साथी रोहित यादव को भेजा था। जब मैं वापस लौटी तो अंदर से गेट लॉक था। मैंने गेट खटखटाया तो उसने नहीं खोला। इसके बाद उसने कहा कि 10 मिनट बाद आना। मैं गेट के बाहर खड़ी रही, लेकिन गेट नहीं खुला। हॉस्टल में रहने वाली एक लड़की की मदद ली। काफी देर बाद जब गेट खोलने आया, तो मैंने देखा कि उसकी टीशर्ट पर खून लगा हुआ था। गेट खोलते ही अर्जुन फौरन भाग गया। मैंने अंदर जाकर देखा तो मां के शरीर पर कपड़े नहीं थे। चारों तरफ खून फैला हुआ था। मैंने इसकी सूचना अपने भाई को दी। इसके बाद हैलट अस्पताल ले गए। जहां, उसने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया।

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में 'आतंक' का अड्डा ! भारत में 'शरिया' लागू करने का लक्ष्य, एटीएस ने 7 आतंकियों को दबोचा

लखनऊ, 16 नवंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश पुलिस के आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) ने नवंबर 2023 में अलीगढ़ में आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट (आईएसआईएस) मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया था। इसके बाद से अब तक कुल 7 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया है। 3 नवंबर 2023 को यूपी एटीएस ने मामले में 10 पहचाने गए और कुछ अज्ञात आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की थी। अब तक दिल्ली और यूपी पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई में कुल 7 आतंकियों को गिरफ्तार किया है। आतंकवादी नेटवर्क में नामित अन्य लोग फरार हैं। 'अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी' (एएमयू) से जुड़े इन आतंकवादियों में से अधिकांश ने 'जिहाद' (इस्लाम में युद्ध के लिए एक शब्द, खासकर गैर-मुस्लिमों के खिलाफ) छेड़ने की कसम खाई थी। एटीएस के गोमती नगर थाने में एफआईआर दर्ज की गई है। शिकायतकर्ता अलीगढ़ के एटीएस प्रभारी हैं। यह शिकायत 2023 की शुरुआत में मुंबई के काला चौकी पुलिस स्टेशन क्षेत्र में दर्ज एक एफआईआर का अनुसरण करती है। एफआईआर जालसाजी, चोरी, आपराधिक इरादे आदि की धाराओं के तहत दर्ज की गई थी। उत्तर प्रदेश एटीएस इस एफआईआर में नामित आरोपियों के बारे में जानकारी जुटा रही थी। जांच के दौरान एटीएस को झारखंड के हजारीबाग के शाहनवाज और दिल्ली के दरियागंज के रहने वाले रिजवान के बारे में जानकारी मिली। एटीएस ने शाहनवाज और रिजवान के फोन को सर्विलांस पर लगा दिया। दोनों के बीच हुई बातचीत से पता चला कि वे आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट (आईएसआईएस) के सक्रिय सदस्य हैं। पुलिस ने जब इन दोनों के बारे में और जानकारी जुटाई, तो पता चला कि शाहनवाज और रिजवान अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के छात्र संगठन एसएएमयू (स्टूडेंट्स ऑफ अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी) से भी जुड़े हुए हैं। एसएएमयू के सदस्यों में प्रमुख नाम वजीउद्दीन, अब्दुल्ला अर्सलान, माज बिन तारिक, अब्दुल समद मलिक, फैजान बख्तियार, अरशद वारसी, मोहम्मद नावेद और रिजवान अशरफ हैं। इस मामले में ये सभी आरोपी अलग-अलग जगहों के हैं, जिनमें अलीगढ़, छत्तीसगढ़, संभल, प्रयागराज, दिल्ली और झारखंड शामिल हैं। रिजवान अशरफ एएमयू का छात्र नहीं है। पूरा ग्रुप आईएसआईएस की जिहादी विचारधारा से प्रभावित था। एटीएस अपनी जांच कर रही थी, जिसके दौरान 2 अक्टूबर 2023 को दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने रिजवान अशरफ और अरशद वारसी को गिरफ्तार कर लिया। शाहनवाज लंबे समय से आईएसआईएस से जुड़ा था और अलीगढ़ में रहकर अपना नेटवर्क बना रहा था। शाहनवाज के साथियों ने उनकी शादी अलीगढ में खदीजा से कर दी थी। खदीजा एक परिवर्तित मुस्लिम हैं, जो वह पहले हिंदू थीं। इन सबके अलावा, मोहम्मद रिज़वान अशरफ़ ने एसएएमयू के अन्य सदस्यों को जिहाद छेड़ने के लिए तैयार कर लिया था।

वे मिलकर जिहादी साहित्य वितरित कर रहे थे और अपने संगठनात्मक नेटवर्क का विस्तार कर रहे थे। ये सभी एमी के अन्य छात्रों को भी आईएसआईएस से जोड़ रहे थे। ये आतंकी रामपुर, कौशांबी, संभल, प्रयागराज, लखनऊ और अलीगढ़ क्षेत्र में सक्रिय थे। इन्हें विभिन्न ऐप्स के जरिए आईएसआईएस हैंडलर्स द्वारा निर्देशित किया गया था। एटीएस के मुताबिक ये सभी आरोपी भारत के खिलाफ युद्ध छेड़कर देश में शरिया कानून स्थापित करना चाहते थे। एटीएस की शिकायत में यह भी जिक्र है कि सभी आरोपी गुप्त रूप से हथियार भी इकट्ठा कर रहे थे। इनका मकसद किसी बड़े आतंकी हमले को अंजाम देना था। पुलिस ने सभी 10 नामित आरोपियों पर आईपीसी की धारा 121-ए और 122 के साथ-साथ गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम 1967 की धारा 13, 18, 18 बी और 38 के तहत मामला दर्ज किया है। फैजान बख्तियार और अब्दुल समद मलिक फिलहाल फरार हैं। बाकी सभी नामजद आरोपियों को दिल्ली और यूपी पुलिस ने अलग-अलग दिन गिरफ्तार किया है।

भाई दूज करने के बहाने पति संग मायके आई पत्नी प्रेमी संग रफूचक्कर

फिरोजाबाद, 16 नवंबर (एजेंसियां)। दौज करने के बहाने पति संग मायके आई पत्नी बुधवार को घर लौटते समय रास्ते में प्रेमी संग रफूचक्कर हो गई। पति के लापता होने पर पति रोता रहा। 10 माह पहले उसकी शादी हुई थी। मथुरा के थाना महावन क्षेत्र के एक गांव के रहने वाले भगवानदास की शादी 19 जनवरी को थाना नगला सिंघी क्षेत्र के गांव की रहने वाली युवती से हुई थी। पति ने बताया कि वह मंगलवार को वह पत्नी को दौज करने के लिए ससुराल लेकर आया था। दौज कराने के बाद वह दोपहर 12 बजे वापस घर लौट रहा था। सुभाष चौराहा पर वह आटो में पत्नी को बिठाने लगा, तभी पत्नी ने बैठने से इंकार कर दिया और हंगामा शुरू कर दिया। पति ने मनाने का प्रयास किया, लेकिन वह साथ चलने को तैयार नहीं हुई। तभी पति चौराहा पर तैनात पुलिस के पास मदद के लिए पहुंचा।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

मेरा हैदराबाद

सुविचार

जब अपने खफा होने लग जाएँ तो, आप समझ लेना आप सही राह पर हैं !

आईटी अधिकारियों ने विधायक के अनुयायियों की तलाशी ली

नलगोंडा, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना में एक बार फिर आईटी अधिकारी सख्ती बरत रहे हैं। सुबह चार बजे से ही चालीस टीमें मैदान में उतर गयीं। वी. श्रीधर राव के हैदराबाद स्थित घर और मिर्यालगुडा के वैदेही टाउनशिप में तलाशी चल रही है। मिर्यालगुडा को बीआरएस विधायक नल्लामोथु भास्कर राव के अनुयायी के रूप में जाना जाता है।

पूर्व तट रेलवे

निविदा सं.SANDT-REPL_GIPIPES_CABLE

कार्य का नाम : वाल्टियर मण्डल में ML लाइन, KK लाइन सेक्शन में गर्डर पुलों में G.I.पाइप, केबल एवं M.S.चैनल का प्रतिस्थापन।

विज्ञापित मूल्य (रुपये में) : 50,40,574.00, EMD (रुपये में) : 100800.00, पूरा होने की अवधि : 12 महीने।

बिड प्रारंभ होने की तिथि : दिनांक : 17.11.2023, निविदा बंद होने की तिथि व समय : दिनांक : 01.12.2023 को 1500 बजे।

ऐसी निविदा के लिए मैनुअल प्रस्ताव की अनुमति नहीं है एवं इस तरह प्राप्त मैनुअल प्रस्ताव पर ध्यान नहीं दिया जायेगा।

ई-निविदा दस्तावेज सहित संपूर्ण विस्तृत विवरण वेबसाइट http://www.ireps.gov.in में उपलब्ध हैं।

वरिष्ठ मण्डल सिग्नल एवं टेलीकॉम इंजीनियर/ वाल्टियर

PR-778/O/23-24

CLASSIFIEDS

WANTED

Multiple Vacancies

Vacancies for a Road Transport company in Vanasthalipuram, Hyderabad. Salary as per the qualification and experience.

Company Name - Sri Mahaveer Logistics

1. Position - Marketing Staff

Qualification - Graduate

Languages - English, Hindi

Experience - 2+ years Skills - Finding Markets

Managing Relationships, MS Office

2. Position - Loading Staff

Qualification - Intermediate

Languages - English, Hindi

Experience 2+ years, Skills MS Office

3. Position - Accountant

Qualification - B.COM

Languages - English, Hindi

Experience - 2+ years, Skills MS Office

Cont : 9494632595

सावधान

पाठकों को सूचित किया जाता है कि वर्गीकृत विज्ञापन का प्रतिवादन करने से पहले उसकी पूरी तरह से जाँच पड़ताल कर लें। विज्ञापनदाता ने दावा कर रहे हैं या कह रहे हैं, उन बातों से दैनिक समाचार पत्र (स्वतंत्र वार्ता) का किसी भी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं है।

पूर्व तट रेलवे

कैटरिंग सेवाओं की ई-नीलामी

ई-निविदा सं.ET-SRDCM-CAT-VSKP-2023-1

क्रम सं.1 : विशाखापट्टनम स्टेशन स्थित प्लेटफॉर्म नं.1 में जनरल माइनर यूनिट (CS-1) कैटरिंग स्टॉल में कैटरिंग सेवाओं का प्रावधान।

विज्ञापित मूल्य (रुपये में) : 32,48,789.00, EMD/बिड सिक्युरिटी (रुपये में) : 1,62,500.00

ई-निविदा सं.ET-SRDCM-CAT-VSKP-2023-2

क्रम सं.2 : विशाखापट्टनम स्टेशन स्थित प्लेटफॉर्म नं.1 में जनरल माइनर यूनिट-महिला (CS-2) जूस स्टॉल में कैटरिंग सेवाओं का प्रावधान।

विज्ञापित मूल्य (रुपये में) : 15,85,781.00, EMD/बिड सिक्युरिटी (रुपये में) : 79,300.00

ई-निविदा सं.ET-SRDCM-CAT-VZM-2023-3

क्रम सं.3 : विजयनगरम स्टेशन स्थित प्लेटफॉर्म नं.4/5 में जनरल माइनर यूनिट कैटरिंग स्टॉल (CS-3) में कैटरिंग सेवाओं का प्रावधान।

विज्ञापित मूल्य (रुपये में) : 11,49,640.00, EMD/बिड सिक्युरिटी (रुपये में) : 57,500.00

ई-निविदा सं.ET-SRDCM-CAT-VZM-2023-4

क्रम सं.4 : विजयनगरम स्टेशन स्थित प्लेटफॉर्म नं.4/5 में जनरल माइनर यूनिट कैटरिंग स्टॉल (CS-4) में कैटरिंग सेवाओं का प्रावधान।

विज्ञापित मूल्य (रुपये में) : 12,08,888.00, EMD/बिड सिक्युरिटी (रुपये में) : 60,500.00

ई-निविदा सं.ET-SRDCM-CAT-DVD-2023-5

क्रम सं.5 : दुव्वाडा स्टेशन स्थित प्लेटफॉर्म नं.4 में जनरल माइनर यूनिट (CS-5) में कैटरिंग सेवाओं का प्रावधान।

विज्ञापित मूल्य (रुपये में) : 3,01,778.00, EMD/बिड सिक्युरिटी (रुपये में) : 15,100.00

ई-निविदा सं.ET-SRDCM-CAT-VSKP-2023-M1

क्रम सं.6 : विशाखापट्टनम स्टेशन स्थित प्लेटफॉर्म नं.1 में मिल्क स्टॉल यूनिट नंबर /नाम M-1 में कैटरिंग सेवाओं का प्रावधान।

विज्ञापित मूल्य (रुपये में) : 7,02,900.00, EMD/बिड सिक्युरिटी (रुपये में) : 35,200.00

ई-निविदा सं.ET-SRDCM-CAT-VZM-2023-M2

क्रम सं.7 : विजयनगरम स्टेशन स्थित प्लेटफॉर्म नं.4/5 में मिल्क स्टॉल यूनिट नंबर /नाम M-2 में कैटरिंग सेवाओं का प्रावधान।

विज्ञापित मूल्य (रुपये में) : 2,73,752.00, EMD/बिड सिक्युरिटी (रुपये में) : 13,700.00

ई-निविदा सं.ET-SRDCM-CAT-SCM-2023-M3

क्रम सं.8 : सिह्मचलम स्टेशन स्थित प्लेटफॉर्म नं.2 में मिल्क स्टॉल यूनिट नंबर /नाम M-3 में कैटरिंग सेवाओं का प्रावधान।

विज्ञापित मूल्य (रुपये में) : 73,018.00, EMD/बिड सिक्युरिटी (रुपये में) : 3,700.00

निविदा दस्तावेज की लागत(रुपये में) : 5,900/- (सभी क्रम सं. हेतु), पूरा होने की अवधि (सभी क्रम सं. हेतु) : 05 वर्ष, निविदा बंद होने की तिथि व समय (सभी क्रम सं. हेतु) : दिनांक : 01.12.2023 को 1100 बजे।

ई-निविदा दस्तावेज सहित संपूर्ण विस्तृत विवरण वेबसाइट http://www.ireps.gov.in में उपलब्ध है।

वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबंधक/ वाल्टियर

PR-779/O/23-24

केटीआर ने विकाराबाद में विशाल रोड शो को संबोधित किया

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। विकाराबाद विधानसभा क्षेत्र में बीआरएस पार्टी के लिए गहन प्रचार करते हुए, बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष और मंत्री के तारकरमा राव ने कहा कि सीएम केसीआर के नेतृत्व में विकाराबाद में टांडा को ग्राम पंचायतों में अपग्रेड किया गया था। उन्होंने यह भी कहा कि जिले में एक नया मेडिकल कॉलेज, एक डिग्री कॉलेज और एक नर्सिंग कॉलेज स्थापित किया गया है।

आज मोइनाबाद, विकाराबाद शहर और मारपल्ली में रोड शो को संबोधित करते हुए, केटीआर ने लोगों से कांग्रेस के दिनों को याद करने को कहा जब किसान वर्तमान और पानी की समस्याओं, बीज और उर्वरकों की अपर्याप्त आपूर्ति आदि के अलावा कई लाभों से वंचित थे। उन्होंने कहा, कोई अन्य नेता किसानों से प्यार नहीं करता और उनके कल्याण के लिए सीएम केसीआर जितना काम करता है।

राज्य में 24 घंटे बिजली की आपूर्ति नहीं होने पर टीपीसीसी नेता रेवंत रेड्डी के बयान पर

प्रतिक्रिया देते हुए, केटीआर ने कहा कि रेड्डी पूरे तेलंगाना में किसी भी करंट वाले तार को पकड़ सकते हैं और खुद जांच सकते हैं कि करंट की आपूर्ति हो रही है या नहीं। केटीआर ने रेवंत रेड्डी के उस बयान को खारिज कर दिया, जिसमें उन्होंने कहा था कि तेलंगाना में किसानों के लिए एक एकड़ जमीन की सिंचाई के लिए तीन घंटे की बिजली आपूर्ति पर्याप्त है, अगर वे 10 एचपी पंप सेट चला सकते हैं। केटीआर ने खेती के बारे में जानकारी की कमी के लिए कांग्रेस नेताओं का मजाक उड़ाया और लोगों से पूछा कि क्या वे वर्तमान या कांग्रेस चाहते हैं।

केटीआर ने कहा कि सीएम केसीआर स्वतंत्र भारत के एकमात्र नेता हैं, जिन्होंने किसानों के लिए निवेश सहायता योजना रायथु बंधु की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि राज्य में 70 लाख किसानों को रायथु बंधु का पैसा मिल रहा है, 46 लाख लोगों को 2000 रुपये की पेंशन मिल रही है, 15 लाख महिलाओं को केसीआर किट मिल रही हैं, 14 लाख महिलाओं को कल्याण लक्ष्मी और शादी मुबारक योजनाएं मिल रही हैं।

107 सीआरपीसी की कार्यवाही प्रतिद्वंद्वी समूहों को नियंत्रित करने के लिए बहुत उपयोगी उपकरण : सीपी

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। शहर के पुलिस आयुक्त संदीप शांडिल्य ने गुरुवार को 107 सीआरपीसी कार्यवाही को निष्पादित करने के लिए अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट (कार्यकारी) की क्षमता में हैदराबाद पुलिस आयुक्तालय में एक अदालत का आयोजन किया। कार्यवाही के दौरान, उन्होंने आठ अलग-अलग समूहों के व्यक्तियों को बांड भरने का आदेश दिया कि वे शांति भंग नहीं करेंगे। उन्होंने कानून का उल्लंघन करने पर कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी।

आयुक्त ने कहा कि सीआरपीसी कार्यवाही की 107 (अन्य मामलों में शांति बनाए रखने के लिए सुरक्षा) सार्वजनिक शांति को भंग करने वाले प्रतिद्वंद्वी समूहों को नियंत्रित करने के लिए एक बहुत ही उपयोगी उपकरण है। उन्होंने कहा कि इन शक्तियों का इस्तेमाल भविष्य में भी उपद्रवियों, गिरोहों, धार्मिक स्थलों, भूमि और संपत्तियों पर लड़ने वाले समूहों और युद्धरत गिरोहों आदि की अवैध और गैरकानूनी गतिविधियों को रोकने के लिए किया जाएगा।

इस बीच हैदराबाद पुलिस उपद्रवी हमलावरों द्वारा मारे गए लोगों के परिवारों के सामने आने

वाली कठिनाइयों की पहचान करने के लिए व्यापक मूल्यांकन कर रही है।

संदीप शांडिल्य ने कहा कि सभी डीसीपी को पिछले 5 साल में उपद्रवियों द्वारा मारे गए लोगों के नाम और पते की सूची बनाने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि डीसीपी रैंक की महिला अधिकारी पीड़ितों के घर जाकर परिवार को होने वाली कठिनाइयों के बारे में पता लगाएंगी। यह काम तुरंत शुरू हो जाएगा।

पांच पार्षद कांग्रेस पार्टी में शामिल

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मेडचल निर्वाचन क्षेत्र के तहत बोडुप्पल नगर पालिका के पांच नगरसेवक गुरुवार को कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए। टीपीसीसी अध्यक्ष रेवंत रेड्डी ने जुबली हिल्स स्थित अपने आवास पर स्कार्फ लपेटा और उनका पार्टी में स्वागत किया। कांग्रेस पार्टी में शामिल होने वालों में 23वें डिवीजन के पार्षद रसाला वेंकटेश यादव, 1वें डिवीजन के पार्षद बिंगी जंगय्या यादव, 13वें डिवीजन के पार्षद डानागल्ला अनिता यदागिरी, 20वें डिवीजन के पार्षद जाडिगे महेंद्र यादव और 24वें डिवीजन के पार्षद गुराला राम वेंकटेश यादव शामिल हैं। दूसरी ओर, पालकुर्ती निर्वाचन क्षेत्र से पूर्व एमपीपी येर्रबेली राघव राव और महबूबाबाद निर्वाचन क्षेत्र से पैक्स अध्यक्ष चल्ला लिंगा रेड्डी भी टीपीसीसी अध्यक्ष रेवंत रेड्डी की उपस्थिति में कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए।

हरीश राव का कांग्रेस से सवाल : कर्नाटक में राहुल के पांच वादे क्यों पूरे नहीं हुए?

संगारेड्डी, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। वित्त मंत्री टी. हरीश राव ने कांग्रेस पार्टी से स्पष्टीकरण मांगा है कि वह पड़ोसी राज्य में कांग्रेस की सरकार बनने के पांच महीने बाद भी कर्नाटक चुनाव अभियान के दौरान राहुल गांधी द्वारा किए गए पांच वादों को पूरा क्यों नहीं कर सकी। गुरुवार को जहीराबाद निर्वाचन क्षेत्र में कर्नाटक सीमा से कुछ किलोमीटर दूर, न्यालकल मंडल के हद्दनुरु गांव में प्रजा आशीर्वाद सभा को संबोधित करते हुए, हरीश राव ने कहा कि कांग्रेस कर्नाटक में कृषि क्षेत्र को 5 घंटे बिजली आपूर्ति का वादा करके सत्ता में आई थी। हालाँकि, राव ने कहा है कि राज्य में लोग अपने मोबाइल फोन भी ठीक से चार्ज नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि बिजली की आपूर्ति में गंभीर कमी है। उन्होंने लोगों से यह तय करने का आह्वान किया कि क्या उन्हें भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) सरकार चाहिए जो 24 घंटे निर्बाध बिजली आपूर्ति कर रही है या कांग्रेस सरकार जो उन्हें अंधेरे में धकेल देगी।

श्री राव ने जहीराबाद निर्वाचन क्षेत्र के मतदाताओं से अपील की कि अगर वे 24 घंटे बिजली आपूर्ति चाहते हैं तो बीआरएस उम्मीदवार के माणिक राव को फिर से कार चुनाव चिह्न पर वोट देकर विधानसभा में भेजें। यह कहते हुए कि कांग्रेस सरकार कर्नाटक में सिर्फ 600 रुपये पेंशन दे रही है, राव ने स्पष्टीकरण मांगा कि कांग्रेस यहां 4,000 रुपये पेंशन कैसे देगी।

कर्नाटक सरकार रायथु बंधु, कल्याण लक्ष्मी या कई अन्य योजनाएं नहीं दे रही थी जो बीआरएस सरकार पिछले एक दशक से यहां लागू कर रही है। हरीश राव ने कहा कि वे सत्ता में बने रहने के बाद सभी थांडों में गरीब लम्बाडाओं को मुफ्त आवास स्थल प्रदान करेंगे। आदिवासियों के कल्याण के लिए बीआरएस सरकार द्वारा किए गए प्रयासों के बारे में विस्तार से बताते हुए, हरीश राव ने कहा कि मुख्यमंत्री के। जहीराबाद के सांसद बीबी पाटिल और अन्य उपस्थित थे।

वैवाहिक वेबसाइटों पर महिलाओं से दोस्ती कर धोखा देने वाला गिरफ्तार

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मोंडा मार्केट पुलिस ने एक ऐसे व्यक्ति को गिरफ्तार किया है जिसने वैवाहिक वेबसाइटों पर महिलाओं से दोस्ती करने के बाद कथित तौर पर उन्हें धोखा दिया था। पुलिस ने उसके पास से 27 तोला सोना, एक चेक बुक, एक क्रेडिट कार्ड और एक मोबाइल फोन बरामद किया। रंगा रेड्डी जिले के कंदुकुर गांव के रहने वाले तुम्मा मोहन रेड्डी (38) ने एक वैवाहिक वेबसाइट के जरिए एक महिला से दोस्ती की और सिकंदराबाद के एक होटल में उससे मुलाकात की। डीसीपी नॉर्थ चंदना दीप्ति ने कहा कि जब महिला वॉशरूम गई थी, मोहन रेड्डी ने उसके सोने के गहने इकट्ठे किए और भाग गया। शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर मोहन को पकड़ लिया। पूछताछ में उसने शादी का झांसा देकर तीन महिलाओं को ठगने की बात स्वीकार की। अधिकारी ने कहा, उनके क्रेडिट कार्ड प्राप्त करने के अलावा, मोहन ने लाखों रुपये के सोने के आभूषण खरीदे और बाद में इसे किसी अन्य स्थान पर बेच दिया। उसके खिलाफ कंदुकुर, माधापुर, चैतन्यपुरी, मियापुर और कलवाकुर्ती पुलिस स्टेशनों में मामले दर्ज हैं।

बेटी का यौन उत्पीड़न करने वाले को 25 साल जेल

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। अपनी बेटी का यौन उत्पीड़न करने वाले 35 वर्षीय व्यक्ति को स्थानीय अदालत ने दोषी ठहराया और 25 साल की जेल की सजा सुनाई और उस पर 5,000 रुपये का जुर्माना भी लगाया। कोर्ट ने पीड़िता को 5 लाख रुपये का मुआवजा भी दिया। चंद्रायनगुट्टा के रहने वाले व्यक्ति ने पिछले साल दिसंबर में लगभग 11 साल की लड़की का उस समय यौन उत्पीड़न किया था जब उसकी मां कार्यालय गई थी। पीड़िता जब शाम को घर लौटी तो उसने अपनी मां को यौन उत्पीड़न की जानकारी दी।

मां ने चंद्रायनगुट्टा पुलिस स्टेशन से संपर्क किया जिसने मामला दर्ज किया और उस व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। सुनवाई के बाद अदालत ने उसे दोषी ठहराया और 25 साल की जेल और 5,000 रुपये जुर्माने की सजा सुनाई। मामले की जांच चंद्रायनगुट्टा थाने के तत्कालीन इंस्पेक्टर केएन प्रसाद वर्मा ने की थी।

జాతీయ భారతీయ వైద్య పరంపర సంస్థ

राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा संपदा संस्थान

(केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार)

रेवेन्यु बोर्ड कॉलोनी, गड्डिअन्नारम, हैदराबाद-500 036, तेलंगाना, भारत

National Institute of Indian Medical Heritage

(Central Council for Research in Ayurvedic Sciences, Ministry of Ayush, Govt. of India)

Revenue Board Colony, Gaddiannaram, Hyderabad - 500 036, Telangana, INDIA

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

अधिसूचना. 08/2023

इस संस्थान में उपलब्ध परियोजनाएँ एसआरएफ (यूनानी) -01 पद के लिए आवेदन का निमंत्रण है। पूर्ण विवरण इस **बेबसाइट** http://niimh.nic.in **या** http://ceras.nic.in से डाउनलोड किया जा सकता है। किसी भी स्पष्टीकरण के लिए सभी कार्य दिवसों पर टेलीफोन नंबर 040-240671298 पर संपर्क किया जा सकता है।

प्रभारी सहायक निदेशक

पोन्नला ने सीएम केसीआर के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करने के लिए चिदंबरम की आलोचना की

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। पूर्व मंत्री पोन्नाला लक्ष्मय्या ने मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करने के लिए पूर्व केंद्रीय मंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम की आलोचना की है। गुरुवार को यहां तेलंगाना भवन में एक संवाददाता सम्मेलन में बोलते हुए, पोन्नाला लक्ष्मैया ने कहा कि तत्कालीन कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार द्वारा अलग तेलंगाना राज्य देने में देरी के कारण अलग तेलंगाना आंदोलन के दौरान सैकड़ों युवाओं की मौत हो गई थी। यदि केसीआर ने तेलंगाना मुद्दे के लिए आमरण अनशन नहीं किया होता तो 2009 में केंद्रीय गृह मंत्री ने तेलंगाना राज्य बनाने की घोषणा नहीं की होती। उन्होंने आरोप लगाया कि चिदंबरम ने तेलंगाना के इतिहास को तोड़-मरोड़कर पेश किया है और बीआरएस अध्यक्ष केसीआर के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करके लोगों को गुमराह कर रहे हैं, जो अलग तेलंगाना राज्य हासिल करने के असली समर्थक हैं।

यह कहते हुए कि चिदंबरम बीआरएस अध्यक्ष केसीआर की छवि खराब करने के उद्देश्य से झूठा प्रचार कर रहे हैं, पोन्नाला ने स्पष्ट किया है कि तेलंगाना ने संविधान में उल्लिखित प्रावधानों के अनुसार ऋण उधार लिया है और यह अन्य राज्यों की तुलना में उधार लेने में 22 वें स्थान पर है। उन्होंने पूछा कि क्या कांग्रेस सत्ता में आने पर कर्ज में डूबे या जमीन बेचे बिना अपनी छह गारंटी लागू कर सकती है। पूर्व मंत्री ने आगे कहा कि तेलंगाना कांग्रेस द्वारा किए गए वादे कार्यान्वयन के लिए व्यवहार्य नहीं थे और लोग केसीआर को लगातार तीसरी बार मुख्यमंत्री बनाएंगे।

बीआरएस सरकार ने मुस्लिमों के कल्याण के लिए काम किया : महमूद अली

खम्मम, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। गृह मंत्री मोहम्मद महमूद अली ने कहा कि बीआरएस सरकार ने मुसलमानों के कल्याण के लिए भारी मात्रा में धन खर्च करके उनके जीवन में जबरदस्त बदलाव लाया है। उन्होंने गुरुवार को यहां बीआरएस खम्मम विधानसभा उम्मीदवार पुववाड़ा अजय कुमार की जीत के लिए रोड शो किया। उन्होंने सांसद नामा नागेश्वर राव और पार्टी जिला अध्यक्ष, एमएलसी टाटा मधुसूदन के साथ मीडिया को संबोधित किया। तेलंगाना के आगमन के बाद, राज्य ने बहुत विकास किया है और मुसलमानों की विकास में बड़ी हिस्सेदारी है। कांग्रेस पार्टी 60 वर्षों से सत्ता में है और उसने अल्पसंख्यकों को कोई योजना नहीं दी है। उन्होंने कहा कि पहले मुसलमान ज्यादातर होटलों में और मैकेनिक के तौर पर काम करते थे।

मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव ने स्कूलों और कॉलेजों का निर्माण करके मुसलमानों के सर्वांगीण विकास के लिए काम किया। सरकार ने अल्पसंख्यकों के कल्याण पर 24,000 करोड़ रुपये खर्च किए और मुस्लिम बच्चों के साथ खड़ी रही। बीआरएस सरकार ने शादी मुबारक योजना शुरू की और तेलंगाना राज्य में लगभग दो लाख मुस्लिम महिलाएं इस योजना से लाभान्वित हुईं। अली ने कहा, अब चुनाव के मद्देनजर कांग्रेस पार्टी बड़े-बड़े वादे कर रही है और लोगों को उसके वादों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

2014 से आज तक तेलंगाना राज्य में, खासकर हैदराबाद में एक भी दिन का कर्फ्यू नहीं लगा। कांग्रेस और टीडीपी दोनों पार्टियां जब सत्ता में थीं तो कई बार कर्फ्यू लगाती थीं. गृह मंत्री ने कहा, बीआरएस शासन के तहत सभी वर्ग के लोग खुश हैं। तेलंगाना बनने से पहले वहां बिजली की भारी कमी थी. लेकिन बीआरएस के सत्ता में आने के बाद 24 घंटे बिजली आपूर्ति के साथ स्थिति बदल गई। आईटी मंत्री केटी रामा राव के प्रयासों के कारण प्रमुख विदेशी कंपनियां हैदराबाद में शाखाएं स्थापित कर रही हैं।

टीपीसीसी प्रमुख ए. रेवंत रेड्डी कांग्रेस नेता नहीं बल्कि आरएसएस नेता थे। अली ने कहा कि कांग्रेस पार्टी में सीएम पद की दौड़ में 20 नेता थे, लेकिन बीआरएस के पास केवल एक ही मुख्यमंत्री है। उन्होंने मुसलमानों से बीआरएस पार्टी का समर्थन करने की अपील की, जो समुदाय के विकास के लिए काम कर रही है।

कांग्रेस नेता जी. विवेक की कंपनियों से जुड़े कर्मचारियों से 50 लाख रुपये नकद जब्त

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना में कांग्रेस पार्टी को एक बड़ा झटका देते हुए, चेन्नूर से कांग्रेस उम्मीदवार गद्दाम विवेक की स्वामित्व वाली कंपनियों से जुड़े कर्मचारियों को नकदी बैग ले जाते हुए पकड़ा गया। तेलंगाना में नैतिक आचार संहिता का उल्लंघन करते हुए बिना उचित दस्तावेजों के 50 लाख ले जाते हुए दो कर्मचारियों को पकड़ा गया। वे विवेक के निर्देशों पर चेन्नूर निर्वाचन क्षेत्र में पैसे ले जा रहे थे, जिसका उद्देश्य कथित तौर पर निर्वाचन क्षेत्र में नेताओं को खरीदना था।

पकड़े गए व्यक्तियों की पहचान कांग्रेस नेता से जुड़ी कंपनी के कनिष्ठ कार्यकारी कंजुला रवि किशोर और विवेक के स्वामित्व वाले एक समाचार पत्र के विपणन प्रभाग में कार्यरत मुदिगंती प्रेम कुमार के रूप में की गई। जब पुलिस कर्मियों ने उनसे पूछताछ की, तो उन्होंने स्वीकार किया कि वे जब्त की गई राशि को चेन्नूर निर्वाचन क्षेत्र में ले जा रहे थे। घटना के संबंध में उप्पल पुलिस स्टेशन में एक प्राथमिकी दर्ज की गई है। पुलिस ने गिरफ्तार व्यक्तियों के पास से 50 लाख रुपये नकद, दो मोबाइल फोन और एक मोटरसाइकिल जब्त की।

खड़गे आज कांग्रेस पार्टी का घोषणापत्र जारी करेंगे

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। एआईसीसी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और वरिष्ठ कांग्रेस नेता राहुल गांधी आज राज्य का दौरा करेंगे। प्रदेश कांग्रेस के नेता इस संबंध में व्यापक इंतजाम कर रहे हैं। खड़गे सुबह 10 बजे बेंगलुरु से विशेष उड़ान से बेगमपेट हवाई अड्डे पर पहुंचेंगे। वह सुबह 11 बजे गांधी भवन पहुंचेंगे. आगामी चुनावों के लिए कांग्रेस पार्टी का घोषणापत्र सुबह 11 बजे एआईसीसी अध्यक्ष द्वारा जारी किया जाएगा। खड़गे शाम 4 बजे कुतुबुल्लापुर म्यूनिसिपल ग्राउंड में एक जनसभा को संबोधित करेंगे। बैठक के बाद उनके हैदराबाद के एक होटल में रुकने की संभावना है.

खड़गे सुबह 10.30 बजे बेंगलुरु लौटेंगे। कांग्रेस पार्टी के घोषणापत्र में किए गए कुछ वादे हैं धरणी पोर्टल को भु भारती नामक ऐप से बदलना, गांव के वार्ड सदस्यों के लिए मानदेय का प्रावधान, राशन डीलरों को मानदेय के साथ कमीशन का प्रावधान, अभय हस्थम योजना का पुनरुद्धार, पहचान पत्र का प्रावधान। आरएमपी और पीएमपी को, अम्माहस्थम के नाम पर नौ आवश्यक वस्तुओं का वितरण, दुल्हन को उपहार के रूप में एमबीसी के लिए एक अलग निगम का गठन, सभी राशन कार्ड धारकों को 1 लाख और एक तोला सोना और बढ़िया चावल का प्रावधान।

दक्षिण मध्य रेलवे

हमें @SCRailwayIndia पर फॉलो करें. द.म. रेलवे की निविदा सूचनाओं के विवरणों को हमारी वेबसाइट : www.scr.indianrailways.gov.in पर देखा जा सकता है

सं. -सी/सी/ई-आक्शन्स कैटलाग/एससी/2023-24 दि.15.11.2023

PUB/1259

भारत के राष्ट्रपति, संघीय गणराज्य, की ओर से व के लिए, वरिष्ठ मंडल वाणिज्यिक प्रबंधक, सिकंदराबाद डिवीजन, दक्षिण मध्य रेलवे व्दारा वाणिज्यिक आय या कमर्शियल एर्निंग तथा एनएफआर संविदाओं या एनएफआर कांट्राक्ट्स के लिए ई-नीलामी आमंत्रित की जाती हैं। तदनुसार, एससी डिवीजन ने निम्न श्रेणियों के लिए, ई-नीलामी संसाधित की है,जिसे https://www.ireps.gov.in/website पर सूचित किया गया है।

श्रेणीः पार्सल्स, कैटलाग नं. एससी पार्सल्स-43-23, नीलामी शुरू तिथिः 18.11.2023, 11.00 बजे, नीलामी बंद तिथिः 18.11.2023, 13.30 बजे, कार्य विवरणः निम्न विविरतानुसार ट्रेन नं. व्दारा 10 एसएलआरजः 17256-एसएलआर-एफ1-एलपीआय-एनएस, 17256-एसएलआर-एफ2-एलपीआय-एनएस, 12745-एसएलआर-एफ2-एससी-एमयुजीआर, 12745-एसएलआर-आर1-एससी-एमयुजीआर, 12604-एसएलआर-एफ1-एचवायबी-एमएएस, 12604-एसएलआर-एफ2-एचवायबी-एमएएस, 17230-एसएलआर-आर1-एससी-टीवीसी, 17230-एसएलआर-एफ2-एससी-टीवीसी, 12764-एसएलआर-आर1-एससी-टीपीटीवाय, 22737-एसएलआर-आर1-एससी-एचएसआर। निम्न विविरतानुसार ट्रेन नं. व्दारा 03 वीपीजः 22718-22717-वीपी-1-एससी-आरजेटी, 12774-12773-वीपी-1-एससी-एसएचएम, 22850-22849-वीपी-1-एससी-एसएचएम।

श्रेणीः पार्सल्स, कैटलाग नं. एससी पार्सल्स-44-23, नीलामी शुरू तिथिः 25.11.2023, 12.20 बजे, नीलामी बंद तिथिः 25.11.2023, 13.30 बजे, कार्य विवरणः निम्न विविरतानुसार ट्रेन नं. व्दारा 04 एसएलआरजः 17659-एसएलआर-आर1-एसी-बीडीसीआर, 17659-एसएलआर-एफ2-एससी-बीडीसीआर, 17659-एसएलआर-एफ1-एससी-बीडीसीआर, 12704-एसएलआर-एफ1-एससी-एचडब्ल्यूएच। निम्न विविरतानुसार ट्रेन नं. व्दारा 02 वीपीजः 12791-12792-वीपी-1-एससी-डीएनआर, 17016-17015-वीपी-1-एससी-बीबीएस।

श्रेणीः पार्सल्स, कैटलाग नं. एससी पार्सल्स-45-23, नीलामी शुरू तिथिः 29.11.2023, 11.00 बजे, नीलामी बंद तिथिः 29.11.2023, 12.40 बजे, कार्य विवरणः निम्न विविरतानुसार ट्रेन नं. व्दारा 08 एसएलआरजः 12721-एसएलआर-आर1-एचवायबी-एनजेडएम, 22718-एसएलआर-एफ2-एससी-आरजेटी, 12220-एसएलआर-एफ1-एससी-एलटीटी, 12285-एसएलआर-एफ1-एससी-एनजेडएम, 22731-एसएलआर-एफ1-एचवायबी-सीएसएमटी, 22737-एसएलआर-एफ1-एससी-एचएसआर, 12437-एसएलआर-एफ1-एससी-एनजेडएम, 22718-एसएलआर-एफ1-एससी-आरजेटी।

श्रेणीः पार्किंग, कैटलाग नं. एससी पार्किंग-19-23, नीलामी शुरू तिथिः 18.11.2023, 11.00 बजे, नीलामी बंद तिथिः 18.11.2023, 10.30 बजे, कार्य विवरणः -(सिकंदराबाद डिवीजन) के जनगांव स्थान पर टू व्हीलर्स एवं फोर व्हीलर्स के लिए पार्किंग लाट की व्यवस्था।

श्रेणीः पार्किंग, कैटलाग नं. एससी पार्किंग-20-23, नीलामी शुरू तिथिः 22.11.2023, 10.00 बजे, नीलामी बंद तिथिः 22.11.2023, 11.20 बजे, कार्य विवरणः 1. -(सिकंदराबाद डिवीजन) के बेगमपेट स्थान पर टू व्हीलर्स एवं फोर व्हीलर्स के लिए पार्किंग लाट की व्यवस्था। 2. -(सिकंदराबाद डिवीजन) के लकडी का पूल पीएफ 02 साइड स्थान पर टू व्हीलर्स एवं फोर व्हीलर्स के लिए पार्किंग लाट की व्यवस्था। 3.सिकंदराबाद डिवीजन) के नेचर क्यूर हास्पीटल स्थान पर टू व्हीलर्स एवं फोर व्हीलर्स के लिए पार्किंग लाट की व्यवस्था। 4. सिकंदराबाद डिवीजन) के यादाद्रि स्थान पर टू व्हीलर्स एवं थ्री व्हीलर्स तथा फोर व्हीलर्स के लिए पार्किंग लाट की व्यवस्था। 5. सिकंदराबाद डिवीजन) के बोरबंडा स्थान पर टू व्हीलर्स तथा फोर व्हीलर्स के लिए पार्किंग लाट की व्यवस्था। 6. सिकंदराबाद डिवीजन) के हायटेक सिटी पर टू व्हीलर्स तथा फोर व्हीलर्स के लिए पार्किंग लाट की व्यवस्था।

श्रेणीः विज्ञापन, कैटलाग नं.-एससी-एडीवीटी-2023-11, नीलामी शुरू तिथिः 18-11-2023, 11.00 बजे, नीलामी बंद तिथिः 18.11.2023, 12.00 बजे, कार्य विवरणः 1. निम्न में से दो बोलियां आमंत्रित हैं, जिनमें बिदर पर होम एडवर्टाइजिंग कान्ट्राक्ट्स 2. बीएमटी एवं एमएमटीएस स्टेशनों सहित एमएमटीएस क्लस्टर पर स्टेटिक एडवर्टाइजमेंट की व्यवस्था 3. करीब 30 ट्रेनों में रेलों के भीतर मिर्रर्स पर एडवर्टाईजमेंट की व्यवस्था।

श्रेणीः क्लोक रूम,कैटलाग नं.- एससी-पीएनयु-23-11, नीलामी शुरू तिथिः 30.11.2023, 12.00 बजे, नीलामी बंद तिथिः 30.11.2023, 12.30 बजे, कार्य विवरणः सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन प्लाटफाम नं.10 पर क्लोक रूम का संचालन एवं रखरखाव कार्य।

श्रेणीः इवी चार्जिंग, कैटलाग नं. एससी-इवी-2311-0%, नीलामी शुरू तिथिः 24.11.2023, 11.00 बजे, नीलामी बंद तिथिः 24.11.2023, 11.30 बजे, कार्य विवरणः हायटेक सिटी रेलवे स्टेशन पर इंस्टाल्लेशन का ठेका तथा इवी चार्जिंग/बैटरी स्वैपिंग का रखरखाव कार्य।

श्रेणीः कैटरिंग या खानपान, कैटलाग नं. एससी-कैटरिंग-020, नीलामी शुरू तिथिः 20.11.2023, 12.00 बजे, नीलामी बंद तिथिः 20.11.2023, 13.40 बजे, कार्य विवरणः मंदमर्री, जम्मीकुंटां, आलेर, घटकेसर, पेध्दापल्ली, खम्मम, घटकेसर, भोंगिर रेलवे स्टेशनों पर कैटरिंग स्टाल्स की प्रदान करने के लिए, ई-नीलामी कार्य।

इच्छुक पार्टीज एवं ठेकेदारगण तत्संबंधित का अवलोकन कर, ई-नीलामी सूचना के विस्तृत विवरण हेतु उपरोक्त वेबसाइट देखें। इससे जुडी पूछताछ/स्पष्टीकरणों हेतु, कृपया अधोहस्ताक्षरी कार्यालय पर संपर्क करें।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्यिक प्रबंधक, सिकंदराबाद

A1736

स्वतंत्र वार्ता

शुक्रवार, 17 नवंबर - 2023

यात्रियों की जान जोखिम में

बुधवार दुर्घटनाओं का दिन रहा। जहां दो ट्रेनों में हादसा हुआ तो वहीं दो बसें भी जानलेवा साबित हुई। पहली घटना जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले में हुए बस हादसे की। किश्तवाड़ से जम्मू की ओर जा रही एक बस अनियंत्रित होकर करीब तीन सौ फुट गहरी खाई में जा गिरी। इस हादसे में कम से कम छत्तीस लोगों की मौत हो गई और उन्नीस बुरी तरह घायल हो गए। यह पिछले कुछ समय में हुए बड़े हादसों में से एक है। यह हादसा जाहिर करता है कि तमाम संसाधनों और विकासात्मक गतिविधियों के दावे के बावजूद सड़क सुरक्षा को लेकर अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। इसी तरह हरियाणा के फतेहाबाद में एक निजी बस उस समय जलने लगी जब उसमें साठ लोग सवार हो कर छठ पर्व मनाने के लिए बिहार जा रहे थे। गनीमत रही कि कोई जनहानि नहीं हुई लेकिन व्यापक स्तर पर लोग अपना सामान नहीं निकाल सके और सबकुछ जलकर स्वाहा हो गया। अब बात कर लेते हैं ट्रेन दुर्घटनाओं की। बुधवार को ही भागलपुर से जयनगर जा रही इंटरसिटी एक्सप्रेस में ब्लास्ट हो गया। इससे मां और बेटे गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना समस्तीपुर स्टेशन के आउटर सिगनल के पास घटी। दोनों घायलों को दरभंगा के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। आशंका जताई जा रही है कि कोई यात्री अपने सामान के साथ पटाखा लेकर जा रहा होगा, जो ब्लास्ट हो गया। शाम होते-होते यूपी के इटावा से खबर आने लगी कि नई दिल्ली से दरभंगा जा रही एक्सप्रेस ट्रेन की बोगी एस-1 में आग लग गई। छठ पूजा स्पेशन ट्रेन होने की वजह से बोगी में बेहिसाब यात्री थे लेकिन समय रहते सबको बचा लिया गया, लेकिन लोगों का सारा सामान आग के हवाले हो गया। भला हो सराय भूपति स्टेशन मास्टर का जिसने समय रहते बोगी से धुआं निकलते देख कर ट्रेन रुकवाया, अन्यथा बडा हादसा होते देर नहीं लगती। ऐसे में सवाल उठता है कि बार-बार होने वाले ऐसी घटनाओं के बावजूद न तो सरकार की ओर से सुरक्षा इंतजामों को लेकर कोई जरूरी गंभीरता दिखाई जाती है, न ही वाहन चालकों को यह ध्यान रखने की जरूरत लगती है कि उनकी मामूली लापरवाही का अंजाम क्या हो सकता है। डोडा में हुए हादसे को लेकर खुलासा हुआ है किसड़क पर तीन बसें एक साथ चल रही थीं। आगे निकलने की होड़ में एक बस अनियंत्रित होकर खाई में जा गिरी। पहाड़ों की ऊंचाई में बनी सड़कों पर चलने के बावजूद चालक को इतनी भी क्या जल्दी पडी थी कि उसने यह भी नहीं सोचा कि उसकी मामूली जल्दबाजी का हश्र क्या हो सकता है। ऐसे इलाके में वाहन चालक को इस तरह की आपराधिक लापरवाही बरतने से रोकने के लिए प्रशासन की ओर से कोई इंतजाम क्यों नहीं है? इसके लिए वाहन चालकों के प्रति जिस हद तक सख्त नियम लागू करने पड़ें, किए जाने चाहिए। लेकिन किसी अन्य वजह से भी अगर कोई बस अनियंत्रित हो जाती है तो सड़क किनारे ऐसे मजबूत सुरक्षा घेरे क्यों नहीं होने चाहिए, जो हादसे को रोकने में मददगार साबित हों? यह कोई छिपा तथ्य नहीं है कि पहाड़ी राज्यों में आए दिन सड़क हादसे होते रहते हैं और ऐसी हर घटना के बाद पीड़ितों के लिए मुआवजे की घोषणा होती है। किसी भी हादसे का सबक यह होना चाहिए कि नियमों को जमीनी स्तर पर सख्ती से लागू किया जाए, ताकि भविष्य में वैसा फिर न हो। लेकिन आए दिन होने वाले हादसे हर स्तर पर बरती जाने वाली उदासीनता को ही दर्शाते हैं। निर्धारित गति से ज्यादा तेज रफ्तार से वाहन चलाने या आगे निकलने की होड़ लगाने से रोकने के लिए सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। पर्वतीय क्षेत्र की हर सड़क के किनारे क्रैश बैरिअर, पैराफिट लगाने सहित अन्य सभी सुरक्षा इंतजाम किए जाएं। पर्वतीय मार्गों पर कई जगहों पर अचानक आने वाले ऐसे मोड़ होते हैं, जहां अतिरिक्त सावधानी नहीं बरती गई तो उसका नतीजा भयावह हो सकता है। ऐसे अप्रत्याशित हादसों को रोकने के लिए जोखिम वाली हर सड़क के किनारे क्रैश बैरिअर लगाए जाने की बातें आज भी आधी-अधूरी हैं। सड़क सुरक्षा के तहत पैराफिट लगाना, साइन बोर्ड के जरिए गति नियंत्रण से लेकर हर तरह की चेतावनी देना जैसे काम भी सुनिश्चित कर दिए जाएं, ताकि हादसों की आशंका पर ब्रेक लगाया जा सके।

सनातन वैदिक संस्कृति और साहित्य

संजीव ठाकुर

साहित्य सत्य की साधना शिवत्व की कामना और सौंदर्य की अभिव्यंजना है। शुद्ध, जीवंत एवं उत्कृष्ट साहित्य मानव एवं समाज की संवेदना और उसकी सहज वृत्तियों को युगों युगों तक जनमानस मैं संचारित करता आ रहा है और यही कारण है कि कालिदास, सूरदास, कबीर, प्रेमचंद, शेक्सपियर की कृतियाँ आज भी लोगों के मध्य अपनी रस सुधा से हृदय को भिगोती रहती है। राजनैतिक और भौगोलिक दृष्टि से विश्व कितने ही भागों में बट जाए, मतभेद और विवादों की खाई कितनी भी गहरी हो जाए, पर साहित्य धरातल पर सब सामान्य और एक हैं। दुनिया में मानव एक है। उनकी रचनाएं सभी जगह एक और समान है। यह भी सत्य है कि किसी भी देश की भाषा और साहित्य के अध्ययन के आधार पर वहां की सभ्यता संस्कृति के विकास का सहज विधि का अनुमान लगाया जा सकता है। साहित्य में मानवीय समाज के सुख-दुख, आशा निराशा, उत्थान पतन का स्पष्ट चित्रण होता है। साहित्य की इन्हीं विशेषताओं के कारण साहित्य कालजई और सास्वत होता है। मुंशी प्रेमचंद जी ने साहित्य को जीवन की आलोचना भी कहा है। साहित्य एक स्वायत्त आत्मा है, और उसकी सृष्टि करने वाला भी ठीक से नहीं घोषणा कर सकता है कि उसके द्वारा रचे गये साहित्य की अनुगूंज कब और कहां तक जाएगी। इस तरह साहित्य का सत्य समाज की नैतिक चिंता है। समाज की विसंगतियों को दूर करने वाला एक बड़ा रक्षक भी है। प्राचीन मनीषियों द्वारा लिखा गया साहित्य अत्यंत आकर्षक एवं प्रिय इसलिए भी लगता है कि मनुष्यता का एक संपूर्ण चरित्र चित्रण होता है। साहित्य और संस्कृति एक दूसरे से गहरे जुड़े हुए हैं। मानवी जीवन की तरह साहित्य मैं भी संघर्ष और निरंतरता की निरंतरता समाहित होती है। समय और परिस्थिति की संस्कृति का प्रभाव साहित्य पर निरंतर परिलक्षित होता रहता है। यह साहित्य ही है जो वर्तमान को सामने रख भविष्य की रूपरेखा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज की सुषुप्त विवेक शक्ति को जागृत कर समाज का दिशा दर्शन भी करता है। अपने समय की विसंगतियों को दूर करने के साथ ही गुणात्मक साहित्य सदैव प्रासंगिक बना रहता है। समाज और जनमानस को आलोक स्तंभ की तरह पल्लवित एवं प्रकाशित करता है। वर्तमान के भौतिक समय में जब मानवता और संवेदना की पीड़ा की गूंज सभी जगह फैली हुई है, ऐसे में सत साहिब से और अर्वाचीन संस्कृति दिशा दर्शन और माननीय संवेदनाओं को संबल देने में अत्यंत प्रासंगिक भी है। यह कतई कहने की आवश्यकता नहीं है कि श्रेष्ठ साहित्य वही है जो मनुष्य के भीतर और बाहर प्रासंगिक मूल्यों,संदेश और उद्देश्यों को समाए रखता है। कबीर दास रविंद्र नाथ टैगोर, शरद चंद, जयशंकर प्रसाद, रेणु, प्रेमचंद, शेक्सपियर, होमर, मिल्टन आदि का साहित्य जनमानस के मन में और जीवन में रच बस गया है।

इन्होंने प्रतिभा सापेक्ष श्रेष्ठ रचनाएं समाज को दी हैं। और यही कारण है इनकी रचनाओं से संस्कृति की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

लोकतंत्र में एक वोट की भी कीमत

अशोक भाटिया

चुनावी लोकतंत्र में हरवोट का बहुत महत्व होता है । वोट सिर्फ उम्मीदवारों की जीत नहीं तय करते बल्कि लोकतंत्र का भविष्य भी तय करते हैं। इसलिए एक वोट में काफी वजन होता है। हालांकि, हाल के दिनों में वोट के अधिकार को लेकर काफी बहस चली है। वोट को एक महत्वपूर्ण संपत्ति मानते हुए इसे हासिल करने के लिए कुछ उम्मीदवार मतदाताओं को धमकाने से भी नहीं बाज नहीं आते । यहां मतदाता नहीं बल्कि उम्मीदवार एक वोट का वजन या महत्व तय कर रहे हैं। यौन कर्मियों, आदिवासियों और अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों का यह अनुभव है कि उम्मीदवार उनके पास वोट मांगने नहीं आते। उम्मीदवारों को लगता है कि ऐसा करने से जो फायदा होगा, उससे अधिक नैतिक लाभ इन लोगों के पास नहीं जाने से होगा। मतदाताओं को वोट देने का खोखला अधिकार तो है लेकिन यह अधिकार नहीं है कि उनके पास उम्मीदवार आएं। ऐसे में उन्हें लगता है कि उनके वोट का कोई मतलब ही नहीं है।आज 17 नवंबर 2023 को मध्यप्रदेश में लोकतंत्र का महापर्व मनाया जा रहा है । प्रदेश के लोग अपने मताधिकार का इस्तेमाल करेंगे। देश का चुनाव आयोग भी हरसंभव प्रयास करता है कि हम सब वोट डालने के अधिकार का प्रयोग करें और देश में प्रजातंत्र की जड़ें और मजबूत करें। सर्वविदित है कि भारत में चुनावों का आयोजन भारतीय संविधान के तहत भारतीय निर्वाचन आयोग द्वारा किया जाता है। यह एक अच्छी तरह स्थापित परंपरा है कि एक बार चुनाव प्रक्रिया शुरू होने के बाद कोई भी अदालत चुनाव आयोग द्वारा परिणाम घोषित किए जाने तक किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं कर सकती । इसके बावजूद अनेक मतदाता अपने वोट डालने के अधिकार का प्रयोग नहीं करते हैं। वोट डालने का मकसद देश में आजादी के महत्त्व को सार्थक बनाना है। वोट सिर्फ उम्मीदवारों की जीत नहीं तय करते बल्कि लोकतंत्र का भविष्य भी तय करते हैं। एक वोट में काफी वजन होता है। यह ठीक है कि वोट के अधिकार को लेकर काफी बहस चलती रहती है। वोट को एक महत्त्वपूर्ण संपत्ति मानते हुए इसे हासिल करने के लिए कुछ उम्मीदवार मतदाताओं को धमकाने से भी नहीं बाज आते लेकिन सभी को एक वोट का अधिकार देकर लैंगिक, धार्मिक और अन्य भेदभावों के बावजूद बराबरी का संदेश दिया जाता है। इस नैतिक दृष्टि से वोट देने का अधिकार सार्वभौमिक हो जाता है। वोट डालना क्यों जरूरी है, आइए जानें हम समझें कि अगर आप अपने हितों के लिए वोट नहीं करेंगे तो कौन करेगा? चुनाव और सरकार लोगों की, लोगों द्वारा और लोगों के लिए होते हैं। लोगों को सिर्फ दर्शक बने रहने और शिकायत करने के बजाय लोकतंत्र की सफलता के लिए इसमें भाग लेना चाहिए। युवाओं के लिए मतदान उनका संवैधानिक अधिकार है। उनके द्वारा चुनी गई सरकार उनके भविष्य के लिए किए गए निर्णयों को प्रभावित करेगी जो चुनावी प्रक्रिया में भाग लेने के लिए एक अच्छा और पर्याप्त कारण है। दुनिया में अभी भी कुछ ऐसे देश हैं जहां लोग अपनी सरकार चुनने में सक्षम नहीं हैं क्योंकि उन्हें वोट देने का अधिकार नहीं है। मतदान एक अधिकार और विशेषाधिकार है जिसे पाने के लिए हमारे पूर्वजों ने आजादी की लड़ाई लड़ी है। हमें इसकी सराहना करनी चाहिए और स्वेच्छा से हर मौके पर इसे करना चाहिए। भारत जैसा युवा देश जिसकी 65 प्रतिशत से अधिक आबादी 35 वर्ष से कम है, उस देश के युवाओं की जिम्मेदारी बनती है कि वे अशिक्षित लोगों को वोट का महत्व बताकर उनको वोट देने के लिए बाध्य करें लेकिन यह विडंबना है कि हमारे देश में वोट देने के दिन लोगों को जरूरी काम याद आने लग जाते हैं। कई लोग तो वोट देने के दिन अवकाश का फायदा उठाकर परिवार के साथ पिकनिक मनाने चले जाते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो घर पर होने के बावजूद अपना वोट देने के लिए वोटिंग बूथ तक जाने में आलस करते हैं। इस तरह गैर-जागरूक, उदासीन व आलसी मतदाताओं के भरोसे हमारे देश के चुनावों में कैसे सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सकेगी। साथ ही एक तबका ऐसा भी है जो प्रत्याशी के गुण न देखकर धर्म, मजहब व जाति देखकर अपने वोट का प्रयोग करता है। यह कहते हुए बड़ी ग्लानि होती है कि वोटिंग के दिन लोग अपना वोट संकीर्ण स्वार्थ के चक्कर में बेच देते हैं। यही सब कारण है कि हमारे देश के चुनावों में से चुनकर आने वाले अधिकतर लोग दागी और अपराधी किस्म के होते हैं। याद रहे कि पांच वर्ष बाद हमारा लोकतंत्र हमें अपनी तकदीर लिखने का मौका देता है जिसका उपयोग जरूर होना चाहिए। इस दौरान मतदान से पहले तथाकथित लोगों द्वारा मिलने वाले प्रलोभन से परहेज करना चाहिए। हम सभी को अपने मतों का प्रयोग करके चुनाव को शत-प्रतिशत मतदान तक ले जाने का प्रयास करना चाहिए। जिस पार्टी का जो नेता आप चाहते हैं, उसे आप वोट डालिए। वे सभी नेता देश के नागरिक हैं और चुनाव आयोग से मान्यता प्राप्त हैं। इसलिए उस क्षण तक वे जनता के प्रतिनिधि हैं। उन पर किसी प्रकार का आरोप या प्रत्यारोप नहीं लगा सकते। आपका कीमती वोट किसी भी नेता का मूल्यांकन कर सकता है। जो आप चुनेंगे वो जीत कर आएगा और यदि शत-प्रतिशत वोटिंग की जाती है तो उस जीते हुए प्रतिनिधि की सोच बदल सकती है और वह हर क्षेत्र के हर व्यक्ति के लिए काम कर सकता है, जैसे कि बिजली, पानी, सुरक्षा, शिक्षा, पेंशन, बाग-बगीचे, सडक़ें आदि-आदि। देश का नागरिक मतदान करके अपने कर्तव्य को निभाता है। देश के नागरिक का धर्म है कि वह मतदान में हिस्सा ले और किसी ईमानदार प्रतिनिधि को चुने जो देश का विकास कर सके। यह हम देशवासियों के हाथ में होता है कि हम किस तरह की सरकार चाहते हैं। आइए सोचें कि हम लोग अपनी बेटी का किसी से विवाह करने से पहले पूरी तहकीकात करते हैं लेकिन इसके विपरीत वोट ऐसे ही किसी को भी उठाकर दे देते हैं। वोट भी तो बेटी ही है न। हम तब तक अच्छी व्यवस्था खड़ी नहीं कर पाएंगे जब तक हम वोट का महत्व और अपने मतदाता होने के फर्ज को पूरी जिम्मेदारी के साथ निभा नहीं देते हैं। चुनाव प्रक्रिया को त्रुटिपूर्ण समझकर चुनाव के दिन घर में ही रहने का प्रयास न करें अपितु परिवार के साथ घर के बाहर निकलकर वोट जरूर डालें और देश में लोकतंत्र की प्रक्रिया को सफल बनाएं। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है, जब महज एक वोट की हार से तख्तापलट हो चुका है । सन 1999 में एआईएडीएमके के समर्थन वापस लेने के बाद वाजपेयी सरकार को विश्वास प्रस्ताव रखना पड़ा। विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में 269 और विरोध में 270 वोट पड़े और सरकार एक वोट के अंतर से गिर गई थी । 2008 में राजस्थान विधानसभा के चुनाव में सीपी जोशी को 62,215 व कल्याण सिंह को 62,216 वोट मिले। तब जोशी सीएम के दावेदार थे। खास ये कि उनकी मां, पत्नी व ड्राइवर ने वोट नहीं डाला था। और तो और, हार के कारण कांग्रेस नेता सीपी जोशी सीएम नहीं बन पाए थे । 2004 में कर्नाटक विधानसभा चुनाव में जेडीएस के एआर कृष्णमूर्ति को 40,751 मत मिले और कांग्रेस के आर ध्रुवनारायण के 40,752 । छुट्टी न देने के कारण उनका ड्राइवर वोट नहीं डाल पाया था और एआर कृष्णमूर्ति विधायक बनने से चूक गए थे ।

1875 : फ्रांस में तो सत्ता का पूरा रूप ही बदल गया था। एक वोट की जीत से ही फ्रांस में राजशाही खत्म हुई और लोकतंत्र का आगाज हुआ वरना वहां के लोग अब तक राजशाही ही ढो रहे होते।1776 में अमेरिका को एक वोट की बदौलत ही जर्मन की जगह अंग्रेजी के रूप में उनकी मातृभाषा मिली थी। यहां 1910 में रिपब्लिक उम्मीदवार एक वोट से हार गया था और पार्टी मानो शोक में डूब गई थी।1923 में जर्मनी के लोगों से पूछिए एक वोट की ताकत क्या होती है, क्योंकि साल 1923 में एडोल्फ हिटलर एक वोट के अंतर की जीत से ही नाजी दल का मुखिया बना था।1876 में 19वें अमेरिकी राष्ट्रपति पद के लिए हुए चुनाव में रदरफोर्ड बी हायेस ने 185 वोट हासिल किए थे और सैमुअल टिलडेन ने 184 । यह तो चंद उदाहरण है . थोड़े वोटो से कई उम्मीदवारों की हार जीत होते हुए हमने देखा है ।

पुरुष संवेदनशीलता के बिना महिला सशक्तिकरण अधूरा

प्रियंका सौरभ

मान लीजिए कि किसी पिछली सदी का कोई व्यक्ति आज हमारे समय में आता है। जब वे महिलाओं को विमान, कार, बस आदि चलाते हुए देखेंगे तो उन्हें कैसा झटका लगेगा। उनकी भ्रम की स्थिति की कल्पना करें जब उन्हें पता चलता है कि भारत में एक तिहाई गांवों का नेतृत्व महिला सरपंचों द्वारा किया जाता है, जबकि पुरुष घर पर बूढ़े माता-पिता या अन्य घरेलू कामों की देखभाल कर सकते हैं। आज हमारे लिए यह सब रोजमर्रा की बात लग सकती है, लेकिन किसी ऐसे व्यक्ति के लिए जिसके पास लिंग-आधारित बहुत कठोर और सख्त विचार हैं, लिंग-आधारित मानदंडों में रहते हैं और विश्वास करते हैं और समाज को पितृसत्ता के चश्मे से देखते हैं, महिलाओं को अपनी शादियों में दखल देने और अन्य लिंगों के प्रति बढ़ती स्वीकार्यता से उनको अधिक झटका लगेगा।

लैंगिक भूमिकाएँ और अपेक्षाएँ सदियों से समाज में व्याप्त हैं। लड़कियों से आज्ञाकारी, विनम्र और पोषण करने वाली होने की उम्मीद की जाती है, जबकि लड़कों से मजबूत, दृढ़ और प्रतिस्पर्धी होने की उम्मीद की जाती है। ये अपेक्षाएं अक्सर प्रतिबंधों और मांगों के साथ आती हैं जो दोनों लिंगों के लिए समान रूप से हानिकारक हो सकती हैं। समस्या केवल यह नहीं है कि पितृसत्ता और लिंग-आधारित अलगाव आज भी बहुत प्रचलित है, बल्कि मुद्दा यह भी है कि यह जानने के बावजूद यह लगातार फल-फूल रहा है। यदि यह एक महिला को अनुचित और अतार्किक प्रतिबंधों से विकलांग बनाता है, तो यह पुरुष को अत्यधिक और अप्राकृतिक अपेक्षाओं से विकलांग बनाता है।

आज भी लड़कियों को परिवार में आर्थिक और सामाजिक बोझ के रूप में देखा जाता है। एक कारण के रूप में, एक युवा लड़की के सपनों को अक्सर छोटा कर दिया जाता है, और उसे कम उम्र में ही दूसरे परिवार पर बोझ के रूप में निपटा दिया जाता है। यह सिर्फ विकासशील या गरीब देशों की घटना नहीं है, बल्कि अच्छे मानव सूचकांक वाले विकसित देशों में भी बाल विवाह में वृद्धि देखी जा रही है। जब एक युवा लड़की, जिसके पास बच्चों को जन्म देने और घरेलू काम करने के अलावा जीवन में कोई संभावना नहीं होती, की शादी एक परिवार में कर दी जाती है, तो वहां भी उसे बोझ के रूप में या सबसे खराब स्थिति में पति की संपत्ति के रूप में देखा जाता है। ऐसे मामलों में, जिन महिलाओं के पास किसी भी आर्थिक एजेंसी का अभाव होता है। वे घरेलू हिंसा, दुर्व्यवहार, वैवाहिक बलात्कार, मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों आदि का शिकार बन जाती हैं। महिलाओं की भूमिका को व्यवस्थित रूप से घर की चार दीवारों तक सीमित कर दिया गया है और समाज में उनकी जो भी भूमिका हो सकती थी, उसे विनम्रता के नाम पर छीन लिया गया है। महिलाओं की शिक्षा रोक दी गई है और उन्हें अच्छे धार्मिक प्रथाओं के नाम पर दासता का जीवन जीने के लिए मजबूर किया जाता है। पितृसत्ता का सार हमारे दिमाग में इस तरह अंतर्निहित हो गया है कि हमें अक्सर इसका एहसास भी नहीं होता है कि हम इसे कब और कैसे व्यवहार में लाते हैं।

प्रतिबंधों का लड़कियों के आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है। जब लड़कियों को लगातार बताया जाता है कि वे क्या नहीं कर सकती हैं या उन्हें क्या नहीं करना चाहिए, तो वे यह मानने लगती हैं कि वे अपने लक्ष्य हासिल करने में सक्षम नहीं हैं। इससे महत्वाकांक्षा की कमी और जोखिम लेने का डर पैदा हो सकता है। वह एक अलग कैरियर मार्ग चुन सकती है जिसके बारे में वह भावुक नहीं है। इसके अलावा, लड़कियों पर लगाए गए प्रतिबंध उनके मानसिक स्वास्थ्य पर भी असर डाल सकते हैं। वे अपने ऊपर लगाई गई अपेक्षाओं के कारण फंसा हुआ और घुटन महसूस कर सकते हैं, जिससे चिंता और अवसाद हो सकता है। उदाहरण के लिए, जिस लड़की को लगातार विनम्र रहने और ध्यान आकर्षित करने से बचने के लिए कहा जाता है, वह अपने शरीर को लेकर शर्म महसूस कर सकती है और शारीरिक छवि के मुद्दों से जूझ सकती है। पुरुषों में 29.3% की तुलना में महिलाओं में न्यूरोसाइकियाट्रिक विकारों से होने वाली विकलांगता में अवसादग्रस्त विकारों का योगदान 41.9% के करीब है। ज्यादातर महिलाएं अकेले यात्रा करने या रात में बाहर जाने को लेकर संशय में होंगी। भले ही यह उन्हें निर्भया को हुए नुकसान से नहीं बचाएगा, फिर भी, उन्हें किसी ज्ञात व्यक्ति की संगति में सुरक्षा की मनोवैज्ञानिक भावना मिलेगी। लेकिन यह कहना कि केवल महिलाएं ही इस मानसिकता की शिकार हैं, आधा सच होगा। हाल के दिनों में, पुरुषों पर पितृसत्ता के प्रभाव के संबंध में अधिक जागरूकता उत्पन्न हुई है, विशेष रूप से अनुचित मांग को देखते हुए जिसे उन्हें पूरा करना होता है। प्राचीन काल से, हमारी अधिकांश कहानियाँ एक मजबूत और गुणी व्यक्ति के इर्द-गिर्द केंद्रित हैं, जो दुनिया पर शासन करने के योग्य है और उसे बिना आंसू बहाए इसके लिए लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। ऐसी कहानियों ने मनुष्य पर मर्दानगी के बहुत ऊँचे, फिर भी बहुत जहरीले मानक स्थापित कर दिए हैं।

बहुत छोटी उम्र से, ये अप्राकृतिक अपेक्षाएं और नायक परिसर एक प्रभावशाली बच्चे के मनोविज्ञान को आकार देना शुरू कर देते हैं, वे जिस भी क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, उसमें उन्हें अग्रणी बनना होता है। उन्हें केवल मर्दाना भावनाओं, शक्ति, क्रोध, जुनून को महसूस करने की अनुमति है और प्यार, करुणा, पोषण आदि जैसी स्त्री भावनाओं को जगह नहीं देनी चाहिए। इससे उनके दिमाग में संज्ञानात्मक असंगति और संघर्ष पैदा होता है क्योंकि जो कुछ भी होता है उसमें बेमेल प्रतीत होता है। वे महसूस करते हैं और समाज उनसे क्या महसूस करने की अपेक्षा करता है। उन पर जो दबाव डाला जाता है वह आम तौर पर उनके भावनात्मक विकास और संज्ञानात्मक कल्याण को रोक देता है। अंत में अच्छे लोगों को अवसाद, चिंता आदि जैसे मुद्दों का सामना करना पड़ता है और कमजोर नैतिक क्षमता वाले लोग सामूहिक बलात्कार, घरेलू हिंसा, हत्या आदि जैसे अपराध करते हैं।

पकौड़े तलने से बड़ा कोई धंधा नहीं

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

हर जगह फोकट की रबड़ियाँ बट रही हैं और आप अभी भी ईमानदारी की पिपुड़ी बजा रहे हैं। आप नेता हैं कि पैजामा। यहाँ झूठ बोलना पड़ता है। जनता को विकास का विएफएक्स दिखाकर झोली में उतारना पड़ता है। बड़े चले ईमानदार बनने। आप तो डूबेंगे ही डूबेंगे बतौर कार्यकर्ता हमें भी ले डूबेंगे सनम!! कार्यकर्ता का अंदाज ऐसा था कि उसने मानो ईमानदार नेता जी को रंगे हाथों पकड़ लिया। मनमोहक हंसी के अतिरिक्त नेता जी हँसकर कर ही क्या सकते थे? कार्यकर्ता ने आगे कहा- "ईमानदारी की पिपुड़ी बजाने का मतलब यह नहीं कि शराफत दिखाने लगो। यहाँ छल, कपट, धूर्तता, पाप सब करने और दिखाने पड़ते हैं। आप भगवद गीता के दर्शन की तरह खाली हाथ वाले फार्मुले का अनुसरण मत कीजिए। यह जनता है जनता। सब जानती है। यह न कभी खाली हाथ थी, न है और न रहेगी। यह कल प्रचार करने के लिए जो पार्टी आयी थी उससे लिया, आज जो दूसरी पार्टियाँ आ रही हैं उससे ले रही हैं और कल जो पार्टियाँ आयेंगी उनसे भी लेंगी। वे लेने, बटोरने और किसे वोट देना है उस मामले में बड़े क्लियर हैं। जो क्लियर नहीं हैं वह हम और मीडिया हैं। हमेशा से चूना हमें ही लगता है। आगे देखो, पीछे देखो. ऊपर देखो, नीचे देखो, दाएँ देखो, बाएँ देखो और धोखा वहीं से खाओ जहाँ बार-बार देखकर खुद को बड़ा निश्चिंत पाओ। यहाँ दिखने से ज्यादा नहीं दिखने वाली चीज़ों पर बड़ा ध्यान देना पड़ता है।

यही नीति है, यही मंत्र है, इसी में छिपा है जीतने का रहस्य। इससे पहले कि जनता हमें धोखा दे उससे पहले हमें उसे धोखा देना आना चाहिए। यहाँ मेहनत से नहीं धोखे से जीता जाता है। इस कला के प्रति प्रेम का अर्थ है सफलता की सच्ची गारंटी।"0नेता जी कार्यकर्ता के प्रेरक वचनों से इतने प्रेरित हो गए कि उन्हें एक उपाय सूझा। उन्होंने कहा "हम एक नई व्यवस्था कर सकते हैं। लोगों को जितनी रबड़ी बाँटनी होगी बाँट देंगे। उन्हें वोट देने के झंझट से सदा के लिए मुक्ति दे दी जाएगी। उन्हें यह जानकर खुशी होगी कि नये लोकतंत्र में कोई चुनाव नहीं होगा। तब विरोध की क्या जरूरत? बेकार की भागमदौड़। सिर्फ रबड़ी बाँट तमाशा देख वाली रणनीति शानदार रहेगी। अगर जरूरत पड़ी तो हम संसद की शोभा बढ़ाने के लिए चुनाव की संभावनाओं पर बिजूका भी भेज सकते हैं।

और इन्हें चीन से मंगाने की आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी। हमारे यहाँ जीभ रखने वाले पैदा ही कहाँ होते हैं। सब के सब बिजूके पैदा होते हैं। वाद-विवाद की जगह भजन-कीर्तन होगा और देश में बिजूका ऊर्जा का संचार होगा। यदि हर कोई बिजूका बनेगा तो उनके यहाँ ईडी, सीआईडी भेजने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। मैंने देखा है कि जनता चुनाव को लेकर तनावग्रस्त रहती है। उसे भी इस तनाव से मुक्त हो जाएगी कि किसे वोट दें और किसे नहीं। देश मजबूत हाथों में है, यह बात मीडियाई बिजुकाओं के माध्यम से सभी में प्रसारित करवा दिया जाएगा। तब हमारा कोई प्रिय या अप्रिय नहीं होगा।

देश में पुलिस सुधार लागू हो

रजनीश कपूर

जब भी हमें पुलिस थाने या किसी पुलिस अधिकारी के संपर्क में आना पड़ता है तो मन में एक तनाव सा पैदा हो जाता है। इसका कारण है पुलिस के व्यवहार को लेकर हमारी सोच। ज़्यादातर देखा यह देखा गया है कि भारत में पुलिसकर्मी जनता से सीधे मुँह बात नहीं करते। इस कड़े रवैये के पीछे पुलिसकर्मियों का तनाव ही सबसे बड़ा कारण है। चाहे वो कोई उच्च अधिकारी हो या सड़क पर खड़ा एक आम सिपाही। तनाव में रहने वाले ये पुलिसकर्मी अक्सर अपने ग़ुस्से और बुरे बर्ताव को सीधी-सादी जनता पर निकालते हैं। इसी के चलते आम जनता के मन में इन्हें सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता। यदि हमारी सरकार पुलिस सुधारों को लेकर गंभीर हो जाए तो विदेशों की तरह हम भी पुलिस को एक मित्र के रूप में देखेंगे। पुलिस सुधारों को लेकर हर सरकार में उच्च स्तरीय बैठकें होती रहती हैं परंतु इन बैठकों में कभी कोई विशेष समाधान नहीं निकलते। क्या आपको पता है कि भारतीय पुलिस अधिनियम 1861 संविधान की मूल भावना के विरूद्ध है? भारत का संविधान, भारत की जनता को सर्वोच्च मानता है। उसको ही समर्पित है। भारतीय गणराज्य की समस्त संस्थाएं जनता की सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। किंतु भारतीय पुलिस अधिनियम 1861 में कहीं भी जनता शब्द का उल्लेख नहीं आता है। जाहिर है कि यह अधिनियम उस समय बनाया गया था जब भारत पर ब्रिटिश हुकूमत कायम थी। इस कानून का उद्देश्य ब्रिटिश हितों को साधना था। पुलिस का काम जनता पर नियंत्रण रखना था ताकि कानून और व्यवस्था इस तरह बनी रहे कि अंग्रेज हुक्मरानों को भारत का दोहन करने में कोई दिक्कत पेश न आए। दरअसल, 1897 के गदर के बाद जब इंग्लैंड की हुकूमत ने ईस्ट इंडिया कंपनी से हिन्दुस्तान की बागडोर ली तब उसे ऐसी ही पुलिस की जरूरत थी। इसलिए ऐसे कानून बनाए गए। पर आश्चर्य की बात है कि 1947 में जब भारत आजाद हुआ या 1950 में जब हमने अपना संविधान लागू किया तब क्यों नहीं इस भारतीय पुलिस अधिनियम 1861 में बुनियादी परिवर्तन किया गया? क्यों औपनिवेशिक मानसिकता वाले कानून को एक स्वतंत्र, सार्वभौमिक, लोकतांत्रिक जनता के ऊपर थोपा गया? जब कानून पुराना ही रहा तो भारतीय पुलिस से ये कैसे उम्मीद की जाती है कि वह सत्ताधीशों को छोड़कर जनता की सेवा करना अपना धर्म माने? 1977 में बनी जनता पार्टी की पहली सरकार ने एक राष्ट्रीय पुलिस आयोग का गठन किया जिसमें तमाम अनुभवी पुलिस अधिकारियों व अन्य लोगों को मनोनीत कर उनसे पुलिस व्यवस्था में वांछित सुधारों की रिपोर्ट तैयार करने को कहा गया। आयोग ने काफी मेहनत करके अपनी रिपोर्ट तैयार की पर बड़े दुख की बात है कि चार दशक बाद भी आज तक इस रिपोर्ट को लागू नहीं किया गया। 1998 में पुलिस सुधारों का अध्ययन करने के लिए महाराष्ट्र के पुलिस अधिकारी श्री जेएफ रिबैरो की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया जिसने मार्च 1999 तक अपनी अंतिम रिपोर्ट दे दी। पर इसकी सिफारिशें भी आज तक धूल खा रही हैं। इसके बाद के पदमनाभइया की अध्यक्षता में एक और समिति का गठन किया गया। जिसने सुधारों की एक लंबी फेहरिश्त केन्द्र सरकार को भेजी, पर रहे वही ढाक के तीन पात। यह बड़े दुख और चिंता की बात है कि कोई भी राजनैतिक दल पुलिस व्यवस्था के मौजूदा स्वरूप में बदलाव नहीं करना चाहता। इसलिए न सिर्फ इन आयोगों और समितियों की सिफारिशों की उपेक्षा कर दी जाती है बल्कि आजादी के 75 साल बाद भी आज देश औपनिवेशिक मानसिकता वाले संविधान विरोधी पुलिस कानून को ढो रहा है। इसलिए इस कानून में आमूलचूल परिवर्तन होना परम आवश्यक है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की पुलिस को जनोन्मुख होना ही पड़ेगा। पर क्या राजनेता ऐसा होने देंगे? आज हर सत्ताधीश राजनेता पुलिस को अपनी निजी जायदाद समझता है। नेताजी की सुरक्षा, उनके चारों ओर कमांडो फौज का घेरा, उनके पारिवारिक उत्सवों में मेहमानों की गाड़ियों का नियंत्रण, तो ऐसे वाहियात काम हैं जिनमें इस देश की ज्यादातर पुलिस का, ज्यादातर समय जाया होता है। पुलिस आयोग की सिफारिश से लेकर आज तक बनी समितियों की सिफारिशों को इस तरह समझा जा सकता है; पुलिस जनता के प्रति जवाबदेह हो। पुलिस की कार्यप्रणाली पर लगातार निगाह रखी जाए। उनके प्रशिक्षण और काम की दशा पर गंभीरता से ध्यान दिया जाए। उनका दुरूपयोग रोका जाए। उनका राजनीतिकरण रोका जाए। उन पर राजनीतिक नियंत्रणसमाप्त किया जाए। उनकी जवाबदेही निर्धारित करने के कड़े मापदंड हों। पुलिस महानिदेशकों का चुनाव केवल राजनैतिक निर्णयों से प्रभावित न हों बल्कि उसमें न्यायपालिका और समाज के प्रतिष्ठित लोगों का भी प्रतिनिधित्व हो। इस बात की आवश्यकता महसूस की गई कि पुलिस में तबादलों की व्यवस्था पारदर्शी हो। उसके कामकाज पर नजर रखने के लिए निष्पक्ष लोगों की अलग समितियां हों। पुलिस में भर्ती की प्रक्रिया में व्यापक सुधार किया जाए ताकि योग्य और अनुभवी लोग इसमें आ सकें।

छठ महापर्व की शुरुआत आज से खरना लेकर अर्घ्य देने की तिथि

छठ महापर्व की शुरुआत कार्तिक मास की षष्ठी तिथि से होती है। छठ महापर्व 4 दिनों तक चलता है। नहाय खाय से इस पर्व की शुरुआत होती है। यह व्रत बच्चों की दीर्घायु, सफलता और उनके स्वास्थ्य के लिए किया जाता है। आइए जानते हैं छठ महापर्व कब से शुरु होगा।

छठ महापर्व बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश की कई जगहों पर धूमधाम से मनाया जाता है। छठ पूजा का आरंभ कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि 17 नवंबर से हो रहा है। लोक आस्था का यह महापर्व छठ 4 दिनों तक चलता है। छठ के पहले दिन नहाय खाय से होती है। छठ पूजा के दौरान छठी मैय्या की पूजा अर्चना की जाती है। आइए जानते हैं छठ पूजा की तारीख और महत्व।

छठ पहला दिन 17 नवंबर 2023 नहाया खाया के शुरू नहाय खाय के साथ छठ महापर्व का आरंभ हो जाता है। इस बार 17 नवंबर यानी छठ के पहले दिन नहाय खाय से होगी। इस दिन व्रत रखने वाली महिला और पुरुष सिर्फ एक समय ही भोजन करते हैं। साथ ही भोजन ग्रहण करने से पहले सूर्य भगवान को भोग लगाया जाता है। इस दिन अपने घर के पास किसी पवित्र नदी या कुंड में जाकर स्नान भी किया जाता है। स्नान करने से बाद साफ वस्त्र धारण करके ही भोजन ग्रहण करना होता है। इस दिन चने की दाल और लौकी की सब्जी बनाई जाती है। साथ ही पहले दिन व्रत रखने वाले पहले खाना खाते हैं इसके बाद ही परिवार के बाकी लोग भोजन ग्रहण करते हैं।

छठ महापर्व दूसरे दिन 18 नवंबर 2023 खरना

छठ महापर्व के दूसरे दिन खरना किया जाता है। खरना का मतलब है शुद्धिकरण। व्रती इस पूरे दिन उपवास रखती है। फिर शाम के समय मिट्टी के नए चूल्हे पर गुड़ की खीर प्रसाद के रूप में बनाई जाती है। इसी प्रसाद को व्रती ग्रहण करते हैं। फिर इस प्रसाद को बाकी लोगों में बांटा जाता है। इसके बाद से 36 घंटे का लंबा निर्जला उपवास शुरू होता है।

छठ तीसरा दिन 19 नवंबर 2023 संझिया घाट

छठ पूजा के तीसरे दिन यानी संझिया घाट को डूबते सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। इससे पहले व्रत रखने वाली महिलाएं सूर्य निकलने से पहले रात को मिश्री डाला पानी पीती हैं। उसके बाद शाम के समय सूर्यदेव को अर्घ्य दिया जाता है। सूर्य देव की उपासना के लिए इस दिन तरह तरह के पकवान ठेकुआ और मौसमी फल आदि अर्पित किए जाते हैं।

डूबते सूर्य को अर्घय देने का समय : 19 नवंबर को शाम में 5 बजकर 27 मिनट तक।

छठ तीसरा दिन 20 नवंबर 2023 उगते सूर्य को अर्घ्य (भौरखा घाट)

छठ पूजा के चौथे दिन यानी भौरखा घाट 20 नवंबर 2023 को उगते सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। सूर्य देव को अर्घ्य देते समय संतान और परिवार की सुख शांति बनाए रखने की कामना की जाती है। सूर्य को अर्घ्य देने के बाद प्रसाद ग्रहण कर व्रत का समापन किया जाता है।

उगते सूर्य को अर्घय देने का समय : 20 नवंबर को सुबह 6 बजकर 47 मिनट पर।

आज है विनायक चतुर्थी, इस शुभ मुहूर्त में करें भगवान गणेश की पूजा

कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी दोपहर 12 बजकर 34 मिनट से शुरू हो चुकी है और आज यानी 17 नवंबर को सुबह 11 बजकर 03 मिनट पर समाप्त होगी। इस दिन सूर्य देव अपनी राशि बदलने वाले हैं। सूर्य देव 17 नवंबर को तुला राशि से निकलकर वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे। अतः 17 नवंबर को वृश्चिक संक्रांति है।

सूर्य देव 17 नवंबर को तुला राशि से निकलकर वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे। विनायक चतुर्थी पर साधक व्रत रख भगवान गणेश की विधि-विधान से पूजा करते हैं।

सनातन धर्म में कार्तिक महीने का विशेष महत्व है। इस महीने में कई प्रमुख व्रत-त्योहार मनाये जाते हैं। इस माह में शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को विनायक चतुर्थी मनाई जाती है।

तदनुसार, आज विनायक चतुर्थी है। साधक व्रत रख भगवान गणेश की विधि-विधान से पूजा करते हैं। धार्मिक मत है कि भगवान गणेश की पूजा करने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। साथ ही सुख, समृद्धि, आय और आयु में वृद्धि होती है।अतः साधक श्रद्धा भाव से भगवान गणेश की पूजा करते हैं। आइए, पूजा का शुभ मुहूर्त, तिथि और पूजा विधि जानते हैं-

शुभ मुहूर्त

कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी 16 नवंबर को दोपहर 12 बजकर 34 मिनट से शुरू हो चुकी है और अगले दिन यानी 17 नवंबर को सुबह 11 बजकर 03 मिनट पर समाप्त होगी। इस दिन सूर्य देव अपनी राशि बदलने वाले हैं। सूर्य देव 17 नवंबर को तुला राशि से निकलकर वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे। अतः 17 नवंबर को वृश्चिक संक्रांति है।

पूजा विधि

विनायक चतुर्थी के दिन ब्रह्म बेला यानी सुबह सूर्योदय के समय उठें। अब गणेश जी को प्रणाम कर दिन की शुरुआत करें। घर की साफ-सफाई करें। साथ ही गंगाजल छिड़ककर घर को शुद्ध कर लें। रोज के कामों से निवृत होने के बाद गंगाजल युक्त पानी से स्नान करें। शास्त्रों में निहित है कि पूजा से पूर्व आचमन अनिवार्य है। अतः आचमन कर व्रत संकल्प लें। इसके पश्चात, पीले वस्त्र धारण कर विधि विधान से भगवान गणेश की पूजा करें।

इस समय पंचोपचार करें और भगवान गणेश को फल, फूल, धूप, दीप आदि अर्पित करें। पूजा के समय गणेश चालीसा का पाठ और मंत्र जाप करें। अंत में आरती-अर्चना कर सुख, समृद्धि और धन वृद्धि की कामना करें। दिनभर उपवास रखें। शाम में आरती कर फलाहार करें। अगले दिन पूजा पाठ संपन्न कर व्रत खोलें।

कौन-कौन सी महिलाएं छठ का व्रत न करें

कुंवारी लड़कियों के लिए क्या है नियम?

छठ शुद्धता और पवित्रता का महापर्व है. यही कारण है कि इसे सिर्फ शादीशुदा महिलाएं ही कर सकती हैं । सूर्य उपासना का व्रत होता है। कुंवारी कन्याओं के लिए यह व्रत वर्जित है। सूर्य की आराधना केवल महिलाएं ही कर सकती हैं। सूर्य की उपासना जो कोई सधवा हो या विधवा हो, वही कर सकती हैं। साथ ही कहा कि कुंवारी अवस्था में ही कुंती ने सूर्य उपासना की थी। ना चाहते हुए भी वह मां बन गई थी। इस वजह से कुंवारी लड़कियों को सूर्य की उपासना और छठ व्रत करना उसी समय से वर्जित है। हालांकि वह घर की माताओं और बहनों के साथ उनकी सहायता करने के लिए इस विशेष कार्यक्रम में शामिल हो सकती हैं, लेकिन उनसे कभी भी व्यक्तिगत रूप से व्रत न रखवाएं और ना ही सुबह सूर्य देव की आराधना करवाएं, ऐसा करना उनके लिए ठीक नहीं रहेगा।

कुंवारी लड़कियां इन नियमों का करें पालन

कुंवारी लड़कियों को अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए बढ़-चढ़कर इस त्योहार में हिस्सा लेना चाहिए। शुद्धता और पवित्रता का ध्यान रखते हुए कुंवारी लड़कियां प्रसाद बनाने में मदद कर सकती हैं। पूजा-पाठ के मदद कर सकती हैं। इसके साथ ही व्रतियों की सेवा करनी चाहिए। व्रतियों की सेवा, पूजा पाठ में मदद करने से भी सूर्यदेव प्रसन्न होते हैं और उनकी इस श्रद्धा को स्वीकार करते हुए मनोकामना पूर्ण करते हैं।

छठ महापर्व पर बाण गंगा नदी के किनारे जुटती है भीड़, राम-लक्ष्मण और सीता जी से जुड़ी है मान्यताएं

लोकआस्था के चार दिवसीय महापर्व छठ पूजा को लेकर घाटों की सफाई का काम तेज हो गया है। गोपालगंज में नारायणी नदी, बाण गंगा और दाहा नदी के घाट पर लाखों की संख्या में श्रद्धालु छठ पूजा पर भगवान भास्कर को अर्घ्य देते हैं। महापर्व में इन घाटों का खास महत्व है। किदवंतियों के अनुसार भगवान श्रीराम जनकपुर से जब माता सीता और भाई लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौट रहे थे। तब लक्ष्मण जी को प्यास लगी। लक्ष्मण जी ने पानी पीने के लिए बाण चलाई और धरती से पानी निकलने लगी।

नदी के उद्गम के बाद निरंतर पानी बहती है। इलाके के लोग बाण गंगा नदी के नाम से इसे जानते हैं, जो सीवान में जाकर दाहा नदी बनी और सरयू में मिल गयी। बाण गंगा नदी के घाट पर हजारों की संख्या में श्रद्धालु छठ पूजा करने आते हैं। बिहार में लोकआस्था के महापर्व छठ को लेकर तैयारी तेज हो गई है। इस बार सूर्योपासना का चार दिवसीय महापर्व छठ 17 नवंबर को नहाय-खाय के साथ शुरू हो जाएगा। इस दिन छठ व्रती चावल, कद्दू और चना दाल का प्रसाद ग्रहण करते हैं। वहीं 18 नवंबर को इस महापर्व के दूसरे दिन खरना का प्रसाद बनेगा। खरना के लिए विशेष तौर पर खीर और रोटी का प्रसाद बनाया जाता है। 19 नवंबर को अस्ताचलगामी भगवान भास्कर को अर्घ्य दिया जाएगा, वहीं 20 नवंबर को उदयीमान भगवान भास्कर को अर्घ्य देने के बाद व्रती पारण करेंगे। इसके साथ हीं छठ का महापर्व समाप्त हो जाएगा। चार दिनों तक चलने वाले छठ महापर्व की अपनी एक अलग महानता है और व्रत के सभी अलग-अलग दिनों का महत्व काफी खास है।

सूर्योपासना का महापर्व छठ पूजा

भारत धर्म प्रधान देश है। यहां धर्म कर्म ही जन-जन का प्राण है। ऐसे भारत त्यौहारों का देष है। यहां भारतीय संस्कृति के अंतगर्त प्रति रोज त्यौंहारों का क्रम चलता रहता है। कभी होली, दिवाली, रक्षाबंधन, एकादशी, देवत्थान, गंगास्नान को श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। इसी श्रृंखला के अंतर्गत काफी लोकप्रिय त्यौंहार है छठ महापर्व। छठ का त्यौहार सूर्योपासना का पर्व होता है। छठ का त्यौहार सूर्य की आराधना का पर्व है, प्रातःकाल में सूर्य की पहली किरण और सांयकाल में सूर्य की अंतिम किरण को अर्घ्य देकर दोनों का नमन किया जाता है। सूर्य षष्ठी व्रत होने के कारण इसे छठ कहा गया है। सुख-स्मृद्धि तथा मनोकामनाओं की पूर्ति का यह त्यौहार सभी समान रूप से मनाते हैं। प्राचीन धार्मिक संदर्भ में यदि इस पर दृष्टि डाले तो पाएंगे कि छठ पूजा का आरंभ महाभारत काल के समय से देखा जा सकता है। छठ देवी सूर्य देव की बहन हैं और उन्हीं को प्रसन्न करने के लिए भगवान सूर्य की आराधना की जाती है तथा गंगा-यमुना या किसी भी पवित्र नदी या पोखर के किनारे पानी में खडे होकर यह पूजा संपन्न की जाती है। छठ पूजा तिथि छठ पूजा चार दिनों का अत्यंत कठिन और महत्वपूर्ण होता है। इसका आरंभ कार्तिक शुक्ल चतुर्थी से होती है और समाप्ति कार्तिकशुल्क सप्तमी को होती है। इस लम्बे अंतराल में व्रतधारी पानी भी ग्रहण नहीं करता। बिहार और उतर प्रदेश के पूर्वी इलाकों में छठ पर्व पूर्ण श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। छठ त्यौहार के समय बाजारों में जमकर खरीदारी होती है। लोग इसके लिए खासकर फल, गन्ना, डाली और सूप आदि जमकर खरीदते हैं। छठ पूजा व्रत आरंभ नहाय खाय-8 नवम्बर 2021 खरना। लोहंडा-9 नवम्बर 2021 सांझा अर्घ्य-10 नवम्बर 2021 सूर्योदय अर्घ्य-11 नवम्बर 2021 छठ पूजन छठ पूजा का आरंभ कार्तिकष्शुक्ल चतुर्थी के रूप में मनाया जाता है। नहाय-खाय के दूसरे दिन कार्तिकशुल्क पंचमी को खरना किया जाता है। पंचमी को दिनभर खरना का व्रत रखने वाले व्रती शाम के समय गुड़ से बनी खीर, रोटी और फल का सेवन प्रसाद रूप में करते हैं। व्रती 36 घंटे का निर्जला व्रत करते हैं। व्रत समाप्त होने के बाद ही व्रती अन्न और जल ग्रहण करते हैं। खरना पूजन से ही घर में देवी शष्ठी का आगमन हो जाता है। इस प्रकार भगवान सूर्य के इस पावन पर्व में षक्ति व ब्रह्मा दोनों की उपासना का फल एक साथ प्राप्त होता है। षष्ठी के दिन घर के समीप ही किसी नदी या जलाशय के किनारे पर एकत्रित होकर अस्ताचलगामी और दूसरे दिन उदीयमान सूर्य को अर्घ्य समर्पित कर पर्व की समाप्ति होती है। छठ पर्व महत्व छठ पूजा का आयोजन बिहार व पूर्वी उतर प्रदेष के अतिरिक्त देश में कोने-कोने में देखा जा सकता है। देष-विदेषों में रहने वाले लोग भी यह पर्व बहुत धूम धाम से मनाते हैं। मान्यता के अनुसार सूर्य देव और छठी मइया भाई-बहन है। छठ व्रत नियम तथा निष्ठा से किया जाता है। भक्ति-भाव से किए गए इस व्रत द्वारा निःसंतान को संतान सुख प्राप्त होता है।

इसे करने से धन-धान्य की प्राप्ति होती है तथा जीवन सुख-समृद्धि से परिपूर्ण रहता है। छठ के दौरान लोग सूर्य देव की पूजा करते हैं। इसके लिए जल में खडे होकर कमर तक पानी में डूबे लोग, दीप प्रज्ज्वलित किए नाना प्रसाद से पूरित सूप उगते और डूबते सूर्य को अर्घ्य देते हैं और छठी मैया के गीत गाते हैं।

-मुकेष ऋषि

कांचहि बांस के बहंगिया, बहंगी लचकत जाय...

सुरेश गांधी

यूं तो छठ सूर्य का पर्व है, लेकिन इसे छठी मइया के नाम पर अधिक पूजा जाता है। वस्तुतः सूर्य के वात्सल्य भाव को दर्शाने के लिए ही इसे मातृ रुप दिया गया है, ऐसा माना जाता है। खरना पूजन से ही घर में देवी षष्ठी का आगमन हो जाता है। चूकि छठ पर्व मूलरूप से सूर्य की ही पूजा है तो यह स्वच्छता की भी पूजा कही जा सकती है। सूर्योपासना जीवन का आधार है। पवित्रता का प्रतीक है। शक्ति का स्रोत है। यानी अंतःकरण की शुद्धता का भी प्रतीक है छठ। इस दिन भक्त पूरे दिन उपवास रखते हैं। मां की पूजा के लिए हर तरह के पकवान बनाकर और सात तरह के फल बांस के डालों में भरकर नदी या तालाब के किनारे जाते हैं। यहां गन्ने का घर बनाकर दिया जलाते हैं और डूबते सूरज को अर्घ्य देते हैं। ये अर्घ्य कमर तक पानी में खड़े होकर दिया जाता है। सूरज ढ़लने के बाद भक्त घर आते हैं और फिर जागरण होता है। सप्तमी के दिन ब्रह्म मूहूर्त में लोग फिर से नदी या तालाब के तट पर इकट्ठे होते हैं और फिर उगते हुए सूरज को अर्घ्य दिया जाता है। भक्त अंकुरित चने हाथ में लेकर षष्ठी व्रत की कथा कहते और सुनते हैं। कथा के बाद प्रसाद वितरण किया जाता है और फिर सभी अपने-अपने घर लौट आते हैं। प्रकृति आराधना का महापर्व छठ एकमात्र त्योहार है, जिसमें डूबते सूरज की पूजा की जाती है। इसमें पूरी निष्ठा के साथ प्रकृति की पूजा की जाती है। मान्यता है कि छठ पर्व शरीर में होने वाले किसी भी प्रकार के चर्म रोग, यहां तक कि कुष्ठ जैसे भयानक चर्म रोग से मुक्ति के लिए भी किया जाता है। कहते है भगवान श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब ने भी कुष्ठ रोग से मुक्ति के लिए सूर्य देव की आराधना की थी। छठ पूजा करने वाले व्रतियों की इस पर्व में अगाध श्रद्धा है। उन्हें इस बात में दृढ़ आस्था रहती है कि भगवान सूर्य से मांगी गई हर मुराद निश्चित पूरी होती है। लोक विश्वास यह भी है कि छठ व्रत-उपवास करने वाले परिवार में कुष्ठ या चर्म रोग नहीं होता है। इस बात की पुष्टि भविष्य पुराण भी करता है। इसकी चर्चा मार्कण्डेय पुराण में भी मिलती है। इस पर्व में व्रती द्वारा जो साधना की जाती है, वह इतनी कठोर होती है कि मुनियों ने इस पर्व को हठयोग की संज्ञा दी है। इस व्रत को करने वाले व्यक्तियों द्वारा पूरे 36 घंटे तक जल भी ग्रहण नहीं करना, पूरे समय नंगे पांव चलना, रात में भूमि पर शयन करना, गृहस्थ जीवन में एक हठयोग की तरह ही है। सूर्य की पूजा का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है, किन्तु छठ व्रत का उल्लेख भविष्य पुराण एवं महाभारत में स्पष्ट रूप से मिलता है। प्राचीन समय से चला आ रहा छठ पर्व ही ऐसा है, जिसमें पुरुष प्रधान समाज में भगवान भास्कर से पुत्री प्राप्ति की कामना की जाती है। इस व्रत के गीत-'रुनकी-झुनकी बेटी मांगिला, पढ़ल पंडितवा दमाद' में इस प्रार्थना को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। मुख्य रूप से छठ में प्रकृति प्रदत्त सामग्री नीबू, गन्ना, गुड़, मूली, नारियल, केला, साठी (एक प्रकार का धान) और गेहूं से बने प्रसाद के साथ जलाशयों में खड़े हो कर पूजा की जाती है। इस पर्व में रात्रि में मिट्टी से बने हाथी की भी पूजा करने का प्रावधान है। छठ प्रकृति से प्रेम का प्रतीक है। छठ में जल में खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। जल या आपरू (संस्कृत) का एक अर्थ प्रेम भी है। इस त्योहार का उद्देश्य सूर्य से अपनेपन और निकटता को महसूस करना है। सूर्य को जल अर्पित करने का अर्थ है कि हम संपूर्ण ह्दय से आपके (सूर्य के) आभारी हैं और यह भावना प्रेम से उत्पन्न हुई है। इसमें दूध से भी अर्घ्य देते हैं। दूध पवित्रता का प्रतीक है। दूध को पानी के साथ अर्पित किया जाना इस बात को दर्शाता है कि हमारा मन और ह्दय दोनों पवित्र बने रहें।

लोक आस्था का महापर्व छठ केवल सामाजिक समरसता का ही संदेश नहीं देता है, बल्कि समाज के द्वारा समाज पर नियंत्रण का भी संदेश देता है। इसके अलावा जीवन से जुड़े उद्देश्यों का भी संदेश देता है। इस पर्व में न तो केवल डूबने और उगते हुए सूर्य की पूजा होती है, बल्कि संदेश स्पष्ट है कि उदय के बाद अस्त और अस्त के बाद उदय जिंदगी का सार्वभौम सत्य है। जल में खड़ा होकर अर्घ देने का संदेश यह है कि जल सभ्यता की जननी है। वहीं, महापर्व बेटी बचाओ आंदोलन की वकालत करने के साथ प्रकृति के महत्व को भी दर्शाता है। यही एक पर्व है, जहां डूबते सूर्य की पूजा भी की जाती है। इसकी मुख्य वजह इस पर्व में निहित उद्देश्य और भावना है। जातिवाद पर छठ जितना चोट करता है, उतना कोई दूसरा पर्व नहीं। यहां तक कि कई मायनों में किसी भी समाज सुधारक आंदोलन से भी अधिक। अर्घ्य स्थल पर किसी को किसी की जाति से कोई मतलब नहीं होता।

ग्लैमरस दिखना इतना भी आसान नहीं, जितना दिखता है : प्रियंका

प्रियंका चोपड़ा प्रियंका चोपड़ा ने न सिर्फ बॉलीवुड में शोहरत कमाई, बल्कि हॉलीवुड में भी खूब नाम कमा रही है। हाल ही में प्रियंका ने बताया कि उसने कभी बॉलीवुड को अपना आदर्श नहीं माना और यह भी कहा कि उसने कभी नहीं सोचा कि वह कभी ऐसा कुछ कर पाएगी।

प्रियंका ने कहा, मैं उड़ते बालों और साड़ियों के साथ रोमांस करते हुए बड़ी नहीं हुई। मुझे फिल्में पसंद हैं लेकिन मैं यह सोचकर बड़ी नहीं हुई कि मुझे सिर्फ स्लो मोशन में चलना है। जब मैं बड़ी हुई तो मैं फिल्मों की फैन नहीं थी। मेरे पिता म्यूजिक के फैन थे इसलिए मैं अपने घर में बहुत सारे म्यूजिक के साथ बड़ी हुई... लता मंगेशकर, बीटल्स से लेकर साहिर लुधियानवी की कविताओं तक, यह एक बहुत ही म्यूजिकल घर था।

पतली-सी साड़ी पहन ठंड में करनी पड़ी शूटिंग

प्रियंका ने कहा कि जब ग्लैमरस दिखाने वाले शॉट्स फिल्माने का वक्त आया, तब उसे एहसास हुआ कि ग्लैमरस दिखना इतना भी आसान नहीं, जितना दिखता है।

उसने बताया, मैंने कभी नहीं सोचा था कि स्विट्जरलैंड जैसी बर्फीली जगह पर साड़ी पहनकर शूट करना पड़ेगा। उसने मैं माधुरी दीक्षित और श्रीदेवी को हमेशा से अपना है आदर्श मानती थी, हालांकि मैंने नहीं सोचा था कि जैसे वे लोग आराम से ऐसे गाने शूट करते थे, मैं कभी वैसा रही कर पाऊंगी। हालांकि, मैंने इसे कर तो दिया लेकिन पास इसके लिए मुझे गर्म पानी की बाल्टी साथ रखनी पड़ी। प्रियंका ने कहा, ओह मैं इसे कभी नहीं भूलूंगी। मैं एक शिफॉन साड़ी में थी, जंगफ्राऊ (स्विट्जरलैंड) में, एक हरे रंग की साड़ी में हीरो (अर्जुन रामपाल) ने सिर से पैर तक रोएंदार कपड़े पहने हुए थे और मैंने ब्लाऊज तथा पतली- सी शिफॉन साड़ी क्लोज अप शॉट के वक्त मेरी साड़ी के नीचे गर्म पानी से भरी एक बाल्टी रख दी गई थी। मैं उसी में खड़ी होकर अपने डायलॉग्स बोल रही थी। बोलते हुए मेरे दांत किटकिटा रहे थे। ऊपर हैलीकॉप्टर भी मंडरा रहा था क्योंकि हम एक हैलीकॉप्टर शॉट ले रहे थे तो हैलीकॉप्टर से अलग हवा आ रही थी।

को- -एक्टर ने किया सपोर्ट

प्रियंका ने बताया, मेरे को-एक्टर मुझे सपोर्ट करने और गर्म रखने की कोशिश कर रहे थे। वह जरा भी ग्लैमरस नहीं था दोस्तो ! इसके बाद मेरे लिए फिल्मों में ग्लैमर का मतलब किरदारों को पहचानना तथा समझना बन गया। खूबसूरत दिखना अच्छा है और अब भी मैं अपने बालों को खुला रखना चाहती हूं लेकिन जल्द ही मैंने काम के जरिए और किरदारों के साथ आप क्या कर सकते हैं, इसकी सम्भावनाओं का आनंद लेना शुरू कर दिया।

'कृष' थी करियर में अहम मोड़

प्रियंका से जब पूछा गया कि वह उस स्थिति में कब पहुंची जब वह अपने लिए फिल्मों को चुन सकती थी, तो कहा, कई फिल्मों के बाद ऐसा हो सका। मुझे लगता कि शायद कहीं न कहीं 'कृष' के आसपास। इससे पहले हमेशा ऐसे होता था कि हे भगवान, मैं आगे क्या करने जा हूं? मेरे पास कौन-सा अवसर आने वाला है? जो मेरे आता था मैं उसे ही चुन लेती थी।

फिल्म 'कृष' के बाद, क्योंकि मैंने तभी 'ऐतराज' भी की थी, मैंने वह काम किया, जिसने मुझे एक ठोस आधार दिया। मुझे आलोचनात्मक प्रशंसा मिली। मेरे पास लोग आने और यह कहने लगे कि मैं अपना काम जानती हूं।

अमित साध भी सलमान खान की दरियादिली के फैन : कहा- बॉडीगार्ड भेज खाने पर बुलाते थे भाई

एक्टर अमित साध ने सलमान खान की दरियादिली की तारीफ की है। अमित ने कहा है कि फिल्म सुल्तान की शूटिंग के वक्त सलमान ने उन्हें स्वादिष्ट खाने खिलाए थे। अमित ने कहा कि सलमान अपने बॉडीगार्ड भेज उन्हें खाने के लिए इनवाइट करते थे।

सलमान हमेशा इस बात का ध्यान देते थे कि अमित भूखे न रहें। बता दें कि अमित साध ने सुल्तान में एक बिजनैस मैन की भूमिका निभाई थी। फिल्म में उनके छोटे किरदार को भी काफी पसंद किया गया था। इस फिल्म ने वर्ल्डवाइड 600 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया था।

अमित की फूडिंग का ध्यान रखते थे सलमान

अमित साध ने सिद्धार्थ कानन के साथ इंटरव्यू में कहा- सलमान भाई मेरा काफी ख्याल रखते थे। शूटिंग के वक्त वो श्योर करते थे कि मैंने अच्छी तरह खाना खाया कि नहीं। वो मुझे खाने पर इनवाइट करने के लिए अपने बॉडीगार्ड्स भेजते थे। मुझे उनका ये जेस्चर काफी अच्छा लगता था। हर आदमी के अंदर अच्छा और बुरा इंसान दोनों होता है, ये डिपेंड करता है कि हम उससे क्या ले रहे हैं।

सलमान ने अमित को आधी रात में गिफ्ट की थी साइकिल

सुल्तान की रिलीज के वक्त का ही एक और वाकया है। सलमान ने अमित को अपनी इलेक्ट्रिक साइकिल गिफ्ट की थी। ईद के मौके पर अमित, सलमान के घर गैलेक्सी अपार्टमेंट पहुंचे थे। आधी रात हो गई फिर भी सलमान, अमित को निकलने नहीं दे रहे थे। अमित को देर रात तक जागने की आदत नहीं थी। हालांकि वो सलमान से यह बात कहने में झिझक रहे थे। कुछ देर बाद वो सलमान के पास पहुंचे और पार्टी से जाने की इजाजत मांगी। सलमान ने उनसे कहा कि थोड़ी देर रुकिए, मैं आपको एक गिफ्ट देना चाहता हूं। अमित को इसके बाद भी काफी वक्त तक इंतजार करना पड़ा। कुछ देर बाद सलमान अपनी साइकिल लेकर आए। उन्होंने अमित को साइकिल देते हुए कहा कि यही आपका गिफ्ट है। अमित, सलमान के इस जेस्चर से काफी इमोशनल हो गए।

मेरी जगह कोई और होता तो 'हार' मान लेता : समंथा

साऊथ फिल्म इंडस्ट्री की टॉप एक्ट्रेस समांथा रुथ प्रभु इन दिनों 'मायोसाइटिस' नामक बीमारी का सामना कर रही है और अपना इलाज करवाने के लिए एक लम्बी छुट्टी पर है। इस बीच उसने बताया है कि आज जब वह अपना पुराना काम देखती है तो उसे शर्मिंदगी महसूस होती है। समांथा ने कई हिट और सुपरहिट फिल्मों में काम किया है। उसने अपनी खूबसूरती के साथ ही दमदार एक्टिंग से फैन्स के दिलों में अलग जगह बनाई है। इसके अलावा वह सामाजिक मुद्दों पर भी अपनी राय खुल कर रखती है। हाल में उसने मॉडलिंग के दिनों और पुराने काम को याद करते हुए बताया कि उसे अपना शुरुआती काम देखना क्यों पसंद नहीं है ?

कॉलेज के दौरान मॉडलिंग में आजमाया हाथ

समांथा ने बताया, मैंने करियर के शुरुआती दौर में कॉलेज के दौरान और उसके बाद कुछ समय के लिए मॉडलिंग में हाथ आजमाया था वैसे, मैंने अपना ध्यान हमेशा पढ़ाई पर ही रखा।' दरअसल, हर भारतीय परिवार की तरह उसका यही मानना था कि सफलता का यस्ता शिक्षा के जरिए मिलता है, इसलिए वह हमेशा पढ़ाई पर फोकस रखती थी। जो परीक्षा के दिन सुबह 4 बजे उठकर 100 बार रिवोजन करते हैं इसलिए एक्टिंग समांथा के लिए कभी कोई ऑप्शन नहीं था।

मैंने मॉडलिंग ऐसे समय पर शुरू की भी, जब घर पर हालात ठीक नहीं थे। इस कारण मैं अपनी आगे की पढ़ाई नहीं कर सकी। उस समय मुझे अधिक समझ नहीं थी लेकिन मॉडलिंग ने एक उद्देश्य तथा लक्ष्य दिया। हालांकि, जहां तक कैमरे के सामने काम करने की बात है, तो मैंने मॉडलिंग के दिनों की गलती को नहीं दोहराया, वरना मैं पूरी तरह से बर्बाद हो जाती। उसने आगे बताया, जब मैंने शुरुआत की थी, तब मैं इसमें बहुत खराब थी। अब जब टी. बी. पर मेरा उस समय का कुछ चल रहा होता है, तो उसे देख कर मैं पवरा जाती हूँ चैनल बदल देती हूँ क्योंकि वह मुझे शर्मनाक लगता है कि मैं इसमें बहुत बुरी थी।' अपने तलाक पर बोली साउथ के अभिनेता नागा चैतन्य से अपने तलाक के बारे में भी खुल कर बात की साल 2021 में उसकी शादी नागा चैतन्य से टूट गई थी साऊथ के इन दोनों ही लोकप्रिय सितारों का तलाक 2021 में सबसे ज्यादा चर्चित विषयों में से एक रहा था। इस साल की शुरुआत में नागा चैतन्य ने पुष्टि की थी कि उनका तलाक पिछले साल हो चुका है। हालांकि अब तक समांथा और चैतन्य ने अलगाव के पीछे के कारणों के बारे में चुप्पी साध रखी है।

मिले एक के बाद एक झटके

समथा का कहना है असफल शादी, ऑटोइम्यून बीमारी (मायोसाइटिस) और फ्लॉप फिल्में उसे 'ट्रिपल' झटके की तरह महसूस हुई। समांथा ने बताया है कि जिंदगी के उतार- चढ़ाव में किस तरह उसके फैन्स इसका हिस्सा बन गए।

उसने कहा, जब मैं एक असफल शादी के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई थी और मेरा स्वास्थ्य और काम प्रभावित हो रहा था तो यह एक तिहरी मार की तरह था। पिछले कुछ सालों में मैंने जो झेला है, कोई और होता तो हार मान लेता। मैं अपने जीवन के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई थी। उस दौरान मैंने उन अभिनेताओं के बारे में पढ़ा, जो स्वास्थ्य समस्याओं से गुजरे और वापसी की या ट्रोलिंग या चिंता का सामना किया। उनकी कहानियां पढ़ने से मुझे मदद मिली। इससे मुझे यह जानने की ताकत मिली कि अगर उन्होंने ऐसा किया तो मैं भी कर सकती हूं।

मैंने मॉडलिंग ऐसे समय पर शुरू की थी, जब घर पर हालात ठीक नहीं थे। इस कारण मैं अपनी आगे की पढ़ाई नहीं कर सकी। उस समय मुझे अधिक समझ नहीं थी लेकिन वह उन विद्यार्थियों में से मॉडलिंग ने एक उद्देश्य तथा लक्ष्य दिया।

परेशानी से लड़ना जानती हूँ समाधा ने कहा, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि इस देश में पसंदीदा सितारा होना एक अविश्वसनीय उपहार है, इसलिए इसके लिए जिम्मेदार बनें, ईमानदार और वास्तविक बनें और अपनी कहानी बताएं। यह हमेशा इस बारे में नहीं होता कि किसी के पास कितनी सुपरहिट और ब्लॉकबस्टर फिल्में हैं कितने पुरस्कार जीते गए हैं, परफैक्ट बॉडी है या सबसे खूबसूरत ड्रैसेज हैं। यहां दर्द है, कठिनाइयां, परेशानियां हैं। मुझे इसकी परवाह नहीं है कि मेरी कमियां इतनी सार्वजनिक हो गई हैं। मैं वास्तव में उनसे काफी सशक्त हूँ। मैं जानती हूं कि मेरे पास जो कुछ भी है, मैं उसी से लड़ने जा रही हूँ और मुझे उम्मीद है कि जो लोग इसी तरह की स्थिति में है, उनके पास भी लड़ते रहने की ताकत होगी।

अभिनय से ब्रेक पर है बात करें समांथा की फिल्मों के बारे में तो आखिरी बार यह विजय देवरकोंडा के साथ फिल्म 'खुशी' में नजर आई थी।

इन साउथ सुपरस्टार्स ने झटके में ठुकरा दी बॉलीवुड की फिल्में, आज खुद की दम पर हिट कराती हैं मूवी

साउथ फिल्म इंडस्ट्री की फिल्में अब बॉक्स ऑफिस पर खूब धुआं उठाती नजर आती हैं. फिल्म का बजट कुछ भी हो लेकिन कहानी के दम पर सिनेमाघरों में कतारें लग जाती हैं. लेकिन कभी साउथ इंडस्ट्री बॉलीवुड से काफी पीछे छूट गई थी.

इस दौर में भी साउथ के कुछ सितारे ऐसे थे जिन्हें खूब हिंदी फिल्मों के ऑफर आया करते थे. पिछले करीब 4 साल से हिंदी फिल्मों का समय खराब चल रहा है. वहीं साउथ सिनेमा का समय फिर गया है. साउथ की फिल्में ना केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी अपना जलवा बिखेरती हैं. लेकिन हमेशा से ही समय ऐसा नहीं था.

कभी आलम ये भी था कि साउथ के सुपरस्टार्स हिंदी फिल्मों में काम करने का ख्वाब देखा करते थे. ग्लैमर की चकांचौंध और पैसों से भरी रंगीन इंडस्ट्री साउथ के लिए बड़ी चीज हुआ करती थी. लेकिन अब फिर समय ने करवट ली है. अब साउथ के सुपरस्टार्स हिंदी फिल्मों के लिए उतने उतावले नहीं रहते. कई हिंदी सुपरहिट फिल्में तो साउथ स्टार्स ने मना कर दीं. उदाहरण के लिए शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण की फिल्म चेन्नई एक्सप्रेस (2013) में लीड किरदार नयनतारा को ऑफर किया गया था. लेकिन नयनतारा ने इस किरदार को करने से मना कर दिया था. इसके बाद दीपिका पादुकोण को इस रोल के लिए कास्ट किया गया और फिल्म भी हिट रही थी. जहम आपको बताते हैं ऐसे 5 साउथ के सुपरस्टार्स जिन्होंने हिंदी फिल्मों में बड़े रोल ठुकरा दिए.

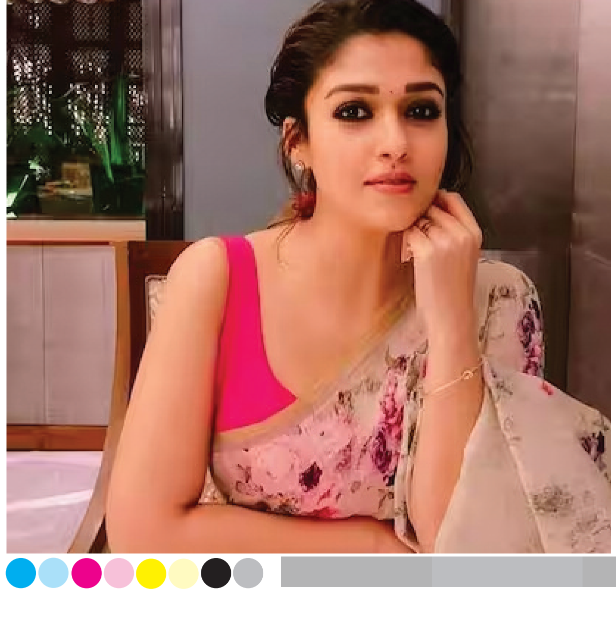

अनुष्का शेट्टी : बाहुबली फेम

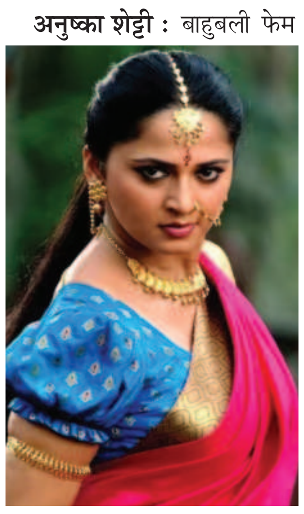

साउथ की सुपरस्टार अनुष्का शेट्टी के लाखों लोग दीवाने हैं. बाहुबली से पहले भी अनुष्का शेट्टी बड़ी स्टार हुआ करती थीं. अनुष्का शेट्टी भी बॉलीवुड फिल्म सिंघम में लीड किरदार को मना कर चुकी हैं. 2011 में रिलीज हुई अजय देवगन स्टारर फिल्म सिंघम सुपरहिट रही थी. फिल्म में अजय के साथ काजल अग्रवाल नजर आईं थीं. इससे पहले अनुष्का शेट्टी को ये किरदार ऑफर किया गया था. लेकिन उन्होंने इसके लिए मना कर दिया था.

नयनतारा : नयनतारा साउथ की बड़ी हीरोइन्स में गिनी जाती हैं. नयनतारा के साउथ समेत पूरे देश में फैन्स हैं. नयनतारा को शाहरुख खान की फिल्म चेन्नई एक्सप्रेस में दीपिका पादुकोण का किरदार ऑफर किया गया था. लेकिन नयनतारा ने इसे करने से मना कर दिया था.

अल्लू अर्जुन : साउथ सुपरस्टार अल्लू अर्जुन को भी कई हिंदी फिल्मों के ऑफर आ चुके हैं. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अल्लू अर्जुन को कबीर खान की फिल्म बजरंगी भाईजान के लिए भी ऑफर दिया गया था. लेकिन अल्लू ने इस फिल्म को करने से मना कर दिया था. इसके बाद कबीर खान ने सलमान खान के साथ ये फिल्म बनाई थी. ये फिल्म हिट रही थी.

रश्मिका मंदाना : नेशनल क्रश के नाम से पहचानी जाने वाली रश्मिका मंदाना ने बॉलीवुड की कई फिल्मों में काम किया है. रश्मिका मंदाना ने शाहिद कपूर की फिल्म जर्सी करने से मना कर दिया था. इसके बाद इस रोल को मृणाल ठाकुर ने किया था.

यश : केजीएफ सुपरस्टार यश को भी हिंदी की फिल्मों के कई ऑफर आ चुके हैं. यश को बॉलीवुड फिल्म कप्तान भी ऑफर की गई थी. लेकिन यश ने इस फिल्म को करने से मना कर दिया था. इसके बाद सैफ अली खान को इस फिल्म में कास्ट किया गया था.

सुर्खियों बटोरती 'चांदनी बैंज'

ईशान खट्टर इन दिनों अपनी पेशेवर जिंदगी से कहीं ज्यादा अपनी निजी जिंदगी को लेकर चर्चा में है। बॉलीवुड गलियारों में ऐसी चर्चा है कि ईशान मॉडल चांदनी बैंज को डेट कर रहा है। दोनों को कई बार साथ में देखा जा चुका है। ईशान के चांदनी के साथ डेटिंग की अफवाहें इस साल सितम्बर में शुरू हुई जब दोनों को मुंबई में एक इमारत से हाथों में हाथ डाले बाहर निकलते देखा गया। इससे पहले ईशान का नाम अनन्या पांडे के साथ जुड़ा था । भले ही दोनों ने कभी सार्वजनिक रूप से अपने रिश्ते की पुष्टि नहीं की लेकिन काफी समय से दोनों के साथ होने की अफवाह थी। चांदनी मलेशिया की जानी-मानी नहीं मॉडल और अभिनेत्री है। उसने टी.वी. की शो' माई मदर्स' के जरिए अपने अभिनय का करियर की शुरुआत की थी। मौजूदा वक्त में चांदनी भारत में है और एक मॉडल के तौर पर काम कर रही है। वह हिन्दी फिल्मों में अभिनय करना चाहती है। वह सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव रहती है।

एक सूत्र ने बताया, ईशान और चांदनी एक-दूसरे को लेकर काफी गंभीर हैं। ईशान ने चांदनी को करीबी दोस्तों से भी मिलवाया है। दोनों ने जून, 2023 में डेटिंग शुरू की थी। ईशान को पिछली बार कैटरीना कैफ और सिद्धांत चतुर्वेदी के साथ फिल्म 'फोन भूत' में देखा गया था और इन दिनों वह वॉर ड्रामा फिल्म 'पिप्पा' में नजर आ रहा है। इसकी कहानी ब्रिगेडियर बलराम की किताब 'द बर्निंग चाफीज' पर आधारित है। फिल्म में ईशान के साथ मृणाल ठाकुर है जो उसकी बहन बनी है। इसमें सोनी राजदान और प्रियांशु पेनयुली भी हैं।

फिल्म की रिलीज से पहले निर्माताओं ने मुंबई में एक विशेष स्क्रीनिंग की मेजबानी की जिसमें चांदनी सहित कई मशहूर हस्तियों ने भाग लिया था। चांदनी ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर 'पिप्पा' की समीक्षा करते हुए लिखा, इंतजार कर सकती कि दर्शक कब 'पिप्पा' मनोरंजक और शक्तिशाली कहानी अनुभव करेंगे। टीम 'पिप्पा' को हार्दिक बधाई। पिप्पा में ईशान ने वास्तविक जीवन के युद्ध नायक कैप्टन बलराम सिंह मेहता का किरदार निभाया है। इसका निर्देशन राजा कृष्ण मेनन ने किया है।

बीएसएफ को मिली बड़ी कामयाबी, पाक सीमा के पास से तीन ड्रोन और हेरोइन जब्त

तरनतारन, 16 नवंबर (एजेंसियां)। पंजाब के तरनतारन और अमृतसर जिलों में भारत-पाकिस्तान सीमा के पास तीन ड्रोन और 500 ग्राम हेरोइन का पैकेट जब्त किया गया। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। ड्रोन और 500 ग्राम वजन हेरोइन का एक पैकेट बरामद बीएसएफ के जवानों ने सीमा पर बाड़ लगाने से पहले एक अभियान के दौरान अमृतसर के रोरनवाला खुर्द गांव के पास एक खेत में कुछ संदिग्ध वस्तु पड़ी देखी। अधिकारी ने कहा कि तलाशी अभियान के दौरान उन्होंने एक ड्रोन और 500 ग्राम वजन हेरोइन का एक पैकेट बरामद किया। अधिकारी ने कहा कि एक अन्य घटना में तरनतारन के कलश हवेलियन गांव के बाहरी इलाके में बीएसएफ और पंजाब पुलिस के संयुक्त अभियान में चीन निर्मित ड्रोन जब्त किया गया।

आकस्मिक सेवाओं के लिए एयर एंबुलेंस व हेलीकॉप्टर की तैनाती

भोपाल, 16 नवंबर (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश में हो रहे विधानसभा चुनाव के सुचारू संचालन के लिये एक एयर एम्बुलेंस और दो हेलीकॉप्टर आकस्मिक सेवाओं के लिये तैनात किए गए है। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने बताया कि एक एयर एम्बुलेंस मतदान दिवस से पहले 16 नवम्बर को सुबह 11 बजे से अपरान्ह चार बजे तक गोंदिया (महाराष्ट्र) में तथा इसके पश्चात गोंदिया से रवाना होकर 17 नवम्बर मतदान सम्पन्न होने तक जबलपुर में उपलब्ध रहेंगी। इसी प्रकार एक हेलीकॉप्टर 16 एवं 17 नवम्बर को मतदान सम्पन्न होने तक बालाघाट में रखा जाएगा एवं एक अन्य हेलीकॉप्टर भोपाल में पूरे समय उपलब्ध रहेगा। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने बताया कि एयर एम्बुलेंस और हेलीकॉप्टर का उपयोग आवश्यकता होने पर किसी भी प्रकार की आकस्मिक सेवाओं के लिये किया जाएगा। विमानन संचालनालय ने कलेक्टर बालाघाट, जबलपुर, भोपाल एवं एयरपोर्ट डायरेक्टर गोंदिया को इस संबंध में आवश्यक व्यवस्था करने के लिये निर्देशित किया है।

16 वर्षीय लड़के ने कर डाला 22 साल की गर्लफ्रेंड का क़त्ल, चौंकाने वाली है वजह

ठाणे, 16 नवंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के ठाणे जिले से एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है यहाँ 16 वर्षीय लड़के ने अपनी गर्लफ्रेंड की हत्या कर दी। इस घटना में आरोप लड़के का पिता और एक अन्य व्यक्ति सम्मिलित है। पुलिस ने उसे पकड़कर पूछताछ शुरू कर दी है। इस मामले में अपराधी लड़के का पिता फरार है। पुलिस ने यह खबर दी। पुलिस स्टेशन के वरिष्ठ इंस्पेक्टर अनिल जगताप ने बताया कि 27 अक्टूबर को हाजी मलंग हिल्स के पास रेलवे ट्रैक के पास तकरीबन 22 वर्षीय एक अज्ञात लड़की का शव मिला था। तत्पश्चात, पुलिस टीम ने मामले की गंभीरता से तहकीकात आरम्भ की। तहकीकात के चलते पता चला कि लड़की का क़त्ल रस्सी से गला घोंटकर किया गया था। उसकी पहचान कराई गई। वह उल्हासनगर की रहने वाली थी। पुलिस का कहना है कि तहकीकात के चलते पता चला कि 22 साल की लड़की का 16 वर्षीय लड़के के साथ अफेयर चल रहा था। जब इस बारे में लड़के के घरवालों को पता चला तो उन्होंने विरोध किया। लड़की निचली जाति से थी। आरोप है कि लड़की के नाबालिग प्रेमी और प्रेमी के पिता व एक अन्य शख्स ने मिलकर 25 अक्टूबर को विवाद के पश्चात लड़की का क़त्ल कर दिया। क़त्ल के पश्चात लाश को फेंक दिया। पुलिस को जब पता चला तो तहकीकात की, जिसमें पूरा मामला सामने आ गया। इस मामले में पुलिस ने नाबालिग और उसके साथी को 7 नवंबर को बिहार से गिरफ्तार कर लिया।

प्रियंका को पार्टटाइम नेता बताने पर भड़की कांग्रेस

सुप्रिया बोलीं-सिंधिया का आरोप वाट्सअप के ज्ञान का हिस्सा

भोपाल, 16 नवंबर (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश में चुनाव प्रचार का शोर बंद होने के बाद अब सोशल मीडिया पर वॉर पलटवार तेज हो गया है। प्रियंका गांधी के ज्योतिरादित्या सिंधिया पर निशाना साथा। इसके बाद सिंधिया ने प्रियंका गांधी को पार्ट टाइम नेता बता दिया। इस पर कांग्रेस भड़क गई है। कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने ज्योतिरादित्य सिंधिया पर पलटवार करते हुए उनसे कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से पूछिए कि वह पार्ट टाइम नेता है या फुल टाइम। जिनकी बोलती उन्होंने बार-बार बंद कर दी।

जयाजीराव सिंधिया अंग्रेजों से मिले हुए थे

श्रीनेत ने सिंधिया को सोशल मीडिया पर लिखा कि जहां तक आपके परिवार के सपूतों की बात का जिक्र करते हुए कहा कि इसका उल्लेख तो खुद मोदी सरकार की आजादी के अमृत महोत्सव की वेबसाइट में यह कहकर किया था कि जयाजीराव सिंधिया अंग्रेजों से मिले हुए थे। जब रानी लक्ष्मी बाई ने अपने प्राणों की आहुति दी। श्रीनेत ने कहा कि मेरे द्वारा इस खबर को सार्वजनिक करने पर आपने वो पेज वेबसाइट से हटवाया था। उन्होंने कहा कि सवाल यह नहीं है कि हम क्या बोलते और सोचते है। आपको चिंता तो यह करनी चाहिए कि आपके आका और आपकी सरकार आपके परिवार के बारे में क्या सोचती है। श्रीनेत ने लिखा कि आपके बाकी अनर्गल आरोप तो वाट्सअप के ज्ञान का हिस्सा है, जिनको आपने अब तक अच्छे से रट लिया है। उन्होंने लिखा कि जिस परिवार के चलते आप राजनीति में आए। उस परिवार से इतनी तकलीफ थी तो सत्ता की मलाई चाटते वक्त यह बातें याद नहीं आयीं? पंडित नेहरू के बारे में बोलने से पहले यह बताइए कि मोदी इतना रोते क्यों हैं? देश के प्रथम प्रधानमंत्री ब्रिटिश हुकूमत के 200 साल बाद जब देश आजाद हुआ तो सीधे राष्ट्र निर्माण में जुट गये, गुलामी का रोना नहीं रोया।

इंदिरा जी फ्री की बिरयानी खाने लाहौर नहीं लपकी

श्रीनेत ने आगे कहा कि आप इंदिरा जी का जिक्र करने लायकनहीं हैं। उन्होंने लाख विदेशी ताकतों के विरोध के बावजूद पाकिस्तान के दो टुकड़े करके विश्व का भूगोल बदला। पीएम मोदी की तरह फ्री में बिरयानी खाने लाहौर नहीं लपकी चली गयीं थीं। श्रीनेत ने आगे कहा कि राहुल गांधी के चलते आप सत्ता में आगे बढ़े। उन्होंने आपकी तरह अपने उसूलों का गला घोंट कर दुम दबा कर सत्ता के लोभ में पाला नहीं बदला, बल्कि सच बोलने की भारी कीमत चुकाई और इस देश को जोड़े रखने के लिए 4000 किलोमीटर पैदल नाप दिये।

जनता दिखा देगी सूपड़ा किसका साफ होगा

श्रीनेत ने ग्वालियर-चंबल का जिक्र करते हुए कहा कि सूपड़ा किसका साफ होगा यह जनता दिखा देगी, लगता है दल बदलने के बाद अपने संभाग के चुनावी नतीजे आप भूल चुके हैं। बाकी, भाजपा में आपको कितना स्नेह मिल रहा है, वो सबके सामने है। अपनी जगह बनाने की नाकाम कोशिशों और आपसी द्वन्द से निपटने के लिए मेरी शुभकामनाएं। वैसे सुन नहीं पायेंगे जो भाजपाई आपके बारे में कैमरा बंद होने के बाद कहते हैं।

400 लोगों से भरी थी ट्रेन, ट्रैक पर रखा था 'मौत का सामान', ऐसे हुई पलटने की साजिश नाकाम

मैसूर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। कर्नाटक के मैसूर में त्योहार के सीजन में ट्रेन को पलटने की साजिश नाकाम हो गई है। रेलवे सुरक्षा बल ने मैसूर में नंजनगुडु और कडाकोला स्टेशनों के बीच ट्रेन एक्सीडेंट के प्लान को विफल कर दिया है। दरअसल, बदमाशों ने ट्रेन को पटरी से उतारने के लिए रेलवे ट्रैक पर लकड़ी का गुटका और लोहे की रॉड रख दिया था। उनके निशाने पर इस ट्रैक पर आने वाली पैसेंजर एक्सप्रेस ट्रेन नंबर 06275 थी। इस ट्रेन में 400 लोग सवार थे, लेकिन इससे पहले कि बदमाश अपने मंसूबे को पूरा कर पाते, ट्रेन के लोको पायलट ने सावधानी और सूझबूझ से 400 यात्रियों को बचा लिया। इस घटनाक्रम से जुड़े आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने तीन लोगों सोमाय मरांडी, भजनु मुर्मू और दासमत मरांडी को गिरफ्तार किया है। आरोपी ने जानबूझकर रेल पटरियों पर लोहे के रॉड और लकड़ी के ब्लॉक रख दिए थे। घटना की जानकारी मिलने पर मैसूर रेलवे प्रोटेक्शन डिवीजन के सहायक रक्षा आयुक्त एमएनए खान, पोस्ट कमांडर ला केवी वेंकटेश और उनकी टीम के साथ-साथ आरपीएफ के डॉग स्क्वायड घटनास्थल पर पहुंचे। उनकी त्वरित कार्रवाई ने एक संभावित आपदा को सफलतापूर्वक टाल दिया। इस काम को अंजाम देने से पहले आरोपियों ने एक वीडियो बनाया था। उन्होंने दूसरी पटरी पर जा रही ट्रेन का भी वीडियो बनाया था। इसके बाद उन्होंने पटरी पर सामान रखा था। पूछताछ में बदमाशों ने बताया कि उन्होंने मौज-मस्ती के लिए ऐसा किया था। तीनों आरोपियों ने दुर्घटना की साजिश रची और कुछ देर तक रेलवे ट्रैक के पास रुके रहे। वहां उन्होंने शराब पी और फिर घंटों ट्रेन का इंतजार करते रहे। ट्रेन आई तो मौके पर पहुंचने से पहले ही लोको पायलट की नजर ट्रैक पर पड़ी लकड़ी और लोहे के रॉड पर पड़ी। समय रहते उसने ट्रेन को सफलतापूर्वक पहले ही रोक दिया और बड़ी दुर्घटना होने से बच गई। जलडीहा, बांगिरिपोसी, मयूरबंज, ओडिशा के मूल निवासी सोमाय मरांडी को घटनास्थल पर पाया गया और पूछताछ करने पर उसने तोड़फोड़ के प्रयास की बात कबूल कर ली। आरोपियों को आगे की जांच के लिए मैसूर रेलवे पुलिस को सौंप दिया गया है और उनके खिलाफ रेलवे अधिनियम-1989 की धारा 150(1)(ए) के तहत सीआर नंबर 39/2023 के तहत मामला दर्ज किया गया है।

13 हजार लोगों से ठगे 56 करोड़, गुरुग्राम पुलिस ने पकड़े 53 साइबर क्रिमिनल्स

गुरुग्राम, 16 नवंबर (एजेंसियां)। साइबर क्राइम के मामले देशभर में तेजी से बढ़ रहे हैं। इसलिए साइबर फ्रॉड को अंजाम देने वाले आरोपियों पर लगाम लगाने के लिए हरियाणा की गुरुग्राम पुलिस ने बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है। गुरुग्राम पुलिस के एक वरिष्ठ अफसर ने बताया कि गुरुग्राम पुलिस ने 53 साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया है। इन्होंने देश भर में 13 हजार लोगों से करीब 56 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी को अंजाम दिया है।

22 केस में हुई गिरफ्तारी

पुलिस ने बताया कि अक्टूबर में साइबर अपराध जागरुकता माह के दौरान 22 मामलों में 53 गिरफ्तारियां की गईं। दरअसल, इन साइबर ठगों की जानकारी पुलिस ने साइबर क्राइम कॉर्डिनेशन सेंटर के साथ भी साझा की, जिसके बाद पता चला कि पकड़े गए आरोपियों ने देश भर में 12,669 लोगों से करीब 56 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी की है।

74 सिम कार्ड भी बरामद

गुरुग्राम के डिप्टी कमिश्नर (साइबर क्राइम) सिद्धांत जैन ने बताया कि इन साइबर अपराधियों के खिलाफ देश भर में 469 मामले दर्ज हैं, जिनमें से 22 मामले गुरुग्राम पुलिस स्टेशन के हैं। साइबर अपराध टीमों ने गिरफ्तार किए गए आरोपियों के कब्जे से 74 सिम कार्ड बरामद किए हैं। इन्होंने देश भर में लोगों से 55 करोड़ 86 लाख 46 हजार 215 रुपये की ठगी की थी। जैन ने कहा कि इन मामलों में आगे की कार्रवाई की जा रही है।

ठाणे की अदालत ने 2010 में यातायात पुलिस अधिकारी से मारपीट के आरोपी को बरी किया

ठाणे, 16 नवंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के ठाणे जिले की एक अदालत ने 2010 में एक यातायात पुलिस निरीक्षक के साथ मारपीट करने के आरोपी 41 वर्षीय व्यक्ति को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया है। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश वीएल भोसले ने पारित अपने आदेश में कहा कि अभियोजन पक्ष उचित संदेह से परे आरोपी के खिलाफ आरोपों को साबित करने में विफल रहा है और इसलिए उसे बरी किया जाना चाहिए। अतिरिक्त लोक अभियोजक वर्षा चंदाने ने अदालत को बताया कि तीन नवंबर 2010 को यातायात पुलिस अधिकारी ठाणे शहर के नौपाड़ा इलाके में एक चौक पर ड्यूटी पर तैनात थे।

चंदाने ने बताया कि उस वक्त आरोपी की कार सड़क के किनारे पहले से खड़ी कार के बगल में खड़ी थी और पुलिस ने उस पर जुर्माना लगाया। उन्होंने बताया कि इससे आरोपी नाराज हो गया और दावा किया कि वह सीबीआई अधिकारी है।

उसने कथित तौर पर कहा कि यातायात पुलिस अधिकारी को वह अनुशासन सिखाएगा और उसे बर्बाद कर देगा। अभियोजन पक्ष ने अदालत को बताया कि आरोपी ने पुलिस अधिकारी की 'नेम प्लेट' खींचने की भी कोशिश की और उसे धक्का दिया। हालांकि, बचाव पक्ष के वकील सचिन वैशंपायन ने पुलिस जांच और अभियोजन पक्ष द्वारा कही गई बातों में खामियां निकालते हुए कहा कि उनका मुवक्किल अपराध में शामिल नहीं था। न्यायाधीश ने आदेश में कहा कि आरोपियों के वकील द्वारा उठाए गए सवालों के संबंध में अभियोजन पक्ष की ओर से कोई संतोषजनक जवाब नहीं आया है।

अदालत ने कहा कि इस मामले में वाहन का स्वामित्व दिखाना उतना महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि अभियोजन पक्ष मौके पर आरोपी की मौजूदगी साबित करने में सक्षम नहीं है। इसमें कहा गया है कि अभियोजन पक्ष द्वारा इस संबंध में कोई सबूत पेश नहीं किया गया है। अदालत ने कहा कि अभियोजन पक्ष यह साबित करने में विफल रहा है कि घटना तीन नवंबर 2010 को दोपहर बारह बज कर 45 मिनट पर बताए गए स्थान पर हुई थी, जब पुलिस अधिकारी अपनी ड्यूटी पर तैनात थे और आरोपी ने उसे अपना कर्तव्य निभाने से रोका था।

डोडा जिले में आठ इमारतों में लगी आग, कोई हताहत नहीं

जम्मू, 16 नवंबर (एजेंसियां)। जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले के भद्रवाह इलाके में सुबह आठ इमारतों में आग लग गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भद्रवाह के चिन्नौट इलाके में सुबह पौने पांच बजे शॉर्ट सर्किट के कारण लगी आग में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। जिले के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अब्दुल कयूम ने बताया, आग बुझाने के लिए पांच अग्निशमन वाहनों को मौके पर भेजा गया। आग पर काबू पा लिया गया है। उन्होंने बताया कि आग लगने से आठ इमारतें जल गईं, लेकिन घटना में कोई हताहत नहीं हुआ। अधिकारियों ने बताया कि आग से रिहायशी मकानों, एक गेस्ट हाउस, और खाने की गुमटी सहित आठ संरचनाओं को नुकसान पहुंचा है।

गांव के 'पटेल' के साथ ऐसा सलूक 37 हजार के लिए दशकों चली कानूनी लड़ाई

बेंगलूरू, 16 नवंबर (एजेंसियां)। एक शख्स जिसकी उम्र 88 साल है, जो अपने पिता के पैसों के लिए सालों से कानूनी लड़ाई लड़ रहा है, वो भी महज 37 हजार रुपए के लिए। ये दिलचस्प मामला सामने आया है कर्नाटक से। जहां एक बेटे ने अपने पिता के हक के लिए दशकों तक कानूनी लड़ाई लड़ी और इस लड़ाई में आखिरकार उसे जीत हासिल हुई। कोर्ट ने मामले पर फैसला सुनाते हुए नौकरशाही को असंवेदनशील करार दिया, साथ ही एक ग्राम अधिकारी को 1979 से लेकर 1990 तक का बकाया जारी करने का भी निर्देश दिया। जस्टिस पीएस दिनेश कुमार और जस्टिस टीजी शिवशंकर गौड़ा की बेंच ने फैसला सुनाते हुए कहा कि ये दुर्भाग्य है कि एक ग्राम अधिकारी असंवेदनशील नौकरशाही का शिकार बन गया और मुआवजा मिले बिना ही उसकी मौत हो गई। कोर्ट ने कहा कि अधिकारी के बेटा 88 साल की उम्र में भी अपने पिता के अधिकार के लिए कानूनी लड़ाई लड़ रहा है। कोर्ट ने राज्य सरकार के मुआवजा न देने के फैसले पर हैरानी भी जताई।

1979-1990 तक 100 रुपए अनुकंपा भत्ता देने का आदेश

दरअसल, बेंगलुरु के राजाजिंगर में रहने वाले टीएस राजन ने साल 2021 में एक रिट याचिका के साथ हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। उनके पिता दिवंगत टीके शेषाद्रि अयंगर चिक्कमगलुरु जिले के कदुर तालुक के थंगाली गांव में 'पटेल' के रूप में कार्यरत थे। हाइकोर्ट के एक आदेश के मुताबिक कर्नाटक राज्य पटेल संघ द्वारा दी गई याचिका पर सुनवाई करने के बाद राजन के पिता दिवंगत टीके शेषाद्रि अयंगर भी लाभार्थियों में से एक थे। कोर्ट के आदेश के मुताबिक अगस्त 1979 से जून 1990 तक हर माह 100 रुपए अनुकंपा भत्ता देने का आदेश जारकी किया गया था। राजन के पिता टीके शेषाद्रि ने भत्ते के लिए कई बार आवेदन किया, लेकिन हर बार आवेदन को खारिज कर दिया गया। इस बीच टीके शेषाद्रि की मौत हो गई। पिता की मौत के बाद बेटे राजन ने तहसीलदार के सामने भत्ते का भुगतान करने के लिए एक ज्ञापन सौंपा। हमेशा की तरह एक बार फिर से साल 2017 में इसे खारिज कर दिया गया। खारिज करने के पीछे तर्क दिया गया कि उसके पिता को तदर्थ भत्ता नहीं मिला था। इसके बाद कर्नाटक राज्य प्रशासनिक न्यायाधिकरण की तरफ से भी इसे खारिज कर दिया।

तदर्थ मुआवजे का मामला

राजन ने इसके बाद हाइ कोर्ट का रुख किया। इस दौरान राजन के वकील ने कोर्ट से कहा कि राज्य सरकार का जवाब कानूनी तौर पर सही नहीं है। क्योंकि तदर्थ भत्ते को मंजूरी देना और जारी करना दोनों सरकार का काम है। जिसके बाद कोर्ट हाई कोर्ट ने अपने फैसले में राज्य सरकार की दलीलों को खारिज कर दिया। कोर्ट ने कहा कि राज्य सरकार की तरफ से ये दलील दी गई थी कि याचिकाकर्ता को तदर्थ मुआवजा नहीं दिए जाने की वजह से वो बकाया का दावा करने का हकदार नहीं है। कोर्ट ने सरकार की दलील पर हैरत जताते हुए कहा कि सरकार द्वारा इस बात पर कोई विवाद नहीं है कि याचिकाकर्ता के पिता ग्राम थंगाली के पटेल के रूप में कार्यरत थे, ऐसे में राज्य को बकाया के दावे पर विचार करना चाहिए था।

इस दौरान कोर्ट ने राज्य सरकार को आदेश दिया कि वो याचिकाकर्ता को 1979 और 1990 के बीच बकाया राशि के साथ ही 100 की दर से तदर्थ भत्ते की गणना और उसका भुगतान करने का आदेश दिया। साथ ही कोर्ट ने 1990 से 1994 तक का भत्ता और बकाया 500 रुपये प्रति माह की दर से भुगतान करने को बी कहा। इसके अलावा पात्रता की तारीख से रुपयों पर 10 प्रतिशत का साधारण ब्याज देने को भी कहा। कोर्ट ने ये सरा भुगतान तीन महीने के अंदर करने को कहा।

हुसैनीवाला बॉर्डर पर रिट्रीट सेरेमनी का समय 4.30 बजे, मौसम को देखते हुए लिया फैसला

फिरोजपुर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। (पंजाब) सर्दी के मौसम को देखते हुए फिरोजपुर में भारत-पाकिस्तान हुसैनीवाला बॉर्डर पर होने वाली रिट्रीट सेरेमनी का समय बदल दिया गया है। अब सेरेमनी शाम पांच बजे के बजाय साढ़े चार बजे होगी। यह जानकारी बीएसएफ के प्रवक्ता ने दी है। दिलावर खान टॉवर पोस्ट पर तैनात बीएसएफ जवान करते हैं परेड हुसैनीवाला बार्डर पर रोजाना सुबह भारत और पाकिस्तान अपने-अपने एरिया में अपने राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। शाम के समय दोनों देशों की ओर से बेहतरीन परेड प्रस्तुत की जाती है। भारत की ओर से दिलावर खान टॉवर पोस्ट पर तैनात बीएसएफ के जवान परेड को करते हैं।

'दया करो, हम कुछ नहीं कर सकते'

दिल्ली के एलजी ने पंजाब सरकार से क्यों कही ये बात

नई दिल्ली। दिवाली की शाम से दिल्ली और पूरे एनसीआर में हवा की गुणवत्ता गंभीर श्रेणी में बनी हुई है, जो कि सरकार के साथ-साथ दिल्लीवासियों के लिए परेशानी का सबब बनी हुई है। अब दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने पंजाब सरकार के दिल्ली में हवा की गुणवत्ता खराब करने का जिम्मेदार ठहराया है। उन्होंने कहा कि पराली के धुएं को रोकने के लिए हम उनसे सिर्फ गुहार लगा सकते और इसके अलावा कुछ नहीं कर सकते।उन्होंने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर लिखा, दूसरे राज्यों से आने वाले पराली के धुएं को रोकने के लिए हम उनसे दया की गुहार लगाने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते। विशेषकर हम पंजाब के लापरवाही बरतने के बावजूद उनसे दया करने की भीख मांग रहे हैं। प्रदेश में अभी-भी एक्यूआई 400 के आसपास है, जिससे पूरी दिल्ली हांफ रही हैं। आपको बता दें कि बुधवार को दिल्ली में एयर इंडेक्स एक बार फिर 400 ऊपर पहुंच गया। इस वजह से हवा गंभीर श्रेणी में रही। एनसीआर के ज्यादातर प्रमुख शहरों में भी हवा की गुणवत्ता बेहद खराब रही। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार, अगले अभी तीन दिन तक प्रदूषण से खास राहत नहीं मिलने वाली है और दिल्ली में हवा की गुणवत्ता बेहद खराब श्रेणी में उच्च स्तर पर बरकरार रह सकती है।

सावधान! प्रसिद्ध बेकरी के पाव में निकली मरी हुई छिपकली,

ठाणे, 16 नवंबर (एजेंसियां)। आज की भाग दौड़ वाली जिंदगी में नरम और कड़क पाव आपकी जिंदगी का अहम हिस्सा हो गया है। सुबह नाश्ता करना है तो गर्म पाव, बाहर काम पर गए तो वडापाव, समोसा पाव। मानो पाव आपकी जिंदगी के अंदर गुल बस गया है लेकिन जरा यह सोचिए कि अगर रोज खाने वाले पाव के अंदर आपको मरी हुई छिपकली या कॉकरोच मिल जाए तो क्या होगा? ताजा मामला है महाराष्ट्र के ठाणे जिले के भिवंडी शहर का। यहां रोशन बाग इलाके के रहने वाले मोहम्मद नसीम ने सुबह-सुबह वडा पाव खरीदे थे। घर जाकर जब उन्होंने पैकेट खोला तो उसमें मरी हुई छिपकली मिली। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है।

जानिए पूरा मामला

बता दें कि हिंदुस्तानी होटल के पास कोहिनुर मिठाईवाले से मोहम्मद नसीम ने सुबह 9 बजे के करीब 8 पाव खाने के लिए खरीदे लेकिन जब वह पाव का पैकेट लेकर घर जाते है और उसे खोलकर खाने का प्रयास करते तो उसमें मरी हुई छिपकली दिखती है। मोहम्मद नसीम ने तुरंत पाव में मरी हुई छिपकली का वीडियो बना लिया और लोगों को सावधानी बरतने की सलाह दी कि आप जब भी बेकरी या दुकान से पाव ले रहे हो तो उसे चेक करके लीजिए कि उसमें कोई मरी हुई छिपकली या कुछ और तो नहीं।

दुकान मालिक ने क्या कहा?

इसके बाद नसीम शिकायत करने दुकान पर गए तो वहां दुकान मालिक मौजूद नहीं था तो फोन पर उससे बात हुई। मालिक ने बताया कि हम नारपोली इलाके की नेशनल बेकरी से पाव लेते हैं। उन्होंने कहा, इसमें हमारी कोई गलती नहीं हैं। पाव जहां से आया है उसकी गलती है।

सीएम योगी के आते ही भावुक हो गए भाजपा उम्मीदवार, छलके आंसू

पन्ना, 16 नवंबर (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के पन्ना के पवई में बुधवार को यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ की विशाल आम सभा हुई। जहां पर योगी आदित्यनाथ ने अपने अंदाज में कांग्रेस पर जमकर हमला बोला तथा कहा कि कांग्रेस जाति के नाम पर राजनीति करती थी। कांग्रेसी बोलते थे कि पहला अधिकार मुसलमानों का है। किन्तु प्रधानमंत्री मोदी बोलते हैं कि पहला अधिकार गरीबों का है। मध्यप्रदेश में निर्धन लोगों के लिए भारतीय जनता पार्टी की डबल इंजन सरकार काम कर रही है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि भारत की सीमाएं अब पूरी तरह से सुरक्षित हुई हैं। जो देश को गलत निगाह से देखेगा, उसकी आंखें निकलने में देर नहीं लगेगी। अब देश में कर्फ्यू नहीं लगता। कांग्रेस के वक़्त मध्यप्रदेश बीमारू राज्य था। डबल इंजन की सरकार ने विकसित प्रदेश बनाया है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि पन्ना आना मेरा सौभाग्य है। यहां भारतीय जनता पार्टी के शासन काल में अच्छे इंफ्रास्ट्रक्चर खड़ा हो रहा है। सीमेंट फैक्ट्रियां लग रही हैं। अब तो हीरा भी बड़ी मात्रा में निकलने लगा है।

हीरा उद्योग से रोजगार का सृजन होगा। कांग्रेस की सरकारें देश के जटिल मुद्दे सुलझाने में नाकाम रहीं। चुनावी सभा में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी को सुनने के लिए भारी भीड़ उमड़ी। उन्होंने पवई में भारतीय जनता पार्टी उम्मीदवार के समर्थन में जनता से वोट भी मांगे। इस के चलते मंच पर उम्मीदवार प्रहलाद लोधी भावुक भी हो गए तथा उनके आंसू भी छलक पड़े। वहीं, योगी की सभा में एक कार्यकर्ता अमित खरे का योगी भेष जनता में चर्चा का विषय बना रहा।

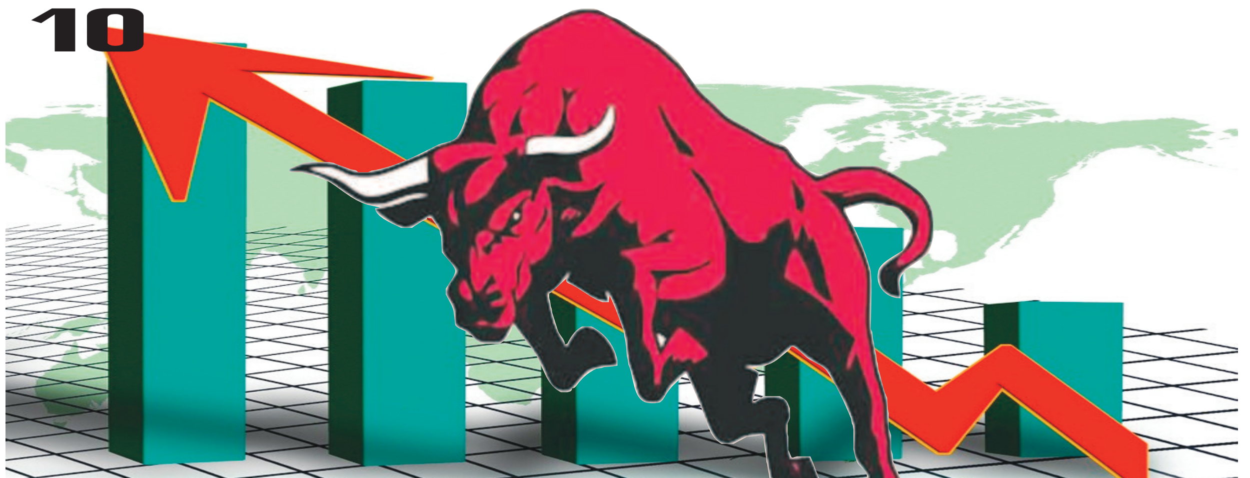

चीन की निकलेगी जान, भारत ने 13 दोस्तों के साथ मिलकर बनाया फुलप्रूफ प्लान!

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। चीन की इकोनॉमिक हालात ठीक नहीं है। रियल एस्टेट से लेकर मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर तक सब डूबे हुए हैं। डिमांड काफी लो है। अमेरिका के साथ टशन भी विदेशी कंपनियों को चीन से पलायन करने को मजबूर कर रही है।

ऐसे में भारत और अमेरिका ने चीन का और ज्यादा दम निकालने का मन बना लिया है। भारत चाहता है कि ग्लोबली चीन की जरुरत दुनिया के किसी भी देश को ना पड़े। दुनिया की चीन पर से निर्भरता पूरी तरह से खत्म हो जाए। इसके लिए भारत ने अपने 13 दोस्तों के साथ मिलकर फुलप्रूफ प्लान बना लिया है।भारत, अमेरिका और इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क (आईपीईएफ) के 12 अन्य मेंबर्स ने फ्लेक्सिबल सप्लाई चेन तैयार करने के लिए एक एग्रीमेंट पर साइन किया है। इस एग्रीमेंट का उद्देश्य चीन से निर्भरता को कम करना है। साथ ही महत्वपूर्ण सेक्टर्स और कोर प्रोड्क्ट्स के प्रोडक्शन को मेंबर देशों में ट्रांसफर करना है।

आईपीईएफ के 14 मेंबर हैं, जिनमें भारत, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, जापान, फिजी, दक्षिण कोरिया, न्यूजीलैंड, सिंगापुर और थाईलैंड शामिल हैं, जिनकी ग्लोबल जीडीपी में 40 फीसदी हिस्सेदारी है और साथ हीआ ग्लोबल ट्रेड में इन देशों की हिस्सेदारी 28 फीसदी है। समझौते पर बुधवार को सैन फ्रांसिस्को में वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने आईपीईएफ मंत्रिस्तरीय बैठक में साइन किए हैं।गोयल ने सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा ककि "भारत #पीईएफ सप्लाई चेन रेजिलिएंस एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर करने के लिए अमेरिका और 12 अन्य इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क फॉर प्रॉस्पेरिटी पार्टनर्स में शामिल हो गया है, यह अपनी तरह का पहला अंतरराष्ट्रीय समझौता है जो ग्लोबल सप्लाई चेन को और मजबूत करेगा और स्थिरता को बढ़ावा देगा।

ज्यादा से ज्यादा निवेश की जरुरत

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने विज्ञप्ति में कहा कि समझौते से आईपीईएफ सप्लाई चेन को अधिक लचीला, मजबूत और अच्छी तरह से इंटीग्रेटिड बनाने और पूरे क्षेत्र के आर्थिक विकास और प्रगति में योगदान देने में मदद करेगा। यह पैक्ट अगर कोई भी पांच मेंबर देश इंप्लीमेंट करते हैं तो सभी पर लागू हो जाएगा। एग्रीमेंट से कई तरह के फायदे होंगे। जिसमें सप्लाई चेन डायवर्सिफिकेशन, फंड रेजिंग, ग्लोबल वैल्यू चेन में भारत का डीप इंटीग्रेशन, एमएसएमई को सपोर्ट आदि शामिल है।

काउंसिल की होगी स्थापना

आईपीईएफ को ट्रेड व्यापार, सप्लाई चेन, क्लीन इकोनॉमी और फेयर इकोनॉमी (टैक्स और एंटी करप्शन से जुड़े इश्यू) से संबंधित चार पिलर्स पर खड़ा किया गया है। भारत ट्रेड को छोड़कर सभी पिलर्स में शामिल हो गया है। सप्लाई चेन एग्रीमेंट में पार्टनर्स के बीच सहयोग को बढ़ाने के लिए तीन नए आईपीईएफ सप्लाई चेन बॉडीज सप्लाई चेन काउंसिल, सप्लाई चेन क्राइसिस रिस्पांस नेटवर्क और आईपीईएफ लेबर राइट्स एडवाइजरी बोर्ड की स्थापना की बात कही गई है।

रतन टाटा की सबसे बड़ी कंपनी में बंपर कमाई का मौका, बचे हैं सिर्फ 10 दिन

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। टाटा ग्रुप की सबसे बड़ी और देश की सबसे बड़ी आईटी कंपनी टीसीएस बंपर कमाई का मौका दे रही है। जिन लोगों के पास टीसीएस के शेयर हैं वो उन्हें वापस देकर मोटी कमाई कर सकते हैं। वास्तव में टीसीएस ने शेयर बायबैक का ऐलान किया है। साल 2017 से अब तक कंपनी का यह पांचवां बायबैक और अब तक का दूसरा सबसे बड़ा बायबैक है। इस बायबैक की रिकॉर्ड डेट 25 नवंबर तय की गई है। इसका मतलब है कि निवेशकों के पास 10 दिन का समय है। इस ऐलान के बाद कंपनी के शेयर में साढ़े तीन फीसदी से ज्यादा की तेजी देखने को मिल चुकी है। आइए आपको भी बताते हैं कि आखिर कंपनी की ओर से क्या ऐलान किया है।

17 हजार करोड़ रुपए का बायबैक

टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज लिमिटेड ने शेयर बाजार को जानकारी देते हुए कहा कि कंपनी के प्रस्तावित शेयर बायबैक प्रोग्राम में भाग लेने वाले पात्र शेयरधारकों के लिए 25 नवंबर

रिकॉर्ड डेट तय की है। अक्टूबर में, भारत की सबसे बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनी ने टेंडर ऑफर रूट के माध्यम से 17,000 करोड़ रुपए के शेयर बायबैक का ऐलान किया था। कंपनी की योजना 4,150 रुपये प्रति शेयर की कीमत पर 4.09 करोड़ शेयर वापस खरीदने की है। यह कंपनी की कुल चुकता इक्विटी शेयर पूंजी का 1.12 फीसदी हिस्सा है।

कंपनी के बीते चार बायबैक

यह पांचवीं बार है जब टीसीएस शेयर बायबैक प्रोग्राम लेकर आ रही है। पिछले चार बायबैक भी टेंडर ऑफर रूट के जरिए किए गए थे। जनवरी 2022 में, टीसीएस ने 4,500 रुपये प्रति शेयर के हिसाब से 18,000 करोड़ रुपये के शेयर वापस खरीदे थे। दिसंबर 2020 में इसने 3,000 रुपये प्रति शेयर की कीमत पर 16,000 करोड़ रुपये के बायबैक की घोषणा की थी। अन्य दो बायबैक 2017 और 2018 में आए थे और दोननों की वैल्यू भी 16,000 करोड़ **रुपए थी।टीसीएस के शेयरों में तेजी**

इस घोषणा के बाद से कंपनी के शेयरों में इजाफा देखने को मिल रहा है। गुरुवार को कंपनी का शेयर साढ़े तीन फीसदी से ज्यादा की तेजी के साथ 3520 रुपए पर कारोबार कर रहा है। वैसे आज कंपनी का शेयर तेजी के साथ 3467 रुपए पर ओपन हुआ था। कारोबारी सत्र के दौरान कंपनी का शेयर 3523.20 रुपए के साथ दिन के हाई पर पहुंच गया। वैसे कंपनी का 52 हफ्तों का हाई 3,680 रुपए पर आ गया है। कंपनी का मार्केट कैप 12,87,437.23 करोड़ रुपए पर आ गया है। ये लगातार दूसरा दिन है जब शेयर बाजार और कंपनी दोनों में तेजी देखने को मिल रही है।

सुब्रत रॉय की मौत के बाद भी राहत नहीं, 'सहारा' पर चलता रहेगा केस

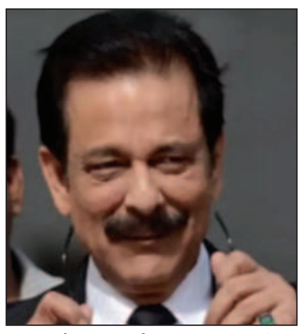

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। सहारा ग्रुप के फाउंडर सुब्रत रॉय का निधन हो चुका है। जिसके बाद से लगातार सवाल उठ रहे थे कि उन केसों का क्या होगा, जो उनपर और उनकी कंपनी चल रहे थे? उन लोगों के पैसों का क्या होगा, जो ग्रुप को लौटाने थे। खैर अब इन बातों से पर्दा हट चुका है। सेबी खुद इन बातों को क्लीयर करने के लिए सामने आया है। आइए आपको भी बताते हैं कि आखिर सुब्रत रॉय के निधन और उसके बाद ग्रुप पर चल रहे केसों के बारे में सेबी ने कहा...भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) की प्रमुख माधवी पुरी बुच ने आज साफ किया कि सहारा ग्रुप के फाउंडर सुब्रत रॉय के निधन के बाद भी सहारा का मामला कैपिटल मार्केट रेगुलेटर में जारी रहेगा। बुच ने कहा कि सेबी के लिए यह मामला एक यूनिट के आचरण से जुड़ा है और यह जारी रहेगा, भले ही कोई व्यक्ति जीवित हो या नहीं। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के तहत एक समिति है और हम सभी कार्रवाई उसी समिति के तहत करते हैं। विज्ञापनों के कई दौरान के बाद जिसके पास भी निवेश के सबूत थे, उन्हें अपना पैसा मिल गया। खास बात तो ये है कि सेबी के अकाउंट में सुब्रत रॉय के सहारा ग्रुप का 25 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा पड़ा हुआ है। वास्तव में सुप्रीम कोर्ट ने निवेशकों का पैसा रिफंड करने के लिए सुब्रत रॉय को पैसा जमा कराने के लिए कहा था। उसके बाद से लगातार पैसा सेबी के अकाउंट में आता रहा है। एनुअल रिपोर्ट के अनुसार सेबी ने सहारा ग्रुप की दो कंपनियों के निवेशकों को 11 वर्षों में 138.07 करोड़ रुपए वापस किए। इस बीच रीपेमेंट के लिए विशेष रूप से खोले गए बैंक खातों में जमा राशि बढ़कर 25,000 करोड़ रुपये से अधिक हो गई।रिपोर्ट के अनुसार सेबी को 31 मार्च, 2023 तक 53,687 अकाउंट्स से जुड़े 19,650 आवेदन प्राप्त हुए। इनमें से 48,326 अकाउंट्स से जुड़े 17,526 आवेदनों के लिए 138.07 करोड़ रुपए की कुल राशि लौटाई गई, जिसमें 67.98 करोड़ रुपए की ब्याज राशि भी शामिल है। शेष आवेदन सहारा ग्रुप की दोनों कंपनियों द्वारा उपलब्ध कराई जानकारी के जरिए उनका कोई पता नहीं लग पाने के कारण बंद कर दिए गए। सेबी ने आखिरी अपडेटिड जानकारी में 31 मार्च 2022 तक 17,526 आवेदनों से संबंधित कुल राशि 138 करोड़ रुपए बताई थी।

बाजार की तेजी बरकरार, 66 हजार अंक के करीब पहुंचा सेंसेक्स, इन शेयरों ने दिया सहारा

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। घरेलू शेयर बाजार में आज गुरुवार को भी तेजी का दौर जारी रहा। बाजार भले ही शुरुआती कारोबार में कुछ दबाव में था, लेकिन बाद में सेंसेक्स और निफ्टी दोनों वापसी करने में सफल रहे। कारोबार समाप्त होने के बाद सेंसेक्स 66 हजार अंक के स्तर के पास पहुंचकर बंद हुआ।सेंसेक्स सुबह मामूली 10 अंकों के नुकसान के साथ 65,665.87 अंक पर खुला था। कारोबार के दौरान यह एक समय 65,507.02 अंक तक गिर गया था, वहीं एक समय 66,358.37 अंक के उच्चतम स्तर तक भी पहुंचने में सफल रहा था। दिन का कारोबार समाप्त होने के बाद सेंसेक्स 306.55 अंक यानी 0.47 फीसदी की तेजी में रहा और 65,982.48 अंक पर बंद हुआ। इसी तरह निफ्टी 87.10 अंक यानी 0.44 फीसदी की बढ़त के साथ 19,762.55 अंक पर रहा।इससे पहले बुधवार को घरेलू बाजार में शानदार तेजी आई थी। बुधवार को बीएसई सेंसेक्स 742.06 अंक यानी 1.14 फीसदी उछलकर 65,675.93 अंक पर बंद हुआ था। निफ्टी भी 231.90 अंक यानी 1.19 फीसदी बढ़कर 19,675.45 अंक पर बंद हुआ था। दोनों प्रमुख सूचकांकों ने एक दिन पहले आई शानदार तेजी के क्रम को आज भी बरकरार रखा है।सेंसेक्स की कंपनियों को देखें तो आज ज्यादातर फायदे में रही हैं। कारोबार समाप्त होने के बाद सेंसेक्स के 30 शेयरों में 22 फायदे में रहे हैं, जबकि 4 को नुकसान के साथ बंद होना पड़ा है। सबसे ज्यादा फायदे में आज आईटी शेयर रहे और उन्होंने ही बाजार की रैली की अगुवाई की। टीसीएस सबसे ज्यादा करीब 3 फीसदी मजबूत हुआ। एचसीएल टेक, टेक महिंद्रा और इंफोसिस के शेयरों में 2.32 फीसदी से 2.82 फीसदी तक की तेजी आई। बजाज फाइनेंस करीब 2 फीसदी मजबूत हुआ। एनटीपीसी, महिंद्रा एंड महिंद्रा, बजाज फिनसर्व, विप्रो, टाटा मोटर्स जैसे शेयर भी अच्छे फायदे में रहे।

सरकार ने कच्चे तेल पर विंडफॉल टैक्स 3500 रुपये घटाया, डीजल पर भी कम की एडिशनल एक्साइज ड्यूटी

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। केंद सरकार ने आज कच्चे तेल पर कच्चे तेल पर विंडफॉल टैक्स में भारी कटौती कर दी है। क्रूड पेट्रोलिय ऑयल पर विंडफॉल टैक्स को 9800 रुपये प्रति टन से घटाकर 6300 रुपये प्रति टन कर दिया है, यानी पूरे 3500 रुपये प्रति टन की कटौती इसमें कर दी गई है। इसके अलावा सरकार ने डीजल पर भी स्पेशल एडिशनल एक्साइज ड्यूटी को घटाया है और इसे 2 रुपये प्रति लीटर से 1 रुपया प्रति लीटर कर दिया है।

सरकार की ओर से जारी हुआ नोटिफिकेशन

केंद्र सरकार की ओर से जारी नोटिफिकेशन में कहा गया है कि इन पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स के अलावा एटीएफ (एविएशन टरबाइन फ्यूल) और पेट्रोल पर विंडफॉल टैक्स शून्य बना रहेगा। इसमें कोई बदलाव नहीं किया गया है। सरकार हर दिन 15 दिनों मे विंडफॉल गेन टैक्स की दरों की समीक्षा करती है और ये फैसला ताजा समीक्षा में लिया गया है।

इससे पहले 31 अक्टूबर को बढ़ाया गया था विंडफॉल टैक्स

केंद्र सरकार ने 31 अक्टूबर की पिछली समीक्षा में पेट्रोलियम क्रूड के एक्सपोर्ट पर लगने वाले विंडफॉल टैक्स को 9050 रुपये प्रति टन से बढ़ाकर 9800 रुपये प्रति टन कर दिया था। पिछले दो हफ्तों में कच्चे तेल की कीमतों का क्या रुख रहा है, इसको देखकर केंद्र सरकार देश में कच्चे तेल के एक्सपोर्ट पर विंडफॉल टैक्स और निर्यात टैक्स की दरों को निर्धारित करती है।

कच्चे तेल की दरों में आई है कमी

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट आई है और ये फिर से 81 डॉलर प्रति बैरल के रेट पर आ गए हैं। ग्लोबल क्रूड ऑयल के रेट नीचे आने का असर घरेलू तेल कीमतों पर आता है। इसके चलते सरकार तेल कंपनियों के ऊपर पेट्रोल, डीजल, एटीएफ, क्रूड ऑयल आदि के लिए टैक्स की दरों में बदलाव करती है।

छठ से पहले सरकार का बड़ा तोहफा, कम हो गए एलपीजी सिलेंडर के दाम

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। देश के 4 बड़े महानगरों में एलपीजी गैस सिलेंडर की कीमत एक बार फिर कम हो गई हैं। सरकारी कंपनी इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन ने इन नई कीमतों को 16 नवंबर से ही लागू कर दिया है। छठ के त्योहार से ठीक पहले कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमतों में 50 रुपए से ज्यादा कमी आई है।दिल्ली महानगर में कमर्शियल सिलेंडर 57.50 रुपए सस्ता हुआ है। इसके बाद 19 किलोग्राम वाले नीले कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमत दिल्ली में 1775.50 रुपए हो गई है। जबकि 1 नवंबर को इसकी कीमत 1833 रुपए थी।

कोलकाता, मुंबई, चेन्नई में भी घटे दाम

इसी के साथ कोलकाता, मुंबई और चेन्नई में कमर्शियल गैस सिलेंडर सस्ता हुआ है। कोलकाता में इसकी कीमत अब 1885.50 रुपए, मुंबई में 1728 रुपए और चेन्नई में 1942 रुपए हो गई है। 1 नवंबर को कोलकाता में कमर्शियल सिलेंडर 1943 रुपए, मुंबई में 1785.50 रुपए और चेन्नई में 1999.50 रुपए थी।

15 दिन पहले ही बढ़े थे दाम

सरकार ने 15 दिन पहले यानी 1 नवंबर को ही कमर्शियल गैस सिलेंडर के दाम में 101.50 रुपए की बढ़ोतरी की थी। जबकि उससे पहले अक्टूबर में कमर्शियल गैस सिलेंडर दिल्ली में 1731.50 रुपए, कोलकाता में 1839.50 रुपए, मुंबई में 1684 रुपए और चेन्नई में 1898 रुपए का था।

घरेलू सिलेंडर मिल रहा इतने का

हालांकि लाल रंग वाले घरेलू एलपीजी गैस सिलेंडर के दाम अगस्त के महीने से नहीं बदले हैं। हालांकि अब सरकार इस पर 200 रुपए की सब्सिडी दे रही है। इसलिए दिल्ली में 14.2 किलोग्राम वाले गैस सिलेंडर की कीमत 903 रुपए, कोलकाता में 929 रुपए, मुंबई में 902.50 रुपए और चेन्नई में 918.50 रुपए है। घरेलू रसोई गैस सिलेंडर की कीमतों में इससे पहले बदलाव मार्च 2023 में हुआ था।

ईशा अंबानी की नियुक्ति पर आरबीआई की मुहर, लेकिन 6 महीने में ही करना होगा ये काम

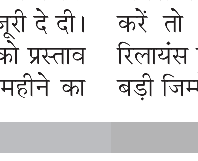

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। रिलायंस समूह की फाइनेंशियल कंपनी जियो फाइनेंशियल सर्विसेज के एक प्रस्ताव पर रिजर्व बैंक ने मुहर लगा दी है। इसके साथ ही फाइनेंस कंपनी में ईशा अंबानी के डाइरेक्टर बनने का रास्ता साफ हो गया है। आरबीआई ने ईशा अंबानी के अलावा अंशुमन ठाकुर और हितेश कुमार सेठिया को भी जियो फाइनेंशियल में डाइरेक्टर नियुक्त करने की मंजूरी दे दी है।जियो फाइनेंशियल सर्विसेज ने ईशा अंबानी, अंशुमन ठाकुर और हितेश कुमार सेठिया को डाइरेक्टर बनाने के संबंध में सेंट्रल बैंक को प्रस्ताव भेजा था। रिजर्व बैंक ने कंपनी के प्रस्ताव को 15 नवंबर को मंजूरी दे दी। सेंट्रल बैंक की तरफ से कंपनी को प्रस्ताव पर अमल करने के लिए छह महीने का समय दिया गया है। छह महीने के अंदर प्रस्ताव पर अमल नहीं करने की स्थिति में कंपनी को फिर से अप्लाई करना पड़ जाएगा।सेंट्रल बैंक ने अपने लेटर में कहा है कि ईशा अंबानी, अंशुमन ठाकुर और हितेश कुमार सेठिया को जियो फाइनेंशियल सर्विसेज में डाइरेक्टर बनाने के लिए दी गई ये मंजूरी छह महीने के लिए वैध है। अगर कंपनी समयसीमा के अंदर प्रस्ताव पर अमल करने में असफल रहती है तो उसे फिर से आवेदन करना होगा। साथ ही कंपनी को ये भी बताना होगा कि वह तय समय के भीतर अपने प्रस्ताव पर क्यों अमल नहीं कर पाई।ईशा अंबानी की बात करें तो उन्हें हालिया सालों के दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज की विभिन्न कंपनियों में बड़ी जिम्मेदारियां दी गई हैं।

शादियों के सीजन से पहले महंगा हुआ सोना

चांदी में दिखी मामूली गिरावट, आज के भाव

फेस्टिव सीजन के बाद से भारत में शादियों के सीजन की शुरुआत होने जा रही है। इस दौरान लोग जमकर सोना और चांदी की खरीदारी करते हैं। अगर आप भी आज गोल्ड और सिल्वर की शॉपिंग करने के बारे में सोच रहे हैं तो जान लें कि सोना बढ़त पर और चांदी गिरावट के साथ कारोबार कर रही है। गुरुवार को मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज यानी वायदा बाजार में सोना 60,148 रुपये प्रति 10 ग्राम पर खुला है। वहीं सुबह 11.30 मिनट तक सोना 64 रुपये यानी 0.11 फीसदी बढ़त के साथ 60, 175 रुपये पर कारोबार (कर रहा है। वहीं कल सोना 60,111 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बंद हुआ है।

चांदी हुई सस्ती

सोने के अलावा चांदी की बात करें तो इसमें आज उतार-चढ़ाव देखा जा रहा है। वायदा बाजार में चांदी 72,174 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर खुली है। इसके बाद इसकी कीमत में कुछ बढ़त दर्ज की गई है और यह सुबह 11.30 बजे तक कल के मुकाबले 37 रुपये यानी 0।05 फीसदी सस्ती होकर 72,335 रुपये किलोग्राम के स्तर पर बनी हुई है। वहीं बुधवार को यह 70,372 रुपये के स्तर पर बंद हुई है।

16 नवंबर 2023 को प्रमुख शहरों के सोने-चांदी के रेट-

दिल्ली- 24 कैरेट गोल्ड 61,190 रुपये प्रति 10 ग्राम, सिल्वर 75,000 रुपये प्रति किलोग्राम
कोलकाता- 24 कैरेट गोल्ड 61,040 रुपये प्रति 10 ग्राम, सिल्वर 75,000 रुपये प्रति किलोग्राम चेन्नई- 24 कैरेट गोल्ड 61,470 रुपये प्रति 10 ग्राम, सिल्वर 78,000 रुपये प्रति किलोग्राम मुंबई- 24 कैरेट गोल्ड 61,040 रुपये प्रति 10 ग्राम, सिल्वर 75,000 रुपये प्रति किलोग्राम जयपुर- 24 कैरेट गोल्ड 61,190 रुपये प्रति 10 ग्राम, सिल्वर 75,000 रुपये प्रति किलोग्राम नोएडा- 24 कैरेट गोल्ड 61,190 रुपये प्रति 10 ग्राम, सिल्वर 75,000 रुपये प्रति किलोग्राम पुणे- 24 कैरेट गोल्ड 61,040 रुपये प्रति 10 ग्राम, सिल्वर 75,000 रुपये प्रति किलोग्राम गाजियाबाद- 24 कैरेट गोल्ड 61,190 रुपये प्रति 10 ग्राम, सिल्वर 75,000 रुपये प्रति किलोग्राम पटना- 24 कैरेट गोल्ड 61,090 रुपये प्रति 10 ग्राम, सिल्वर 75,000 रुपये प्रति किलोग्राम लखनऊ- 24 कैरेट गोल्ड 61,190 रुपये प्रति 10 ग्राम, सिल्वर 75,000 रुपये प्रति किलोग्राम।

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

श्री पिंगल नामक संवत्सर-विक्रम संवत्- 2080
शक संवत् -1945, सूर्य - दक्षिणायने ,ऋतु- हेमन्त
महावीर निर्वाण संवत् -2550,हिजरी सन् -1444
कलियुग अवधि-432000
सूर्योदय - 06-25
सूर्यअस्त - 17-36
भोग्य कलि वर्ष-426876
कलियुग संवत् -5124 वर्ष,
कल्पारंभ संवत् -1972949124
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-1955885124
दिशाशूल -- पश्चिम - दही खाकर घर से निकले
तिथि- चतुर्थी- 11 -03- तक उपरान्त पंचमी
मास - कार्तिक शुक्ल पक्ष , शुक्रवार 17 November
नक्षत्र - पूर्वाषाढा - 01- 17 - राततक उपरान्त उ.षाढा
योग - धृति - 07 - 35 - तक उपरान्त शूल
करण- विष्टि - 11 -03 - तक उप- बव
विशेष:-
व्रत -त्योहार - भद्रा-11-03 तक

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य-	तुला में	वृश्चिक.	06-25 बजे
चंद्र-	धनु में	धनु.....	08-38 बजे
मंगल	तुला में	मकर..	10-44 बजे
बुध-	वृश्चिक पें	कुंभ...	12-35 बजे
गुरु-	मेष में	मीन --	14-12 बजे
शुक्र-	कन्या पें	मेष--	15-49 बजे
शनि-	कुंभ में	वृष--	17-34 बजे
राहु-	मीन में	मिथुन..	19-34 बजे
केतु-	कन्या में	कर्क...	21-46 बजे
		सिंह....	23-59 बजे
		कन्या..	02-05 बजे
		तुला....	04-14 बजे

विशेष:- राशिफल ग्हों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश क लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

राहुकाल 10:36 से 12:01 तक

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र Hyd,Sec

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
चंचल	06:25 - 07:47	शुभ	रोग.	17:36 - 19:14	अशुभ
लाभ	07:47 - 09:12	शुभ	काल.	19:14 - 20:50	अशुभ
अमृत	09:12 - 10:36	शुभ	लाभ	20:50 - 22:26	शुभ
काल.	10:36 - 12:01	अशुभ	उत्पात	22:26 - 24:01	अशुभ
शुभ.	12:01 - 13:25	शुभ	शुभ	24:01 - 01:37	शुभ
रोग	13:25 - 14:50	अशुभ	अमृत.	01:37 - 03:12	शुभ
उत्पात	14:50 - 16:14	अशुभ	चंचल.	03:12 - 04:48	शुभ
चंचल	16:14 - 17:36	शुभ	रोग.	04:48 - 06:25	अशुभ

आपका राशिफल

मेष चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,
इस बात के लिए अधिक सोच विचार ना करें कि अप्रत्याशित घटनाएँ क्यों हो रही हैं या बहुत देर क्यों हो रही है ? ये आपके भले के लिए भी हो सकता है जिसके फायदे अभी आपको दिखाई नही दे रहे हैं । अपनी बेहतरीन परफॉरमेंस देने के लिए कुछ नया प्रयोग करें । इससे आपको भी अपने रोजमर्रा के नियमित कार्यक्रम से थोड़ी राहत मिलेगी ।

वृष ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,
अगर कुछ लोग आपको नहीं समझ पा रहें हैं तो उन्हें अपना हरेक काम समझाने में अपना समय और ऊर्जा बर्बाद ना करें । वे कभी नही मानेंगे । आप काफी व्यस्त रहेंगे लेकिन आपको आने वाली जरूरतों के कारण पहले वाली योजनाओं में भी कुछ बदलाव करने पड सकते हैं । स्थिति की मांग के अनुसार कार्य करें ।

मिथुन का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,
किसी भी काम को तुरंत तैयार होकर शुरू करने से पहले गंभीरता से तर्क की कसौटी पर परख लेना ही ठीक होगा ।आपके लिए कल्पनात्मक सा समय है । इसीलिए रोमांस का आनंद लें । रोमांस में कल्पना लाने से आपके लिए अच्छा होगा लेकिन अगर आप ऑफिस में भी यही करने की कोशिश करेंगे तो परिणाम अच्छे नही होंगे ।

कर्क ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,
आपकी वर्तमान जिंदगी में काफी उतार चढाव आ रहे हैं । लेकिन आपको उनसे जल्दी ही छुटकारा मिलने वाला है । अपना नजरिया हमेशा की तरह सकारात्मक बनाये रखें,स्थिति जल्दी ही बेहतर होगी । लोग आपसे सहायता मांगेंगे और आप उनकी सहायता में व्यस्त होकर अपनी चिंताएं भूल जायेंगें ।

सिंह मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,
अपने जीवन पर नियंत्रण रखें और और सब के कहने या कुछ करने की कोई भी परवाह ना करें । इसके स्थान पर आराम से खुद की इच्छाओं और आवश्यकताओं को समझने की कोशिश करें और उन का विश्लेषण करें ताकि किसी स्पष्ट निष्कर्ष पर पहुंच सकें । इस बात का विशेष ध्यान रखें की आपके फैसले से ऐसी किसी व्यक्ति को दुःख न हो जो आप पर भावनात्मक रूप से निर्भर है।

कन्या टो, पा, पी, पू ,ष, ण, ठ, पे ,पो,
आज आप बारीकियों पर बहुत ध्यान देंगे । आप किसी परियोजना की ब्योरेवार योजना बनाने में जुटे हुए हैं और आप इस पर बहुत मेहनत भी कर रहे हैं ।आपकी यह मेहनत आपके काम में भी दिखाई देगी और इस काम के लिए आपको काफी तारीफ मिलेगी । आपके काम में आज पूरा दिन सृजनात्मकता बनी रहेगी ।

तुला रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,
आज आप जिद्दीपन के प्रति अपना स्वाभाविक झुकाव महसूस करेंगे । लेकिन जब आपको यह अनुभव होगा की ऐसा करना आपके हित में नही है तो आप पछतावा भी महसूस करेंगे । अच्छे से स्थिति समझें,आकस्मिक भावनाओं के बहाव में बहने के स्थान पर स्पष्ट सोच से काम लें । अगर आप थोड़ी सी समझदारी से काम लेंगे तो समाधान जल्दी निकलेगा और आपको जल्दी ख़ुशी मिलेगी ।

वृश्चिक तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,
आज का दिन आपके लिए विशेष रूप से अच्छा है । आप अपना कुछ नया शुरू कर सकते हैं ,काफी समय लेने वाला अपना कोई अधूरा काम पूरा कर सकते हैं ,या कोई ऐसा काम जिसे आप लम्बे समय से टाल रहे हैं,को भी शुरू कर सकते हैं। आज शाम खेल और मौज मस्ती के नाम रहेगी । अपने नए-पुराने दोस्तों के साथ समय बितायें और मजे करें । खरीदारी में विशेष आनंद आएगा ।

धनु ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे
आपकी शांतिपूर्ण मन स्थिति में औरों के सवालों से बाधा पहुचेगी । वे सब यह जानने के लिए बहुत उत्सुक हैं कि आपकी निजी और व्यव्सायिक जिंदगी में क्या चल रहा है । आपके किसी करीबी ने ही उन लोगों तक आपकी भविष्य की योजनाओं की जानकारी पहुचाई है लेकिन आप इन सबकी उपेक्षा कर दें और केवल अपने काम पर ध्यान दें ।

मकर भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी
आप पिछले कुछ दिनों से काफी व्यस्त दिनचर्या बिता रहे हैं । अब सारी चीजों को व्यवस्थित करने का समय है । आज आपको तुलनात्मक रूप से थोड़ी राहत मिलेगी,लेकिन आपको इस समय का उपयोग अपनी सब चीजों को व्यवस्थित करने में लगाना चाहिए । नही तो सब कुछ और अधिक उलझता जाएगा और आप स्थिति के नियंत्रण से बाहर होने के कारण और भी अधिक परेशान रहेंगे ।

कुंभ गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,
आप पिछले कुछ समय से उपेक्षित महसूस कर रहे हैं लेकिन आज आप पर सबका ध्यान आएगा । लाइमलाइट आप पर रहेगी और आप आसानी से इस अवसर का लाभ उठाकर खुद को साबित कर पायेंगे । यह किसी नए दोस्त के मिलने,पुराने के सामने आने या कार्यस्थल की किसी स्थिति से सम्बंधित भी हो सकता है ।

मीन दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची
आपके अफसर आपसे पुरानी रंजिश निकालने के लिए आपके काम में देर कर सकते हैं । आप इसके कारण बहुत चिंता करेंगे,क्योकि इससे न केवल आपकी वर्तमान स्थिति बल्कि आगे आने वाली योजनायें भी प्रभावित होंगी । इस समय अपनी घरेलू खुशियों के कारण खुश रहें क्योंकि इससे आपको नया उत्साह मिलेगा ।

पं. महेशचन्द्र शर्मा 9247132654, 8309517693

35 दिन में कांग्रेस-बीजेपी के नेताओं ने ली 76 सभाएं

सीएम भूपेश ने 25, अमित शाह ने 11 सभाओं में भाषण देकर मांगा वोट

रायपुर, 16 नवंबर (एक्सक्लूसिव डेस्क)। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण का मतदान 17 नवंबर को होगा। दूसरे चरण के मतदान में 958 प्रत्याशी मैदान में उतरकर अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। इन प्रत्याशियों की किस्मत एक करोड़ 63 लाख 14 हजार 479 मतदाता तय करेंगे।

छत्तीसगढ़ में बीजेपी पीएम नरेंद्र मोदी के चेहरे को आगे करके चुनाव लड़ रही है। बीजेपी नेता अमित शाह, योगी आदित्यनाथ, डॉ. रमन सिंह और हिमंत बिस्वा सरमा लगातार रैलियों को संबोधित कर बीजेपी के पक्ष में माहौल तैयार करने का प्रयास कर रहे हैं।

प्रदेश में कांग्रेस की सत्ता दोबारा लौटे, इसलिए कांग्रेस नेताओं ने भी स्टार प्रचार की फौज खड़ी कर दी है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे, सीएम भूपेश बघेल और कांग्रेस नेत्री कुमारी सैलजा सभाओं में शामिल होकर भूपेश सरकार के पांच साल के कामों का प्रचार प्रसार करके मतदाताओं से प्रदेश में कांग्रेस सरकार बनाने की अपील कर रहे हैं। केंद्रीय चुनाव आयोग ने 9 अक्टूबर को छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव की घोषणा हुई थी। इस घोषणा के बाद बीजेपी, कांग्रेस समेत अन्य राजनैतिक दल इलेक्शन मोड में चले गए। बीजेपी के नेता भूपेश सरकार के कथित घोटालों का खुलासा करके प्रदेश में सत्ता वापसी की कोशिश कर रही है। वहीं कांग्रेस अपने कार्यकाल की योजनाओं और घोषणा पत्र में किए गए वादों का प्रचार प्रसार करके सत्ता वापस लाने की कोशिश कर रहे है। भाजपा की तुलना अडानी से की। आदिवासियों और युवाओं को एक साथ साधने के लिए उन्होंने 2 बड़ी घोषणाएं की। केजी से पीजी तक शिक्षा, तेंदूपत्ता तोड़ने वालों को प्रोत्साहन राशि समेत अन्य घोषणा।

बीजेपी के 15 साल की नाकामी के साथ अडानी और उद्योगपति पर टागेट किया। आदिवासियों के फर्जी एनकाउंटर करने का आरोप लगाया। नगरनार प्लांट के निजीकरण की भाजपा ने तैयारी कर ली है।

धर्मांतरण पर कांग्रेस सरकार को घेरा, कांग्रेस पर खनिज घोटाले का आरोप लगाया। योगी आदित्यनाथ ने अपने भाषण में कहा, कि छत्तीसगढ़ की सरकार रामनवमी के उत्सव पर लाठीचार्ज करवाती है। दूसरी तरफ लव जिहाद के उपद्रवियों को संरक्षण देते हुए उन्हें प्रोत्साहित करने का काम करती है। भाजपा पर जुमलेबाजी का आरोप लगाया। कांग्रेस सरकार की उपलब्धियां और घोषणा पत्र बताकर सरकार दोबारा बनाने की अपील की। भूपेश सरकार पर धर्मांतरण कराने और घोटाला करने का आरोप लगाया। सीएम भूपेश के बयानों को जेल का नंबर बताने की बात कही।

बिल्हा, भिलाई, राजनांदगांव, बैकुंठपुर, कांकेर, बस्तर, चंद्रपुर, सुकमा, भानुप्रतापपुर, बिलासपुर, जगदलपुर, कोंडगांव, कवर्धा, मोहला मानपुर, बेमेतरा, चंद्रपुर, विश्रामपुर, दुर्ग खुज्जी।

महादेव सट्टा पर कांग्रेस और सीएम भूपेश बघेल को घेरा, पीएससी घोटाला, ट्रांसफर घोटाला समेत दर्जनों आरोप लगाए और बीजेपी के घोषणाओं को मंच से दोहराकर सरकार बनाने की अपील की।

बिरनपुर हिंसा का जिक्र करके ध्रुवीकरण की कोशिश, भ्रष्टाचार पर भूपेश और गांधी परिवार को घेरा, बीजेपी सरकार आने पर हम पाई-पाई उनसे वसूलेंगे और उल्टा लटकाने की बात कही।

प्रदेश में इन राजनेताओं ने ली इतनी सभाएं

छत्तीसगढ़ में अपनी पार्टी की सरकार बनाने के लिए कांग्रेस-बीजेपी के नेताओं ने पूरी शिद्दत के साथ अपनी पार्टियों को प्रचार किया है और विपक्ष पर आरोपों की बौछार की है। आचार संहिता लगने के बाद प्रदेश में प्रचार करने वालों में पीएम नरेंद्र मोदी, बीजेपी नेता अमित शाह, बीजेपी नेत्री स्मृति ईरानी, बीजेपी नेता रमन सिंह, कांग्रेस नेता राहुल गांधी, अमित शाह, प्रियंका गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे शामिल है। आचार संहिता उल्लंघन करने और विवादित बयान देने में आयोग ने प्रत्याशियों और राजनेताओं को नोटिस भी जारी किया है।

पहली बार जूदेव खिलाएंगे कमल या बरकरार रहेगा रेणु जोगी का जादू?

रायपुर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। बिलासपुर जिले की कोटा विधानसभा सीट छत्तीसगढ़ के सियासी इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। हर बार की तरह इस बार भी यह सीट वीआईपी हाई प्रोफाइल बनी हुई है। साल 2023 के चुनाव में कोटा से भाजपा प्रत्याशी प्रबल प्रताप सिंह जूदेव के सामने कांग्रेस प्रत्याशी अटल श्रीवास्तव हैं। यही से वर्तमान विधायक और जेसीसीजे के संस्थापक अजीत जोगी की पत्नी रेणु जोगी भी चुनाव मैदान में हैं। प्रबल प्रताप सिंह जूदेव बीजेपी के दिग्गज नेता रहे दिलीप सिंह जुदेव के बेटे हैं। इस वजह से कोटा में इस बार चुनावी घमासान है। यहां पर त्रिकोणीय मुकाबला है।

कोटा सीट कांग्रेस का गढ़ मानी जाती है। बीजेपी यहां से कमल खिलाने के लिए जद्दोजहद कर रही है। प्रबल प्रताप सिंह के सामने कोटा से कमल खिलाने की चुनौती है, तो रेणु जोगी के सामने चौथी बार इस सीट को बचाए रखने की जद्दोजहद है। वहीं अटल श्रीवास्तव की प्रतिष्ठा दांव पर लगी हुई है।

कोटा विधानसभा क्षेत्र की स्थापना 1965 को हुई थी। इस सीट से कांग्रेस जीतती आ रही है। यह छत्तीसगढ़ के प्रथम मुख्यमंत्री अजीत जोगी की पत्नी डॉ. रेणु जोगी की सीट हैं। आजादी के बाद जब से कोटा विधानसभा अस्तित्व में आया तब से यहां कांग्रेस का ही कब्जा रहा है। इस रिकॉर्ड को पहली बार पिछले विधानसभा चुनाव कांग्रेस पार्टी से निकलीं रेणु जोगी ने तोड़ा और कोटा विधानसभा पर पहली बार किसी अन्य दल ने कब्जा किया।

बीजेपी की इतिहास बदलने की जंग

बीजेपी ने इस बार कोटा से प्रबल प्रताप सिंह जूदेव को मौका दिया है ताकि चुनावी मुकाबला जोगी बनाम जूदेव रहे। हालांकि यहां पर त्रिकोणीय मुकाबला रहेगा, लेकिन बीजेपी दो ध्रुवीय मुकाबले में कांग्रेस डैमेज करना चाहती है पर कांग्रेस की ताकत उसका इतिहास और उनके कैडर वोटर्स हैं।

विधानसभा चुनाव 2018 का परिणाम

विधानसभा चुनाव 2018 के परिणाम की बात करें, तो पिछली बार जेसीसीजे प्रत्याशी रेणु जोगी को सर्वाधिक 48,800 वोट मिले थे। वोटों का प्रतिशत 32.77 रहा। 45,774 वोट के साथ दूसरे नंबर पर बीजेपी के काशीराम साहू को संतोष करना पड़ा। कांग्रेस से 30,803 मतों के साथ विभोर सिंह तीसरे नंबर पर थे।

दो गुटों के बीच झड़प

ईंट-पत्थर भी चले, एसआई समेत दो पुलिसकर्मी घायल

गोड्डा, 16 नवंबर (एजेंसियां)। झारखंड के गोड्डा जिले में दो समूहों के बीच झड़प हो गई। इस दौरान दोनों गुटों के बीच ईंट-पत्थर भी चले। बवाल के दौरान एक उपनिरीक्षक समेत दो पुलिसकर्मी घायल हो गए। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि यह घटना बुधवार रात टाउन थाना क्षेत्र के पथरा चौक पर मूर्ति विसर्जन जुलूस के दौरान हुई।

उन्होंने बताया कि जब पुलिस टीम स्थिति को नियंत्रण में करने के लिए मौके पर पहुंची तो एक ही समुदाय के दो समूहों के बीच ईंट-पत्थर चलने लगे। एसपी नाथू सिंह मीना ने कहा कि दोनों समूहों ने पुलिसकर्मियों पर हमला किया और पुलिस वाहनों को भी क्षतिग्रस्त कर दिया।

उन्होंने बताया कि टाउन पुलिस थाने के प्रभारी मधुसूदन मोदक को मामूली चोटें आईं, जबकि उप-निरीक्षक उमेश मोदी को सिर में चोट आई है। उन्होंने बताया कि एसआई का अस्पताल में इलाज किया गया। घटना जमीन के एक टुकड़े को लेकर दो गांवों के निवासियों के बीच विवाद की वजह से हुई। मामले में तीन प्राथमिकियां दर्ज की गई हैं और दोषियों को पकड़ने के लिए बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान शुरू किया गया है।

छत्तीसगढ़ में दूसरे चरण के मतदान पर मिलेगी छुट्टी

सरकारी और प्राइवेट जॉब वालों के लिए भी अवकाश, बिना वोटर आईडी भी दे पाएंगे वोट

रायपुर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव 2023 के मद्देनजर छुट्टी का आदेश जारी किया गया है। 17 नवंबर को जहां वोटिंग होनी है उन संबंधित क्षेत्रों में प्रशासन ने सामान्य अवकाश की घोषणा की है। छत्तीसगढ़ सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा जारी आदेश के तहत 70 विधानसभा क्षेत्रों में सभी शासकीय कार्यालयों, संस्थानों में सामान्य अवकाश घोषित किया गया है।

आदेश में साफ किया गया है कि निजी संस्थानों,औद्योगिक और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में अधिकारी, कर्मचारियों को सवैतनिक (सैलरी न काटी जाए) अवकाश दिए जाएंगे। लोगों को ज्यादा से ज्यादा वोटिंग से जोड़ने के लिए ऐसा आदेश जारी किया गया है। लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 151 की धारा 135 (ख) के तहत ये आदेश जारी हुआ है। प्रदेश में ऐसे कर्मचारी भी हैं जो दूसरे प्रदेशों से आकर काम कर रहे हैं। निर्वाचन आयोग के निर्देश के मुताबिक छत्तीसगढ़ के पड़ोसी राज्य मध्यप्रदेश, तेलंगाना जहां विधानसभा चुनाव के लिए वोटिंग 17 नवंबर और 30 नवंबर

को होनी है। वहां जाने के लिए कर्मचारियों को छुट्टी दी जाएगी। उनकी सैलरी नहीं काटी जाएगी।

कारखानों के लिए ये है निर्देश

आदेश में स्पष्ट किया गया है कि ऐसे कारखाने जहां सप्ताह में सातों दिन कार्य होते हैं वहां प्रथम एवं द्वितीय पाली के श्रमिकों को मतदान के दिन दो-दो घंटे का अवकाश घोषित किया जाए और जो कारखाने निरंतर प्रक्रिया के अंतर्गत आते हैं, उनमें काम करने वाले श्रमिकों को बारी -बारी से मतदान करने की सुविधा प्रदान की जाए। मतदान की सुविधा समस्त कार्यरत श्रमिकों या कर्मचारियों चाहे वे दैनिक वेतनभोगी हो या आकस्मिक श्रमिक हो उनको प्रदान किया जाएगा। भारत निर्वाचन आयोग ने 12 ऑप्शनल आईडी वोट के लिए वैलिड किए हैं। आधार कार्ड, मनरेगा जॉब कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, भारतीय पासपोर्ट, फोटोयुक्त पेंशन दस्तावेज, केंद्र/राज्य सरकार/लोक उपक्रम/पब्लिक लिमिटेड कंपनियों द्वारा अपने कर्मचारियों को जारी किए गए फोटोयुक्त सेवा पहचान पत्र।

बैंकों/डाकघरों द्वारा जारी फोटोयुक्त पासबुक, एनपीआर के अंतर्गत आरजीआई द्वारा जारी स्मार्ट कार्ड, श्रम मंत्रालय की योजना के अंतर्गत जारी स्वास्थ्य बीमा स्मार्ट कार्ड, सांसदों/विधायकों/विधान परिषद सदस्यों को जारी किए गए सरकारी पहचान पत्र और भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा दिव्यांगजनों को जारी यूनिक डिसएबिलिटी आईडी (यूडीआईडी) कार्ड को दिखाकर वो वोट कर पाएंगे। अगर मतदान केंद्र पहुंचने पर ये स्थिति बने कि आपके नाम पर कोई और वोट कर गया तो भी आप वोट कर पाएंगे। मतदान केंद्र पर मौजूद अधिकारी आपकी पहचान सुनिश्चित करेंगे। आईडी फोटो और जानकारी को जांचा जाएगा, यह तय होने पर कि आप ही असल वोटर हैं आपको अधिकारी खुद टेंडर वोट की सुविधा देंगे। इसमें बैलेट पेपर से मतदान किया जाता है। नहीं, वोटिंग के दौरान लिस्ट को देखकर पोलिंग बूथ के अंदर यह सुनिश्चित किया जाता है कि वोट देने वाला व्यक्ति वही है। इसके बाद भी अगर कोई व्यक्ति किसी और के नाम से वोट देकर चला जाए तो उसका वोट रद्द नहीं किया जा सकता, क्योंकि मशीन यह नहीं बताती कि किस व्यक्ति ने किसे वोट दिया, इसीलिए वह वोट कैंसिल नहीं हो पाता।

झारखंड विधानसभा की 23वीं वर्षगांठ

बॉलीवुड सिंगर जावेद अली और गजल गायक कुमार सत्यम की होगी प्रस्तुति, 10वीं-12वीं के टॉपर्स होंगे सम्मानित

रांची, 16 नवंबर (एजेंसियां)। 23 नवंबर को झारखंड विधानसभा अपना 23वां स्थापना दिवस मनाने जा रहा है। इस बार का स्थापना दिवस काफी खास होने वाला है। स्थापना दिवस कार्यक्रम की शुरुआत दिन के 11 बजे से होगी। वहीं सांस्कृतिक कार्यक्रम में बॉलीवुड सिंगर जावेदन अली और गजल गायक कुमार सत्यम की प्रस्तुति होगी। कार्यक्रम की रूपरेखा लगभग तैयार हो चुकी है। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के क्रम में फिल्मी गानों के साथ-साथ हास्य भी होगा। हास्य कलाकार रविंद्र सोनी भी अपनी प्रस्तुति देंगे।

झारखंड विधानसभा स्थापना दिवस कार्यक्रम की शुरुआत 23 नवंबर को दिन के 11 बजे से होगी। पूरा कार्यक्रम दो हिस्सों में होगा। पहले हिस्से में उत्कृष्ठ विधायक को सम्मान दिया जाएगा। इसके बाद झारखंड के कुछ पुलिस कर्मियों और जवानों को पुरस्कृत किया जाएगा। इनका चयन देश की सीमा पर वीरता दिखाने, नक्सल अभियानों में उनकी कर्तव्यनिष्ठा और शांतिकाल में वीरता प्राप्त करने से किया गया है। कार्यक्रम में राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सहित तमाम विधायक, मंत्री मौजूद रहेंगे।

विधानसभा से मिली जानकारी के अनुसार अब तक जो कार्यक्रम तय हुआ है, उसके अनुसार स्थापना दिवस कार्यक्रम के दौरान बोर्ड की परीक्षा में टॉप करने वालों को भी सम्मानित किया जाएगा। वहीं सामाजिक क्षेत्र में योगदान देने वाले राष्ट्रपति पदक से सम्मानित और चंद्रयान-3 मिशन में झारखंड के शामिल राज्य के वैज्ञानिकों को भी सम्मानित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त त्रैमासिक पत्रिका उड़ान समेत अन्य पुस्तकों का विमोचन होगा। कार्यक्रम को उत्कृष्ट विधायक, मुख्य सचेतक, नेता प्रतिपक्ष, संसदीय कार्यमंत्री आदि संबोधित करेंगे।

भाजपा-कांग्रेस कार्यकर्ताओं में मारपीट

थाने में घुसे मूणत-विकास समर्थक भिड़े, टेबल पर चढ़े सीएसपी, बैरनबाजार बस्ती में पैसे बांटने पर विवाद

रायपुर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। मतदान से एक दिन पहले बुधवार रात रायपुर में खूब हंगामा हुआ। कहीं पैसे बांटने, तो कहीं पोस्टर फाड़ने की बात को लेकर कांग्रेस और भाजपा के लोग भिड़ गए मारपीट भी हुई। थाने में घुसकर दोनों ही दलों के लोगों ने जमकर हंगामा मचाया। घटना पर राजेश मूणत बोले भाजपा कार्यकर्ता की हत्या करने का प्रयास किया गया। कांग्रेस ने लोकतंत्र के महापर्व की मूल भावना को नष्ट करने प्रयास में कोई कमी नहीं छोड़ी।

बता दें कि पहला मामला रायपुर के सरस्वती नगर थाने से जुड़ा है। कोटा इलाके की बस्ती में चुनाव प्रचार थमने के बाद भी प्रचार को लेकर विवाद हुआ। नेताओं के पोस्टर फाड़े गए। इन्हीं बातों को लेकर भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस के कार्यकर्ताओं में मारपीट हुई। अपनी शिकायतें लेकर भाजपा-कांग्रेस के कार्यकर्ता

सरस्वती नगर थाने पहुंचे यहां भी भिड़ गए। थाने में बवाल बढ़ता देखकर आस-पास के चार थानों से थानेदार बुलाए गए। आईटीबीपी के हथियारबंद जवानों को थाने के बाहर तैनात किया गया पुलिस की मशक्कत के बावजूद कांग्रेस और बीजेपी के लोग थाने के भीतर घुस गए। रात करीब 2 बजे भाजपा के कार्यकर्ता विकास उपाध्याय के खिलाफ और कांग्रेस के कार्यकर्ता राजेश मूणत के खिलाफ थाने के भीतर नारे लगाने लगे, एक दूसरे के साथ झूमा-झटकी करने लगे।

बवाल के बीच थाने में ही मौजूद आजाद चौक इलाके के सीएसपी मयंक गुर्जर टेबल पर चढ़ गए, जैसे तैसे कार्यकर्ताओं को थाने से बाहर निकला गया। दोनों पक्षों की शिकायत ली गई और कार्रवाई का भरोसा देने के बाद मामला शांत हुआ। भाजपा नेता प्रफुल्ल विश्वकर्मा ने दैनिक भास्कर को बताया- शशांक सिंह ठाकुर भाजपा के कार्यकर्ता हैं वो घर जा रहे थे। प्रचार थमने के बाद भी कांग्रेस के लोग पोस्टर लगा रहे थे। शशांक ने मना किया कि प्रचार बंद हो चुका है तो उसे कांग्रेस के लोगों ने गालियां दी, मारपीट की। कांग्रेस के लोगों ने गुंडागर्दी की। हमने ऐसे गुंडों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है। कांग्रेस नेता सुबोध हरितवाल ने बताया कि कांग्रेस के कार्यकर्ता भरत यादव और केके कोठारी ने देखा कि भाजपा के लोग शराब और साड़ी बांट रहे थे, विकास उपाध्याय के पोस्टर फाड़ रहे थे। विरोध किया तो भाजपा के लोगों ने मारपीट की।

इस वजह से हम थाने आए और पुलिस को शिकायत दी है, कार्रवाई की मांग की है।

सीएमडी केएस मूर्ति बोले- एचईसी सरकार के भरोसे नहीं, हम सभी के प्रयास से अपने बूते बढायेंगे आगे, जल्द ही बदलेगी सूरत

हटिया, 16 नवंबर (एजेंसियां)। एचईसी बचाओ जनसंघर्ष मजदूर समिति के पदाधिकारियों के साथ बुधवार को एचईसी के सीएमडी केएस मूर्ति के कार्यालय में बैठक हुई। मौके पर सीएमडी केएस मूर्ति ने समिति से कहा कि एचईसी अपने बूते खड़ी होगी। हम सब मिलकर संस्थान को फिर से खड़ा करेंगे।

इसके लिए सरकार के भरोसे रहने के बजाए कैसे चीजें सुधरें, इस पर ध्यान देना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि सरकार जो कहेगी, वह तो हमें करना है। लेकिन हमारा काम सरकार को निर्देशित करना नहीं है। हमें हर क्षेत्र को देखकर पूंजी इकट्ठा कर उत्पादन के लिए रॉ मेटेरियल का जुगाड़ करना है। आप अपने लोगों को उत्पादन के लिए उत्प्रेरित करें।

चेयरमैन ने कहा कि एचईसी चलाने के लिए वे पॉजिटिवली काम करेंगे। छोटे-छोटे कलेक्शन को जमा कर बंद मशीनों को चालू कराया जाएगा। रेवेन्यू कलेक्शन कर अपने दम पर एचईसी खड़ा करना हम सबों का दायित्व है। उपक्रम में कोई अफसर-कर्मी अलग-अलग होने की बात नहीं होनी चाहिए। हम सभी एक समान हैं। बकाया पेमेंट, वेंडर भुगतान, प्रोडक्शन, मेडिकल सुविधाएं समेत समिति की अन्य सभी समस्याओं पर उनका ध्यान है, सारी चीजें ठीक होंगी।

सीएमडी ने कहा कि एचईसी में बहुत क्षमता है। लेकिन उस क्षमता का उपयोग नहीं हो रहा है। उत्पादन आवश्यक है। बिना उत्पादन किये कर्मचारियों का वेतन भुगतान कैसे होगा। काम करने के लिए फंड कहां से आएगा, यह हम देखेंगे।

रायपुर दक्षिण में गुरु-शिष्य के बीच कांटे की टक्कर

दांव पर लगी महंत की प्रतिष्ठा

रायपुर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। हर बार की तरह ही इस बार भी रायपुर जिले की रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट हाई प्रोफाइल है। कांग्रेस ने रायपुर जिले की हाई प्रोफाइल वीआईपी सीट रायपुर दक्षिण से पिछली बार चुनाव लड़ चुके कन्हैया अग्रवाल का टिकट काट कर सीएम के करीबी और प्राचीन दूधाधारी मठ के महंत रामसुंदर दास को टिकट दिया है। ऐसे में यहां पर चुनावी लड़ाई काफी रोचक हो गई है। अब इस सीट पर पूरे प्रदेश की नजर टिकी हुई है। क्योंकि बीजेपी प्रत्याशी और पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल महंत को अपना गुरु मानते हैं। ऐसे में गुरु और शिष्य के बीच कांटे की टक्कर देखने को मिल रही है।

बृजमोहन अग्रवाल और महंत राम सुंदर दास के बेहतर संबंध हैं। अग्रवाल मठ के कार्यक्रमों में लगातार शिरकत करते रहे हैं। बृजमोहन अपने पिता के साथ स्कूली जीवन से ही मठ जाते रहे हैं। महंत रामसुंदर दास के गुरु से मिलते रहे हैं। उनका आशीर्वाद लेते रहे हैं। क्योंकि ये मठ रायपुर दक्षिण विधानसभा में पड़ता है। बृजमोहन अग्रवाल के सामने लगातार 8वीं बार जीत के क्रम को दोहराने की चुनौती है तो कांग्रेस को इस सीट पर कब्जा करने के लिए बेचैनी है। हर बार कांग्रेस इस सीट पर नया चेहरा लाती है पर अब तक वो वो रायपुर दक्षिण किले पर फतह हासिल नहीं कर सकी है।

महंत रामसुंदर दास का कहना है कि वो इससे पहले भी दो बार कांग्रेस से विधायक रह चुके हैं।

जाजंगीर चांपा से विधायक रह चुका हूं और इस बार के लिए भी मैं जांजगीर चांपा से चुनाव लड़ने के लिए आवेदन किया था। कांग्रेस हाईकमान और वरिष्ठों ने मुझे रायपुर दक्षिण से प्रत्याशी बनाया है। इस बार जनता मुझे आशीर्वाद देगी और मैं उनका नौकर बनकर सेवादारी करूंगा।

'महंत यहां से नहीं लड़ना चाहते थे चुनाव'

दूसरी ओर मामले में वर्तमान विधायक बृजमोहन अग्रवाल का कहना है कि महंत यहां से लड़ना नहीं चाहते थे, लेकिन कांग्रेस उन्हें मजबूर करके यहां से चुनाव लड़ा रही है। क्योंकि वो जांजगीर चांपा से चुनाव लड़ना चाह रहे थे। इस संबंध में वो खुद ही बार-बार कह रहे थे कि रायपुर में मैं लड़ने की स्थिति में नहीं हूं। मेरे पास टीम नहीं है, संसाधन नहीं है, कार्यकर्ता नहीं हैं और सुविधा नहीं है। अग्रवाल ने कहा कि मुझे उनका आशीर्वाद आज से नहीं 40 साल से मिलता रहा है। इस बार भी उनका आशीर्वाद मिलेगा। 8वीं बार मुझे टिकट नहीं मिली है। 7 बार जनता जीती है और 8वीं बार भी जनता जीतेगी।

7 बार से विधायक हैं बृजमोहन अग्रवाल

बृजमोहन अग्रवाल 7 बार यानी 35 साल से इस सीट से विधायक हैं। वर्ष 2018 में इस सीट से कांग्रेस ने कन्हैया अग्रवाल को टिकट दिया था। बृजमोहन ने 52.70 फीसदी वोट हासिल कर जीत दर्ज की थी, जबकि कन्हैया अग्रवाल को महज 40.82 वोट मिले थे और उनकी हार हुई थी। बृजमोहन अग्रवाल 1990 में पहली बार अविभाजित मध्य प्रदेश में विधायक बने। फिर साल 1993 और 1998 में अविभाजित मध्य प्रदेश में तीन बार विधायक रहे। इसके बाद छत्तीसगढ़ राज्य गठन के बाद वो लगातार यहां से 4 बार वर्ष 2003, 2008, 2013, 2018 में चुनाव जीतते आ रहे हैं। साल 2018 के चुनाव में प्रदेशभर में कांग्रेस की लहर थी, लेकिन उस समय भी दक्षिण से भाजपा ने जीत हासिल की थी।

इस बार दोनों ही पार्टियों के सीनियर पदाधिकारियों ने कार्यकर्ताओं को निर्देशित किया है कि मतदान के मार्जिन से कोई लेना देना नहीं है। किसी भी हालत में केवल जीत चाहिए। यहां के लोगों का कहना है कि 12 प्रत्याशियों के नाम वापसी के चलते चुनावी समीकरण काफी दिलचस्प हो गया है। इससे पहले के चुनावों में दक्षिण से सर्वाधिक 12 से अधिक प्रत्याशी चुनाव मैदान में हुआ करते थे।

हाल ही में हुआ था हमला

हाल ही में बृजमोहन अग्रवाल के काफिले पर चुनाव प्रचार के दौरान हमला हुआ था। बृजमोहन अग्रवाल ने इसे कांग्रेस की ओर से प्रायोजित बताया था, तो कांग्रेस ने इसे चुनावी स्टंट करार दिया था।

रायपुर दक्षिण विधानसभा चुनाव 2018 का परिणाम

साल 2018 विधानसभा चुनाव के परिणाम की बात करें अग्रवाल 17 हजार से अधिक वोट से जीतकर सातवीं बार छत्तीसगढ़ विधानसभा में पहुंचे। बृजमोहन अग्रवाल को सबसे ज्यादा 77 हजार 589 वोट यानी 52.70 फीसदी वोट मिले। दूसरी स्थान कांग्रेस के प्रत्याशी कन्हैया अग्रवाल को 40.82 फीसदी वोट मिले। वहीं तीसरे स्थान पर नोटा ने अपनी जगह बनाई। महंत के लिए रायपुर दक्षिण सीट को भेदना आसान नहीं है। उनकी डगर आसान नहीं है। क्योंकि ये सीट बीजेपी की परंपरागत सीट मानी जाती है। रायपुर दक्षिण सीट बीजेपी का गढ़ है। विधायक बृजमोहन अग्रवाल 7 बार से विधायक हैं। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के पूर्व रायपुर शहर में केवल एक सीट हुआ करती थी।

जिनपिंग बोले- ताइवान को चीन में मिलाकर रहेंगे

धरती पर 2 सुपरपावर रह सकते हैं, बाइडेन ने चीन के राष्ट्रपति को तानाशाह कहा

सैन फ्रांसिस्को, 16 नवंबर (एजेंसियां)। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने बुधवार देर रात कैलिफोर्निया में मुलाकात की। इस मुलाकात का मकसद चीन-अमेरिका में जारी तनाव को कम करना था। दोनों नेता साल भर के बाद मिले हैं। ये मुलाकात कितनी अहम है इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस साल शी जिनपिंग ने सिर्फ तीन विदेश दौरे किए हैं। वो पहले दौरे पर रूस, दूसरे पर साउथ अफ्रीका गए। वो तीसरा दौरे पर अब अमेरिका में हैं।

बाइडेन और शी जिनपिंग की मुलाकात सैन फ्रांसिस्को में चल रही एपीईसी यानी एशिया-पैसेफिक इकोनॉमिक को-ऑपरेशन समिट के दौरान हुई है। दोनों नेताओं की मीटिंग के बाद चीन और अमेरिका फिर से मिलिट्री कम्युनिकेशन शुरू करने पर सहमत हुए हैं।

मीटिंग के दौरान दोनों देशों के मतभेद भी साफ-साफ दिखाई दिए। द्विपक्षीय बैठक के दौरान जिनपिंग ने कहा- अमेरिका ताइवान को हथियार देना बंद करे। हम ताइवान को चीन में मिलाकर रहेंगे। जिनपिंग ने कहा- चीन अमेरिका को पछाड़ना या उसकी जगह नहीं लेना चाहता है। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि अमेरिका चीन को दबाना बंद करे।

जिनपिंग ने आगे कहा- धरती इतनी बड़ी है कि यहां दोनों सुपर पावर रह सकती हैं। हमारा देश अमेरिका से अलग है, लेकिन हम इस फर्क के साथ भी ऊपर उठ सकते हैं। चीन और अमेरिका जैसे 2 बड़े देशों के लिए एक-दूसरे से मुंह फेरना विकल्प नहीं हो सकता। दोनों देशों में संघर्ष और टकराव के खतरनाक परिणाम हो सकते हैं।

बाइडेन बोले- जिनपिंग कम्युनिस्ट देश चलाने वाले तानाशाह

जिनपिंग से मुलाकात के बाद बाइडेन ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान एक रिपोर्टर ने बाइडेन से पूछा- क्या आप अब भी शी जिनपिंग को तानाशाह मानते हैं? इसके जवाब में बाइडेन ने कहा- वो तानाशाह हैं क्योंकि वो एक कम्युनिस्ट देश को चलाते हैं।

बाइडेन ने मीडिया से कहा- मेरी जिनपिंग से बहुत अच्छी बातचीत हुई। मैंने ताइवान मुद्दे पर फिर से अमेरिका का रुख साफ कर दिया। हम वन चाइना पॉलिसी का समर्थन करते हैं और ये कभी नहीं बदलने वाला है।

इससे पहले बाइडेन ने जिनपिंग के साथ मुलाकात के दौरान कहा- मैं हमारी बातचीत को महत्व देता हूं क्योंकि मुझे लगता है कि ये सबसे ज्यादा जरूरी है कि हम एक-दूसरे को साफ तौर पर समझें। यहां एक लीडर दूसरे लीडर से बात कर रहा है, इसलिए हमारे बीच कोई गलतफहमी नहीं हो सकती। हमें ये तय करना होगा कि हमारा कॉम्पिटिशन संघर्ष में न बदल जाए। इस पर जिनपिंग ने कहा- चीन के एक्सपोर्ट पर कंट्रोल और एकतरफा प्रतिबंध लगाकर अमेरिका हमारे हितों को नुकसान पहुंच रहा है। चीन की साइंस और टेक्नोलॉजी को दबाकर उसके विकास को रोका जा रहा है।

अमेरिका की ड्रग प्रॉब्लम का चीनी सॉल्यूशन

अमेरिका में फेंटानिल ड्रग के इस्तेमाल से हर साल 70 हजार से ज्यादा लोगों की मौत होती है। अमेरिका में इस ड्रग पर कई तरह की पाबंदियां हैं। हालांकि, चीन से एक्सपोर्ट होने वाली दवाओं में काफी मात्रा में फेंटानिल होता है। अमेरिका ने हाल ही के दिनों में चीन पर आरोप लगाए थे कि वो फेंटानिल वाली दवाओं से अमेरिका में नशे के कारोबार को बढ़ावा दे रहा है। हालांकि, बुधवार देर रात हुई बाइडेन-जिनपिंग की बैठक में इस मुद्दे को सुलझाने पर चर्चा की गई।

बाइडेन ने घोषणा की है कि चीन फेंटानिल ड्रग के प्रोडक्शन को कंट्रोल करेगा, जिससे अमेरिका की ड्रग समस्या पर लगाम लगाई जा सकेगी। इसके अलावा दोनों देशों एआई को न्यूक्लियर कमांड से दूर रखने पर भी सहमति बनी। दोनों राष्ट्राध्यक्षों की बाइलैटरल मीटिंग का सेशन करीब 2 घंटे तक चला। दोनों नेता आखिरी बार नवंबर 2022 में बाली में जी20 समिट में मिले थे।

अमेरिका की कॉमर्स सेक्रेटरी गिना रेमांडो ने कुछ दिन पहले कहा था- हम चीन से करीब 700 अरब डॉलर का ट्रेड करते हैं। इसमें 99% ट्रेड ऐसा है, जिसका एक्सपोर्ट कंट्रोल से कोई संबंध नहीं है। अमेरिका के नेशनल सिक्योरिटी एडवाइजर जैक सुलिवन कहते हैं- चीन और अमेरिका आर्थिक तौर पर एक-दूसरे पर निर्भर हैं।

वहीं, ट्रेजरी सेक्रेटरी जेनेट येलेन वॉर्निंग देती हैं। उनके मुताबिक- अगर अमेरिका और चीन आर्थिक रिश्ते तोड़ लेते हैं तो पूरी दुनिया को खराब नतीजे भुगतने होंगे।

इजराइल ने गाजा के अल शिफा अस्पताल में तैनात किए बुलडोजर

दावा- मिला हथियारों का बड़ा जखीरा

गाजा, 16 नवंबर (एजेंसियां)। हमास के हथियारों और उपकरणों का जखीरा मिलने के बाद से ही इजराइल ने गाजा के अल शिफा अस्पताल में अपना अभियान तेज कर दिया है। इजराइल ने अस्पताल के नीचे मौजूद सुरंग नेटवर्क में कमांड सेंटर होने का आरोप लगाया है। हालांकि संयुक्त राष्ट्र और मध्य पूर्वी देशों ने इजराइल की इस कार्रवाई की निंदा की।

इजराइल ने कहा- हथियारों का जखीरा मिला

इजराइली सैनिकों ने बुधवार को दिनभर अस्पताल में खोजबीन जारी रखी। इस दौरान इजराइली सैनिकों द्वारा एक वीडियो भी बनाया गया। जिसमें इजराइली सैनिक बता रहे हैं कि अस्पताल परिसर से स्वचालित हथियार, हथगोले, गोला बारूद जैसी सामग्री बरामद की गई है। गाजा पट्टी में इजराइली सैन्य अभियानों के प्रमुख मेजर जनरल यारोन फिंकेलमैन ने कहा, हमने शिफा अस्पताल में अभियान चलाया। इजराइल के इस दावे का अमेरिका ने समर्थन किया है। वहीं फलस्तीन के स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा, इजराइल ने अस्पताल के चारों ओर बुलडोजर तैनात कर दिए हैं। अल शिफा अस्पताल के निदेशक ने कहा, इजराइली सैनिकों के परिसर में आते ही सभी विभागों में पानी, बिजली और ऑक्सीजन सप्लाई को ठप कर दी गई। इजराइली कार्रवाई के बीच संयुक्त राष्ट्र के मानवतावादी प्रमुख मार्टिन ग्रिफिथ्स ने सोशल मीडिया में एक पोस्ट साझा करते हुए कहा, अस्पताल युद्ध का मैदान नहीं है, नवजात शिशुओं, रोगियों, चिकित्सक कर्मचारियों और सभी नागरिकों की सुरक्षा के लिए खड़े होना चाहिए। वहीं कतर ने इजराइली सैनिकों द्वारा अस्पताल में की गई कार्रवाई को लेकर संयुक्त राष्ट्र से तुरंत जांच की मांग की है। सात अक्तूबर को गाजा स्थित आतंकी समूह ने इजराइल पर पांच हजार रॉकेट दागे। जिसके बाद से ही इजराइल और हमास के बीच भीषण युद्ध शुरू हो गया। जवाबी कार्रवाई करते हुए इजराइली सेना ने हमास पर हमला किया, साथ ही लगातार उनके ठिकानों को तबाह कर रहा है। सात अक्तूबर को अपने ऊपर हुए आतंकी हमले पर इजराइल ने कहा कि 75 वर्षों के इतिहास में यह सबसे घातक दिन था। जिसमें 1,200 लोग मारे गए साथ ही लगभग कई लोगों को बंधक बनाया गया था।

हमास के राजनीतिक ब्यूरो प्रमुख के आवास पर आईडीएफ ने किया लड़ाकू विमानों से हमला

तेल अवीव, 16 नवंबर (एजेंसियां)। हमास और इजराइल के बीच जारी जंग के थमने के आसार हाल-फिलहाल नजर नहीं आ रहे हैं। इस बीच, इजराइल रक्षा बल (आईडीएफ) ने बड़ा दावा किया है। इजराइली आर्मी ने दावा किया है कि आईडीएफ लड़ाकू विमानों ने गाजा पट्टी में हमास के राजनीतिक ब्यूरो प्रमुख इस्माइल हानियेह के घर पर हमला किया। इजराइली रक्षा बल ने यह भी कहा है कि इस घर का इस्तेमाल इजराइल के खिलाफ आतंकवादी हमलों को निर्देशित करने के लिए आतंकवादी बुनियादी ढांचे और हमास नेताओं के लिए बैठक स्थल के रूप में किया गया था।

द टाइम्स ऑफ इजराइल की रिपोर्ट के अनुसार, हमास के राजनीतिक ब्यूरो के प्रमुख इस्माइल हानियेह कतर में रहते हैं, लेकिन उनका पारिवारिक घर गाजा पट्टी में है। इससे पहले, आईडीएफ ने गाजा के अल शिफा अस्पताल के अंदर हथियारों को दिखाते हुए एक वीडियो शेयर किया था। इस वीडियो में, आईडीएफ के लेफ्टिनेंट कर्नल जोनाथन कॉनरिकस अल-शिफा अस्पताल की एमआरआई इमारत का दौरा करते हुए भी दिखाए गए थे। इजराइली सैनिकों ने बुधवार को दिनभर अस्पताल में खोजबीन जारी रखी। इस दौरान इजराइली सैनिकों द्वारा एक वीडियो भी बनाया गया। जिसमें इजराइली सैनिक बता रहे हैं कि अस्पताल परिसर से स्वचालित हथियार, हथगोले, गोला बारूद जैसी सामग्री बरामद की गई है। गाजा पट्टी में इजराइली सैन्य अभियानों के प्रमुख मेजर जनरल यारोन फिंकेलमैन ने कहा, हमने शिफा अस्पताल में अभियान चलाया। इजराइल के इस दावे का अमेरिका ने समर्थन किया है।

सात अक्तूबर से जारी है जंग

सात अक्तूबर को गाजा स्थित आतंकी समूह ने इजराइल पर पांच हजार रॉकेट दागे। जिसके बाद से ही इजराइल और हमास के बीच भीषण युद्ध शुरू हो गया। जवाबी कार्रवाई करते हुए इजराइली सेना ने हमास पर हमला किया, साथ ही लगातार उनके ठिकानों को तबाह कर रहा है। सात अक्तूबर को अपने ऊपर हुए आतंकी हमले पर इजराइल ने कहा कि 75 वर्षों के इतिहास में यह सबसे घातक दिन था।

चीन में कोयला कंपनी के दफ्तर में भीषण आग

19 की मौत, कई घायल

बीजिंग, 16 नवंबर (एजेंसियां)। चीन के शांक्सी प्रांत में गुरुवार सुबह एक कोयला खनन कंपनी के दफ्तर में लगी भीषण आग में 19 लोगों की मौत हो गई। बताया गया है कि आग की चपेट में आकर कई लोग घायल भी हो गए। पुलिस के मुताबिक, ल्यूलियांग शहर के लिशी जिले में स्थित इस पांच मंजिला इमारत में आग दूसरी मंजिल तक पहुंच गई। इसे बुझाने के लिए दमकलकर्मियों को कड़ी मशक्कत करनी पड़ रही है। रिपोर्ट्स में कहा गया है कि यह इमारत एक निजी कोयला खनन कंपनी योंगजू कोल्स की है। यह कंपनी हर साल चीन में 120 टन कोयलने का खनन करती है।

जयशंकर ने उठाया खालिस्तानियों का मुद्दा

कहा- स्वतंत्रता के दुरुपयोग के खिलाफ सतर्कता जरूरी

लंदन, 16 नवंबर (एजेंसियां)। विदेश मंत्री एस जयशंकर ब्रिटेन के पांच दिवसीय दौरे पर थे। इस दौरान उन्होंने बुधवार को बैठक के दौरान कनाडा में खालिस्तान समर्थक गतिविधियों से जुड़े मुद्दे को उठाया। उन्होंने जोर देते हुए ब्रिटेन के नेताओं से कहा कि भाषण की स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक निश्चित जिम्मेदारी के साथ आती है और उन स्वतंत्रताओं का दुरुपयोग और राजनीतिक उद्देश्यों के लिए उस दुरुपयोग को बर्दाश्त करना बहुत गलत होगा।

वैश्विक और द्विपक्षीय मुद्दों के सभी आयामों पर चर्चा हुई

भारत रवाना होने से पहले लंदन में भारतीय उच्चायोग में मीडिया से बातचीत के दौरान विदेश मंत्री जयशंकर ने ब्रिटेन के कैबिनेट मंत्रियों और विपक्षी नेताओं के साथ अपनी चर्चा के कुछ पहलुओं को साझा किया, जिसमें वैश्विक और द्विपक्षीय मुद्दों के सभी आयामों पर चर्चा हुई। उन्होंने बताया कि ब्रिटेन के गृह मंत्री जेम्स क्लेवरली और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) टिम बैरो के साथ बैठक कीं। इस दौरान देश में अपने राजनयिकों की सुरक्षा के संबंध में खालिस्तान समर्थक चरमपंथ के संबंध में भारत की चिंताओं पर चर्चा हुई।

जयशंकर ने कनाडा में खालिस्तान समर्थक गतिविधियों का जिक्र करते हुए कहा, 'हम यहां सरकार को यह समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि लोकतंत्र के साथी के तौर पर हम अभिव्यक्ति और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के महत्व को समझते हैं, लेकिन उन्हें इन स्वतंत्रताओं के दुरुपयोग के खिलाफ सतर्क रहना चाहिए और राजनीतिक उद्देश्यों के लिए उस दुरुपयोग को बर्दाश्त करना बहुत गलत होगा।' बैठक के दौरान उन्होंने कनाडा में भारतीय उच्चायोग पर हमलों को याद किया और कहा कि भारतीय राजनयिकों को सार्वजनिक रूप से डराया गया था। कनाडाई अधिकारियों ने दोषियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की।

मार्च में भारतीय उच्चायोग में हुए हिंसक प्रदर्शनों पर उन्होंने कहा कि स्थिति की गंभीरता को पहचाना गया है और भारत की अपेक्षा है कि उसके राजनयिकों को आवश्यक सुरक्षा प्रदान की जाए और हिंसा और चरमपंथ की वकालत के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया जाए।

यह पूछे जाने पर कि क्या एफटीए पर आगामी 14वें दौर की वार्ता अंतिम होने की संभावना है, इस पर विदेश मंत्री ने कहा, 'हमने प्रगति की है, लेकिन मुझे लगता नहीं कि भविष्यवाणी करना या समयसीमा तय करना मेरे लिए सही होगा। मुझे लगता है कि दोनों पक्ष एफटीए के महत्व से अच्छी तरह वाकिफ हैं और इसे हासिल करने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे।'

ब्रिटेन के नवनियुक्त विदेश मंत्री डेविड कैमरन के साथ द्विपक्षीय वार्ता पर जयशंकर ने कहा कि उन्होंने रूस-यूक्रेन संघर्ष और पश्चिम एशिया में इजराइल-हमास संघर्ष जैसे कई क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा की। इस दौरान उन्होंने यह भी साझा कि कैमरन ने उन्हें इंग्लैंड और भारतीय क्रिकेट टीमों द्वारा हस्ताक्षरित क्रिकेट बल्ला भेंट किया।

वोलोदिमिर जेलेंस्की से मिले ब्रिटेन के नवनियुक्त विदेश मंत्री डेविड कैमरन

लंदन, 16 नवंबर (एजेंसियां)। ब्रिटेन के नए विदेश मंत्री डेविड कैमरन ने गुरुवार को यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की से मुलाकात की। बैठक के दौरान कैमरन ने यूक्रेन के लिए ब्रिटेन के समर्थन की बात दोहरायी। दोनों नेताओं ने हथियारों, वायु रक्षा को मजबूत करने और यूक्रेन के लोगों और उसके महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की रक्षा पर केंद्रित एक बैठक की। ब्रिटेन के विदेश मंत्री के रूप में डेविड कैमरन की यह पहली यूक्रेन यात्रा थी। ज़ेलेंस्की ने कहा, ब्रिटेन के विदेश सचिव के रूप में यूक्रेन की अपनी पहली यात्रा पर आए डेविड कैमरन की मेजबानी की। हमने अग्रिम मोर्चे के लिए हथियारों, वायु रक्षा को मजबूत करने और हमारे लोगों और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की रक्षा पर केंद्रित एक अच्छी बैठक की। उन्होंने कहा, मैं समर्थन के लिए ब्रिटेन का आभारी हूं।

सेना और पीडीएफ में संघर्ष जारी

सैन्य शिविरों पर नागरिकों का कब्जा

म्यांमार, 16 नवंबर (एजेंसियां)। म्यांमार के चिन राज्य में सैन्य शासन और सशस्त्र नागरिक समूह पीपुल्स डिफेंस फोर्स (पीडीएफ) के बीच हिंसक झड़प जारी हैं। पीडीएफ ने म्यांमार के कई सैन्य शिविरों पर कब्जा कर लिया, जहां से करीब 45 सैनिकों ने जान बचाकर मिजोरम में शरण ली है। मिजोरम के एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि अब तक म्यांमार के कुल 45 जवान भागकर मिजोरम आ चुके हैं। वही, आम नागरिक भी मिजोरम के सीमावर्ती गांव जोखावथार में बने शिविर में रहने के लिए आ रहे हैं।

केंद्र के निर्देश के मुताबिक म्यांमार की सेना के इन जवानों को असम राइफल्स को सौंप दिया गया, जहां से सभी को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया गया है। उन्होंने कहा कि सबसे पहले म्यांमार के 39 जवान मिजोरम में दाखिल हुए और सोमवार शाम को पूर्वी मिजोरम के चम्फाई जिले के सीमावर्ती गांव जोखावथर के निकटतम पुलिस थाने में पहुंचे। तीन और जवान मंगलवार दोपहर और दो अन्य शाम के वक्त म्यामांर से भागकर जोखावथर पुलिस थाने पहुंचे। इसके अलावा म्यांमार के करीब 31 हजार शरणार्थी भी मिजोरम में शरण लिए हुए हैं।

पिछले महीने लंदन में एक प्रमुख तेल और गैस उद्योग सम्मेलन के खिलाफ प्रदर्शन के मामले में गिरफ्तार किए जाने के बाद जलवायु कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग को बुधवार को ब्रिटिश अदालत से बड़ी राहत मिली है। मामले की सुनवाई को फरवरी 2024 के लिए टाल दिया गया है। इसके साथ ही थनबर्ग को बिना किसी शर्त के जमानत दे दी गई है।

पाकिस्तान के आगे नहीं झुका तालिबान तो बौखलाए जनरल मुनीर

अफगानिस्तान में करेंगे हमला!

इस्लामाबाद, 16 नवंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान ने जिस सांप को अपने पड़ोस में भारत के खिलाफ पाला था, अब वही उसे डस रहा है। जी हां, अफगानिस्तान में पाकिस्तान की मदद से अशरफ गनी सरकार को हटाकर सत्ता में आए तालिबान आतंकियों ने अब अपने आका के आगे झुकने से इंकार कर दिया है। पाकिस्तानी सेना बार-बार तालिबान से गुहार लगा रही है कि वह तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान यानि टीटीपी आतंकियों के खिलाफ ऐक्शन ले। ये टीटीपी आतंकी पाकिस्तानी सेना के खिलाफ अक्सर हमले करते रहते हैं। तालिबान को झुकाने के लिए पाकिस्तान ने लाखों की तादाद में देश में मौजूद अफगान शरणार्थियों को देश से बाहर जाने के लिए कह दिया। इससे भी तालिबानी नहीं झुके तो अब पाकिस्तानी सेना हमला करने के विकल्प विचार करने की धमकी दे रही है। यही नहीं पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने तालिबान सरकार के साथ अफगानिस्तान में मौजूद टीटीपी के ठिकानों की सूची साझा की है। पाकिस्तान ने कहा है कि हम अपेक्षा करते हैं कि तालिबान सरकार इनके खिलाफ कार्रवाई करेगी। वहीं तालिबान ने साफ कर दिया है कि टीटीपी की समस्या उनके सत्ता में आने से पहले है और यह पाकिस्तान का आतंरिक मामला है। तालिबान ने यह भी कहा कि टीटीपी के आतंकी अफगानिस्तान नहीं बल्कि पाकिस्तान के अंदर मौजूद हैं। वहीं अफगानिस्तान के साथ तनाव के बावजूद पाकिस्तान की सरकार को भरोसा है कि वह टीटीपी के मुद्दे को तालिबान के साथ सुलझा सकता है। पाकिस्तानी अधिकारियों का मानना है कि इस मामले से निपटने वाले अधिकारी भी ऐसा ही मानते हैं। उन्होंने कहा, 'यह आकस्मिक योजना का सवाल नहीं है। यह क्षमता का सवाल है और हमारे पास समस्या से निपटने की क्षमता है।' एक वरिष्ठ पाकिस्तानी अधिकारी ने बुधवार को द एक्सप्रेस ट्रिब्यून अखबार को नाम न छापने की शर्त पर बताया। वे पाकिस्तान के उन संभावित विकल्पों पर एक सवाल का जवाब दे रहे थे जिसमें कहा गया था कि अगर तालिबान टीटीपी आतंकियों संगठन को शरण देना जारी रखता है तो पाकिस्तान क्या करेगा।

हालांकि, पाकिस्तानी अधिकारी ने सटीक विकल्पों का खुलासा नहीं किया, बल्कि इस बात पर जोर दिया कि तालिबान सरकार भी हमारी क्षमता को जानती है। 'क्षमता' के उनके संदर्भ से पता चलता है कि पाकिस्तान संभावित सीमा पार हमलों पर विचार कर रहा है। पिछले साल मार्च में पाकिस्तान ने टीटीपी के ठिकानों को निशाना बनाकर सीमित सीमा पार हमले किए थे। हालांकि, उस कदम को कभी सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया गया था। इन हमलों के बाद तालिबान द्वारा मध्यस्थता के बीच पाकिस्तान और टीटीपी के बीच शांति वार्ता फिर से शुरू हुई थी।

चीन की ताकत बढ़ी तो भारत का रुतबा भी बढ़ा

बीजिंग, 16 नवंबर (एजेंसियां)। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा है कि अगर दुनिया में चीन की ताकत बढ़ रही है तो ये भी उतना ही बड़ा सच है कि भारत का प्रभाव भी बढ़ता जा रहा है। पत्रकार लायनेल बार्बर के साथ बातचीत के दौरान जयशंकर बोले- भारत और चीन दो सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक हैं। हम दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और जनसंख्या के हिसाब से हम सबसे आगे हैं। लंदन में भारतीय हाई कमीशन की तरफ से आयोजित एक चर्चा में जयशंकर ने वैश्विक मामलों में भारत की पोजिशन पर बात की। इस चर्चा का विषय था- अरबों लोग दुनिया को कैसे देखते हैं।

कनाडा और खालिस्तानी आतंकी निज्जर की हत्या के मामले पर बात करते हुए जयशंकर ने कहा- जब कनाडा में भारत के हाई कमीशन पर हमले हुए और डिप्लोमैट्स को धमकाया गया तब कनाडाई सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की। विदेश मंत्री ने आगे कहा- हम जांच से इनकार नहीं कर रहे हैं लेकिन कनाडा ने अब तक निज्जर की हत्या में भारतीय एजेंट्स के शामिल होने से जुड़े कोई सबूत नहीं दिए हैं। हमें लगता है कि कनाडा की राजनीति में हिंसा और चरमपंथ को जगह मिल रही है, जिससे भारत में अलगाववाद को बढ़ावा मिल रहा है। जयशंकर ने कहा- हम एक लोकतांत्रिक देश हैं और कनाडा में भी लोकतंत्र है।

बांग्लादेश में 7 जनवरी को आम चुनाव

ढाका, 16 नवंबर (एजेंसियां)। बांग्लादेश के चीफ इलेक्शन कमिश्नर काजी हबीबुल अवल ने बुधवार को ढाका में आगामी आम चुनावों की तरीखों का ऐलान कर दिया। 7 जनवरी को वोट डाले जाएंगे, जिसके लिए नामांकन पत्र जमा करने की आखिरी तारीख 30 नवंबर है। विपक्षी बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी और दूसरे कई दलों के हसीना सरकार के इस्तीफे की मांग को लेकर प्रदर्शनों के बीच चुनाव की घोषणा हुई है।

बांग्लादेश और भारत एक लंबी सीमा साझा करते हैं। दोनों मुल्कों का साझा इतिहास है और दोनों को अच्छे दोस्त माना जाता है। ऐसे में बांग्लादेश के चुनाव पर निश्चित ही भारत की भी निगाहें होंगी। ऐसे में ये जान लेना भी जरूरी है कि बांग्लादेश में चुनाव कैसे होते हैं और ये भारत की चुनावी प्रक्रिया से कितने मिलते-जुलते और कितने अलग हैं।

पाकिस्तान से अलग होकर 1971 में एक नया आजाद देश बने बांग्लादेश में भी भारत की तरह संसदीय व्यवस्था है। बांग्लादेश की पार्लियामेंट को हाउस ऑफ द नेशन कहा जाता है। हाउस ऑफ द नेशन बंगाली में जॉतीय संसद नाम से लोकप्रिय है। बांग्लादेश की संसद में कुल 350 सीटें हैं। इनमें 300 सीटों पर सीधे चुनाव होता है। लोग इन सीटों पर वोट डालकर अपना प्रतिनिधि चुनते हैं। बाकी 50 सीटे महिलाओं के लिए आरक्षित हैं। इन पर चुनाव नहीं होता है। इन पर महिलाएं सीधे नामित की जाती हैं। पार्टियों के बीच महिलाओं के लिए आरक्षित 50 सीटें वोट शेयर के आधार पर बांटी जाती हैं।

आधी से ज्यादा सीटें जीतने पर बहुमत

बांग्लादेश में भी भारत की तरह एक नागरिक को एक वोट डालने का अधिकार है। वहां भी लोग सीधे पीएम या राष्ट्रपति चुनने के लिए नहीं बल्कि सांसद चुनने के लिए वोट डालते हैं। बांग्लादेश में भी आधी से ज्यादा सीट जीतने पर, यानी 300 में से 151 सीट जीतने वाली पार्टी को बहुमत मिलता है। जिस पार्टी को बहुमत मिलता है, उसके सांसद अपना नेता चुनते हैं।

बहुमत पानी वाली पार्टी का नेता राष्ट्रपति के सामने सरकार बनाने का दावा पेश करता है। इसके बाद राष्ट्रपति बहुमत पाने वाली पार्टी के ससंदीय दल का नेता चुने गए सांसद को पीएम पद की शपथ दिलाता है। जिसके बाद पीएम अपने कैबिनेट को चुनता है।

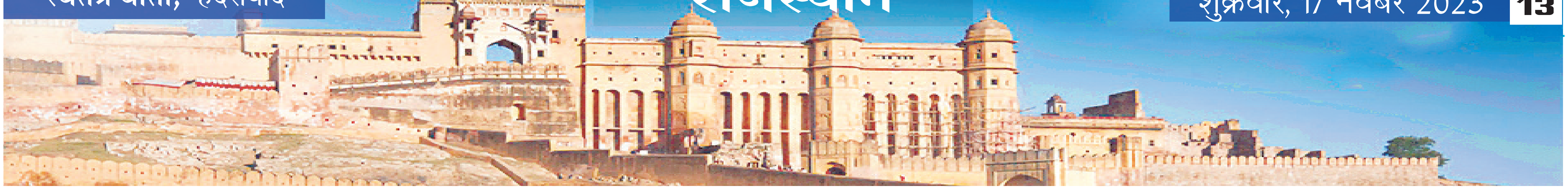

क्या वसुंधरा के आगे चलेंगे कांग्रेस के प्रयोग?

सिद्धि कुमारी लगा पाएंगी जीत का चौका! इस बार भी पूर्व राजपरिवारों के सदस्यों का दबदबा

जयपुर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। आजादी के बाद राजा और उनकी राजशाही भले ही खत्म हो गई, लेकिन पूर्व राजपरिवारों का राजस्थान की सियासत में आज भी खासा दखल है। कांग्रेस और भाजपा दोनों ही दलों ने इस बार भी पूर्व राजपरिवार के सदस्यों को मैदान में उतारा है। बीजेपी से 5 सदस्य चुनावी रण में हैं, जिनमें 4 महिलाएं शामिल हैं। वहीं कांग्रेस से राजपरिवार के एक सदस्य ही मैदान में हैं। राजपरिवारों से होना ही जीत की गारंटी नहीं होता है, लेकिन इन्होंने इस चुनाव को रोचक जरूर बना दिया है। राजस्थान की राजनीति में राजपरिवारों की पहले लोकसभा चुनाव से ही एंट्री हो गई थी। कई-कई सालों से ये परिवार आज भी सियासी पारी में जमे हुए हैं। कांग्रेस-भाजपा की तुलना करें तो कांग्रेस की बजाय भाजपा को पूर्व राजपरिवार ज्यादा पसंद हैं।

राजनीति का रॉयल कनेक्शन

बीकानेर के पूर्व महाराजा करणी सिंह 28 साल की उम्र में 1952 में सांसद बने। जयपुर की पूर्व राजमाता गायत्री देवी 1962 में जयपुर से सांसद चुनी गईं। उनकी जीत गिनीज बुक में दर्ज है।

जैसलमेर के महारावल रघुनाथ सिंह बहादुर 1957 में बाड़मेर से सांसद बने। जोधपुर राजपरिवार के हनुवंत सिंह ने 1952 में पूर्व सीएम जयनारायण व्यास को हराया।

चुनावी रण में उतरे पूर्व राजघराने

वसुंधरा राजे : धौलपुर के पूर्व राजपरिवार की वसुंधरा राजे प्रदेश की तीन बार सीएम रह चुकी हैं। वे झालरापाटन विधानसभा सीट से 2003 से लगातार विधायक चुनी जा रही हैं। एक बार केन्द्रीय मंत्री और लगातार 5 बार सांसद भी रह चुकी हैं। इस बार भी वे चुनावी रण में हैं।

दीया कुमारी : जयपुर के पूर्व महाराजा भवानी सिंह की बेटी दीया कुमारी विधाधर नगर विधानसभा सीट से तीसरी बार चुनावी मैदान में हैं।

सिद्धि कुमारी : 25 वर्षों तक बीकानेर के सांसद रहे पूर्व महाराजा करणी सिंह की पोती पूर्व राजकुमारी सिद्धि कुमारी लगातार 3 बार से भाजपा विधायक हैं और अब एक बार फिर मैदान में है।

शिवराज सिंह : उदयपुर का पूर्व राजपरिवार भी 25 साल बाद चुनाव मैदान में है। मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य विश्वराज सिंह मेवाड़ नाथद्वारा से पहली बार चुनाव लड़ रहे हैं। विश्वराज सिंह बीजेपी के प्रत्याशी हैं। करीब तीन दशक पूर्व विश्वराज सिंह के पिता महेंद्र सिंह राजनीति में सक्रिय थे। अब विश्वराज सिंह विधानसभा अध्यक्ष सीपी जोशी के सामने चुनाव में उतरे हैं।

कल्पना देवी: कोटा के पूर्व राजपरिवार की सदस्य कल्पना देवी लाडपुरा से मौजूदा विधायक हैं और एक बार फिर मैदान में हैं। उनके सामने कांग्रेस ने नईमुद्दीन गुड्डु को उतारा है।

विश्वेंद्र सिंह : डीग- कुम्हेर से कांग्रेस सरकार में पूर्व मंत्री रहे विश्वेंद्र सिंह, तीन बार विधायक और तीन बार सांसद रहे।

बीजेपी का वर्चस्व, वसुंधरा का गढ़ है झालरापाटन

कोटा संभाग की झालरापाटन विधानसभा बीजेपी का गढ़ है। यहां पिछले 33 वर्षों से बीजेपी जीत रही है। इस दौरान केवल एक बार 1998 में यहां कांग्रेस जीती थी। कांग्रेस के मोहन लाल ने बीजेपी के अनंग कुमार को हराया था। 2003 में वसुंधरा राजे के इस सीट से चुनाव लड़ने के बाद से यहां वे ही जीत रही हैं।

क्या सफल होगा कांग्रेस का प्रयोगकांग्रेस को यहां प्रत्याशी उतारने में भी काफी मशक्कत करनी पड़ती है। कांग्रेस कई प्रयोग कर चुकी है लेकिन यहां से वसुंधरा राजे को नहीं हरा सकी। कांग्रेस ने सचिन पायलट की मां रमा पायलट, पूर्व केंद्रीय मंत्री जसवंत सिंह के बेटे मानवेंद्र सिंह को भी चुनाव मैदान में उतारा था। 2018 में वसुंधरा राजे ने 34 हजार 980 वोटों से जीत दर्ज की थी।

भाजपा का घोषणा पत्र जारी: गरीब लड़कियों को मुफ्त शिक्षा

5 साल में ढाई लाख नौकरियां; पेपर लीक की जांच के लिए एसआईटी बनेगी

जयपुर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। विधानसभा चुनावों को लेकर बीजेपी ने आज अपना घोषणा पत्र जारी कर दिया है। भाजपा ने वादा किया है कि गेहूं की फसल 2700 रुपए प्रति क्विंटल खरीदी जाएगी। इसके साथ ही जिन किसानों की जमीन कुर्क हो गई है, उन्हें मुआवजा देने के लिए एक कमेटी बनवाई जाएगी। महिलाओं की सुरक्षा के लिए हर शहर में एंटी रोमियो फोर्स तैयार करवाई जाएगी और हर थाने में एक महिला डेस्क बनाई जाएगी।

वहीं मेरिट में आने वाली छात्राओं को 12वीं के बाद फ्री स्कूटी दी जाएगी। इसके साथ ही भाजपा ने पांच साल में ढाई लाख लोगों को सरकारी नौकरी देने का वादा किया है। भाजपा ने ERCP को पूरा करने का वादा भी किया है, अब तक कांग्रेस सरकार ERCP को लेकर भाजपा पर हमलावर थी।

गहलोत सरकार के घोटालों की जांच के लिए SIT बनाएंगे

भाजपा ने वादा किया है कि सरकार आई तो गहलोत सरकार में हुए भ्रष्टाचार की जांच के लिए एसआईटी गठित की जाएगी। इसके तहत पेपर लीक, जल जीवन मिशन, वृद्धा पेंशन घोटाले समेत सभी घोटालों की जांच होगी और दोषियों पर कार्रवाई की जाएगी। गौरतलब है कि चुनाव प्रचार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राजस्थान में हुए घोटालों पर कार्रवाई करने का वादा करते आ रहे हैं।

मप्र की लाडली लक्ष्मी योजना की तर्ज पर लाडो प्रोत्साहन योजना

इसमें 2 लाख रुपए का सेविंग बॉन्ड हर नवजात बेटी को दिया जाएगा। इसमें छठी क्लास में 6 हजार रुपए, नौंवी क्लास में 8 हजार रुपए, 10वीं क्लास में 10 हजार में, 12वीं क्लास में 14 हजार रुपए, प्रोफेशनल पढ़ाई के लिए 50 हजार रुपए और 21 साल की होने पर 1 लाख रुपए अकाउंट में डिपोजिट होगा। यह योजना मप्र की लाडली लक्ष्मी योजना की तर्ज पर शुरू की जाएगी।

गहलोत के परिवार को 11 हजार करोड़ का कॉन्ट्रैक्ट मिला : नड्डा

घोषणा पत्र जारी करने के बाद भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा कि राजस्थान में पेपर लीक के रिकॉर्ड बने हैं। वृद्ध पेंशन योजना में भी 450 करोड़ रुपए का घोटाला हुआ है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के परिवार को 11 हजार करोड़ का कॉन्ट्रैक्ट फैमिली से रिसीव हुआ है, यह बताता है कि कांग्रेस किस तरह से परिवारवाद-भ्रष्टाचार को बढ़ाती है।

जेपी नड्डा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी पिछले पांच साल में 5 बातों के लिए जाना जाती हैं। भ्रष्टाचार, महिलाओं के सम्मान के साथ खिलवाड़, किसानों का तिरस्कार, पेपर लीक, गरीब-दलित और पिछड़ों पर अत्याचार।

संकल्प पत्र समिति को मिले 1 करोड़ 3 लाख सुझाव

संकल्प पत्र समिति के संयोजक और केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने बताया कि बीजेपी ने घोषणा पत्र के लिए 17 अगस्त को संकल्प पत्र समिति का गठन किया था। इस समिति में उनके सहित 25 सदस्यों को शामिल किया गया था।

समिति का दावा है कि उसने करीब ढाई महीने तक अलग-अलग तरीकों से लोगों से संपर्क करके उनके सुझाव प्राप्त किए। समिति ने इस दौरान 1 करोड़ 23 लाख लोगों से संपर्क किया, जिनसे उन्हें 1 करोड़ 3 लाख सुझाव प्राप्त हुए हैं। उन्हीं सुझावों को ध्यान में रखते हुए घोषणा पत्र तैयार किया गया है।

'मुद्दा विहीन है भाजपा, हम अपनी योजनाओं के दम पर लड़ रहे', भरतपुर में बोले जयराम रमेश

भरतपुर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और राज्यसभा सांसद जयराम रमेश अपने एक दिवसीय प्रवास पर भरतपुर पहुंचे। यहां उन्होंने पत्रकारों से बात करते हुए राजस्थान विधानसभा चुनावों को लेकर चर्चा करने के साथ भाजपा सरकार पर जमकर हमला बोला और भारत जोड़ो यात्रा की जमकर तारीफ की।

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार के पास कोई भी चुनावी मुद्दे नहीं हैं, बल्कि उनके पास देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का चेहरा और केंद्र की एजेंसीज का दुरुपयोग करना ही बचा है। हम राजस्थान विधानसभा चुनावों में हमारी सरकार के पांच साल के कार्यों और आगामी योजनाओं को लेकर उतरे हैं।

कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और राज्यसभा सांसद जयराम रमेश ने पत्रकारों से बात चीत करते हुए कहा कि राहुल गांधी ने देश में भारत जोड़ो यात्रा प्रारंभ की, जिसका असर कर्नाटक चुनावों में देखा गया। भारत जोड़ो यात्रा से कांग्रेस में एकजुटता पैदा हुई। इस यात्रा का असर मध्य प्रदेश, तेलंगाना छत्तीसगढ़ और राजस्थान के विधानसभा चुनाव के नतीजों में भी देखे जाएंगे।

उन्होंने कहा भाजपा की रणनीति के दो हथियार हैं। एक हथियार पीएम नरेंद्र मोदी, ईडी, सीबीआई और इनकम टैक्स तो दूसरा ध्रुवीकरण की राजनीति। हमारे पास भी दो मुद्दे हैं, पहला पांच साल के कार्यकाल में क्या किया और आगामी पांच साल के कार्यकाल में क्या करेंगे।

विधानसभा चुनाव है दो विचारधाराओं का मुकाबला

उन्होंने कहा हमारी सरकार में राजस्थान के लोगों को गारंटी योजना दी जा रही है, जो उनके लिए फायदेमंद है। राजस्थान पांच साल में एक मॉडल के रूप में उभर के आया है। उन्होंने केंद्र सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश में गैस सिलेंडर 1100 से 1200 रुपये का है, लेकिन राजस्थान में यह 500 रुपये का है। राजस्थान सरकार ने किसानों को दो लाख तक का कर्ज माफ किया, लेकिन केंद्र सरकार ने इसमें कोई सहयोग नहीं किया।

उन्होंने कहा यह विधानसभा चुनाव है दो विचारधाराओं का मुकाबला है। मोदी सरकार की जो नीतियां हैं, वह राजस्थान के में नहीं है। केंद्र सरकार के द्वारा राजस्थान के पूर्वी क्षेत्र में लाभकारी ईआरसीपी योजना को राष्ट्रीय परियोजना घोषित नहीं किया गया। वहीं, उन्होंने कहा कि राजस्थान के युवाओं के लिए सेना में भर्ती होना एक रोजगार था, लेकिन केंद्र सरकार ने अग्निवीर योजना लागू कर युवाओं के सपनों पर पानी फेरने का काम किया है। सेवा के अधिकारी और हमारी सरकार ने इस योजना का विरोध किया था। अगर केंद्र में कांग्रेस सरकार आएगी तो इस योजना को बंद करने का काम करेंगे।

उन्होंने कहा केंद्र सरकार में महंगाई बेरोजगारी से लोग परेशान हैं। सन 2013 में पीएम मनमोहन सिंह द्वारा करवाया गया राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून को लेकर जब गुजरात के सीएम नरेंद्र मोदी थे तो उन्होंने इसका विरोध किया था।

ईरानी बोलीं- हम शेर की पार्टी के कार्यकर्ता, डरेंगे नहीं

देवली में बैंसला के समर्थन में सभा; राजसमंद के चारभुजा-देवगढ़ भी जाएंगी

राजसमंद, 16 नवंबर (एजेंसियां)। राजस्थान में केंद्रीय मंत्री गृहमंत्री अमित शाह का दौरा रद्द होने के बाद केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी टोंक के देवली पहुंचीं। यहां वे इटावा प्रत्याशी विजय बैंसला के समर्थन में जन सभा कर रही हैं। मंच से भारत माता की जय के नारे लगवाते हुए स्मृति ईरानी ने कहा कि हम शेर की पार्टी के कार्यकर्ता हैं, डरेंगे नहीं। उन्होंने देवली के अलट उद्यान में जन सभा को संबोधित करते हुए कहा- भीलवाड़ा में बच्ची से दुष्कर्म होता है, बलात्कार होता है। उसके टुकड़े-टुकड़े किए जाते हैं, उसे भट्टी में फेंक दिया जाता है। उसका एक हाथ बाहर रह जाता है। उस बेटी के परिवार के दुख की कल्पना कीजिए। बेटी की पहचान भी कैसे करें। वो कौन मां है जिसका दिल नहीं दहलता कि बेटी चौखट लांघे तो शाम को सम्मान से नहीं घर लौटेगी या नहीं। कांग्रेस के शासन में बेटियां सुरक्षित नहीं हैं।

मंच से स्मृति ने कहा- आदिवासी बेटियों को निर्वस्त्र कर घुमाया जाता है, कांग्रेस सरकार पर लानत है, चुप्पी साधकर बैठ जाते हैं। इस प्रदेश में मुख्य शहर में एक शिक्षिका जो मां सरस्वती का वरदात बच्चों को देती है, दिन के उजाले में जिंदा जला दिया जाता है। बुजुर्ग माता को पेड़ से बांधकर कोड़ों से मारा जाता है। राजस्थान में महिलाओं पर ये अत्याचार हुए हैं। केंद्रीय मंत्री ईरानी दोपहर 1 बजे के करीब टोंक के देवली पहुंचीं थीं। जहां सभा को संबोधित करने के बाद राजसमंद के चारभुजा व देवगढ़ में सभा करेंगी। इस दौरान वे चारभुजानाथ के दर्शन भी करेंगी। देवली में गुरुवार दोपहर 1 बजे के करीब केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी सभा स्थल पहुंचीं। उनके साथ इटावा से भाजपा प्रत्याशी विजय बैंसला और सांसद सुखबीर सिंह जौनापुरिया भी मंच पर हैं। यहां केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की सभा प्रस्तावित थी। अब उनके स्थान पर केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने जनसभा की। मंच पर जिला प्रमुख सरोज बंसल, भाजपा प्रत्याशी विजय बैंसला, सांसद रमेश विधुड़ी, जम्मू कश्मीर रामनगर विधायक रणवीर सिंह, पालिकाध्यक्ष रेखा जैन मंच पर मौजूद हैं। केंद्रीय स्मृति ईरानी ने मंच पर पहुंचने के साथ ही कांग्रेस जिला परिषद सदस्य सतेंद्र वर्मा, बसपा नेता सुरेश चंद्र तिवाड़ी और निर्दलीय पार्षद प्रताप विश्वास को भाजपा का दुपट्टा पहनाकर भाजपा जॉइन कराई। स्थानीय नेताओं ने मंच से संबोधित करते हुए कहा कि देशभर में नकली नोटों के जरिए पत्थरबाज युवा तैयार किए जा रहे थे। इन घातक हालात पर भाजपा शासन में पाबंदी लगी है, पत्थरबाजी की घटनाओं में कमी आई है।

सांसद रमेश विधुड़ी ने ने कहा- राजस्थान में भ्रष्टाचार, माता-बहनों पर अत्याचार हो रहा है। गहलोत के कारण लोगों को शर्मिंदगी झेलनी पड़ती है। यहां चेयरमैन और विधायकों द्वारा भ्रष्टाचार किया जा रहा है, ऐसा पैसा लोगों के हित में लगना चाहिए और ऐसे लोग जेल में जाने चाहिए। राजस्थान में भाजपा की डबल इंजन की सरकार बनेगी। एक महीने बार भ्रष्टाचारियों की लाइन जेल में लग जाएगी।

इससे पहले ईरानी का हेलीकॉप्टर केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल स्थित परिसर में उतरा। जहां से काफिला सीआईएसएफ लिंक रोड, पीर बाबा व गौरव मेडिकल (आयुर्वेदिक) से होते हुए सभा स्थल अटल उद्यान पहुंचा।

पूर्व विधायक कैलाश भंसाली का निधन

जोधपुर,16 नवंबर (एजेंसियां)। जोधपुर की शहर विधानसभा सीट से दो बार भाजपा से विधायक रहे कैलाश भंसाली का 82 वर्ष की उम्र में गुरुवार तड़के एमडीएम अस्पताल में निधन हो गया। काका के नाम से पहचान बनाने वाले भंसाली के देहांत की खबर के बाद शहर विधानसभा क्षेत्र में शोक की लहर है। बता दें कि कैलाश भंसाली दो-तीन महीने से लंग्स की बीमारी से पीड़ित थे। एम्स जोधपुर में उनका कुछ दिन इलाज चला था, फिर शास्त्रीनगर आवास पर ही आईसीयू का निर्माण कर उनका इलाज किया जा रहा था।

उन्हें सांस लेने में तकलीफ हुई तो उन्हें मथुरा दास माथुर (एमडीएम) हॉस्पिटल ले जाया गया था। जहां उन्हें वैंटिलेटर पर लिया गया। गुरुवार तड़के उनका निधन हो गया। वरिष्ठ नेता कैलाश भंसाली के निधन की सूचना पाने के बाद भाजपा कार्यकर्ता भंसाली के शास्त्रीनगर स्थित आवास पर पहुंच रहे हैं।

ईडी ने बाड़मेर विधायक मेवाराम के खिलाफ दर्ज की शिकायत

यौन शोषण मामले में पीएमएलए हुई दर्ज ,ईडी लेनदेन को लेकर विधायक मेवाराम से करेगी पूछताछ

जयपुर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। ईडी जयपुर ने बाड़मेर से तीन बार के कांग्रेस विधायक मेवाराम जैन की ओर से दर्ज कराई गई सेक्सटॉर्शन की शिकायत के संबंध में धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) का मामला दर्ज किया है। मेवाराम इस बार भी इसी सीट से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं। जैन ने आरोप लगाया था कि उन्हें ब्लैकमेल किया जा रहा था और वह सेक्सटॉर्शन रैकेट का शिकार हो गए थे। हाल ही में सोशल मीडिया पर उनकी कुछ तस्वीरें सामने आने के बाद उन्होंने दावा किया था कि यह जो तस्वीरें हैं एडिटेड हैं। घटनाक्रम पर संपर्क करने पर ईडी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया "हां, हमने इस संबंध में एक पीएमएलए का मामला दर्ज किया है क्योंकि यह पता चला है कि लगभग 5 करोड़ रुपए का आदान-प्रदान किया गया था। हम कथित तौर पर मेवाराम जैन की तस्वीरों और रुपयों के ट्रांजेक्शन की जांच कर रहे हैं। जैन ने हाल ही में इस संबंध में बाड़मेर पुलिस में एक नई शिकायत दर्ज कराई थी। इसलिए राजस्थान पुलिस की एफआईआर हमारे मामले का आधार है। "हम मामले में मनी ट्रेल को लेकर जांच करेंगे। हमारे मामले में जैन को पीड़ित या आरोपी के रूप में देखा जाएगा या नहीं, यह जांच के बाद साफ हो जाएगा।'

सेक्सटॉर्शन का मुद्दा पहली बार 2012 में सामने आया था। जब विधायक ने पुलिस से संपर्क किया और शिकायत दर्ज की गई थी कि कुछ स्थानीय पत्रकार 10 लाख रुपये की मांग कर रहे थे और भुगतान न करने पर सीडी सार्वजनिक करने की धमकी दी थी।कांग्रेस ने मेवाराम जैन को बाड़मेर सीट से उम्मीदवार बनाया है, जहां उन्होंने लगातार तीन बार अपने बीजेपी प्रतिद्वंद्वी को अच्छे अंतर से हराया है।

सीपी जोशी बोले- गहलोत सरकार की पूरी दाल काली

इस काली दाल की सरकार को सत्ता से हटाना है

जयपुर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने बायतू में विजय संकल्प जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि मारवाड़ में भाजपा की आंधी नहीं सुनामी है। यहां की जनता ने भ्रष्टाचारियों और व्यभिचारियों को वोट की पेटी में दफन करने का संकल्प ले लिया है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत सीडी कांड के एक जैसे मामले में दो तरह के निर्णय लेते हैं। किसी को बचाते हैं, किसी को फंसाते हैं। यह कैसा न्याय है। सरकार के एक मंत्री मुख्यमंत्री और उनके मंत्रियों पर व्यभिचारी होने का आरोप लगा चुके हैं। इनकी सरकार के कारनामों की पूरी दाल काली है और इस काली दाल को इस बार सत्ता से हटाना है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने कहा कि यह सनातन विरोधी सरकार है। इनकी राहत और विकास की गारंटियां फेल हो चुकी हैं।

निर्दलीय चुनाव लड़ रहे कांग्रेस के बागी

पार्टी ने सुनील परिहार और फतेह खान को 6 साल के लिए किया निष्कासित

बाड़मेर, 16 नवंबर (एजेंसियां)। राजस्थान में कांग्रेस ने प्रत्याशी के खिलाफ चुनाव में खड़े होने या विरोधी को समर्थन देने वाले 50 पदाधिकारियों को 6 साल के लिए निष्कासित कर दिया। इनमें बागी होकर चुनाव लड़ रहे सिवाना से सुनील परिहार, शिव से फतेह खान भी शामिल हैं। कांग्रेस पार्टी विरोधी नेताओं के खिलाफ एक्शन लेना शुरू कर दिया है।

दरअसल, बाड़मेर जिले की सात विधानसभा सीट में से 2 सीटों पर कांग्रेस से बागी निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं। शिव सीट से पूर्व जिलाध्यक्ष फतेह खान और सिवाना सीट से सीएम के करीबी और रीको डायरेक्टर सुनील परिहार टिकट मांगे रहे थे। टिकट नहीं मिलने से दोनों नाराज होकर निर्दलीय चुनावी मैदान में हैं। बागी नेता कांग्रेस के प्रत्याशियों को समीकरण बिगाड़ रहे हैं। राजस्थान कांग्रेस प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा ने दो दिन पहले ऐसे बागी प्रत्याशियों व नेताओं को 24 घंटे का अल्टीमेटम दिया था। उन्हे पार्टी प्रत्याशी के समर्थन में आने को कहा था। समय खत्म होने पर प्रभारी ने दोनों को 6 साल के लिए पार्टी से निष्कासित कर दिया।

शिव सीट पर बीजेपी ने जिलाध्यक्ष स्वरूपसिंह खारा को प्रत्याशी बनाया है। वहीं कांग्रेस ने 10 वी बार 84 साल के अमीन खान को टिकट दिया है।

पुलिसकर्मी को टक्कर मारकर भागने और डीजल-पेट्रोल चोरी करने के आरोप में चार लोग गिरफ्तार

सिरोही, 16 नवंबर (एजेंसियां)। सिरोही जिले में नाकाबंदी के दौरान पुलिसकर्मियों को टक्कर मारकर फरार और हाइवे पर खड़े ट्रकों से डीजल/पेट्रोल चोरी करने का मामला सामने आया था। मामले में पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। सिरोही में पालड़ी एम. पुलिस टीम द्वारा नाकाबंदी में तैनात पुलिसकर्मियों को टक्कर मारकर फरार एवं हाइवे पर खड़े ट्रकों से डीजल/पेट्रोल चोरी करने के मामले में चार आरोपी गिरफ्तार किए गए हैं। पुलिस के अनुसार, थानाधिकारी प्रभुराम की अगुवाई में सात अक्तूबर को नाकाबंदी की गई थी। बता दें कि पालड़ी एम. पुलिस टीम द्वारा नाकाबंदी की गई थी। उस दौरान वहां से गुजर रही वरना कार आरजे-19 सीसी-9123 के चालक अरतवाड़ा थाना पालडी एम. निवासी रवि कुमार पुत्र छगनलाल माली, पालडी जोड, थाना सुमेरपुर, जिला पाली निवासी राजेन्द्र सिंह पुत्र बलू सिंह राजपुरोहित, भगवत सिंह पुत्र लाभू सिंह राजपूत एवं अरठवाड़ा, धाना पालड़ी एम. निवासी जितेन्द्र सिंह पुत्र दलतप सिंह पुलिसकर्मियों को टक्कर मारकर फरार हो गए थे। आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है।

विधायक को जूतों की माला पहनाने की कोशिश

कार्यकर्ताओं और ग्रामीणों के बीच धक्का-मुक्की, जनसंपर्क करने गए तो हुआ हंगामा

बहरोड़, 16 नवंबर (एजेंसियां)। बहरोड़ में विधायक बलजीत यादव के समर्थकों और ग्रामीणों में धक्का-मुक्की हो गई। चुनावी प्रचार के दौरान विधायक को जूतों की माला पहनाने की कोशिश करने पर दोनों गुट भिड़ गए। मामले का एक वीडियो भी सामने आया है। जिसमें विधायक समर्थक और ग्रामीण हाथापाई करते नजर आ रहे है। बहरोड़ विधायक बलजीत यादव गांव गादोज में जनसंपर्क कर रहे थे। इस दौरान गांव के ही अधेड़ ने जूतों की माला पहनाने की कोशिश की। हालांकि, विधायक ने तत्परता दिखाते हुए अधेड़ को दूर कर दिया। इस दौरान विधायक समर्थकों ने अधेड़ के साथ धक्का-मुक्की कर दी। ग्रामीणों से मिली जानकारी में सामने आया कि गांव के राजपाल यादव (52) पुत्र हीरालाल यादव रात के समय लोई ओढ़कर (चादर ओढ़कर) विधायक के पास पहुंचे थे। उनके एक हाथ में फूलों की माला थी। वहीं, दूसरे हाथ में जूतों की माला को अपनी लोई में छिपाया हुआ था। उन्होंने जैसे ही विधायक को माला पहनने का प्रयास किया, विधायक ने तत्परता दिखाते हुए उन्हें रोक लिया और धक्का मारकर बच गए। मंच पर ये नजारा देखकर माहौल बिगड़ गया और विधायक के कार्यकर्ताओं और युवकों के बीच जमकर हाथापाई और धक्का-मुक्की हो गई। माहौल बिगड़ता देखकर ग्रामीण इधर-उधर भागने लगे। वहीं, ग्रामीणों ने नाली से कीचड़ फेंकना भी शुरू कर दिया।

मामले की सूचना के बाद बहरोड़ डीएसपी तेज कुमार पाठक पुलिस जाब्ते के साथ देर रात को मौके पर पहुंच गए। उन्होंने स्थिति को नियंत्रण में लिया। गुरुवार को डीएसपी ने अर्ध सैनिक बलों के साथ गांव में फ्लैग मार्च निकाला और यहां से तीन व्यक्तियों को शांतिभंग के आरोप में गिरफ्तार किया है।

अग्रोहा बैंक में 70वां अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह समारोह आयोजित

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। घांसी बाजार स्थित अग्रोहा को ऑपरेटिव अर्बन बैंक लिमिटेड के मेजबानी में 70वां अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह समारोह (14 से 20 नंबर) के अंतर्गत 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था में सहकारी की भूमिका विषय के अंतर्गत गैर-क्रेडिट सहकारी और वित्तीय समावेशन का पुनरुद्धार सत्र पर अर्बन बैंक की महत्ता पर चर्चा की गई। अवसर पर कार्यक्रम का शुभारंभ ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम में उपस्थित सहकारी विभाग के अधिकारी, बैंक स्टाफ व अन्य ने कर्तव्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा ली। तत्पश्चात सभी को संबोधित करते हुए जिला सहकारी अधिकारी डी.रमा देवी ने कहा कि पूर्व में जो कोऑपरेटिव का स्वरूप था उसमें बदलाव आया है और सहकारी विभाग को विकसित करने के लिए अलग से मंत्रालय बनाया गया है। कोऑपरेटिव का अहम भूमिका यही रही की लोगों को भारी ब्याज पर ऋण देने वाले महाजनों से मुक्ति दिलवाई जाए। इससे अर्बन बैंक की भूमिका विशेष तौर पर रही तेलंगाना में 50 से अधिक अर्बन बैंक है जो अपनी सेवाएं प्रदान कर छोटे-छोटे लोगों को कार्य के लिए ऋण उपलब्ध करवा रहे हैं। अर्बन बैंक भी कई चुनौतियों से जूझ रहा है और भविष्य में कोऑपरेटिव क्षेत्र बहुत ही विकसित होगा। सहकारी विभाग 70वां अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह समारोह मना रहा है जिसमें आज के कार्यक्रम की मेजबानी अग्रोहा बैंक ने कि है। बैंक काफी प्रगति कर रहा है और इसका एनपीए शून्य है जो बैंक की ऋण और वसूली की मजबूती को दर्शाता है। ऋण देने से पहले उसकी रिकवरी को भी देखा जाता है ताकि बैंक को बाद में परेशानी न हो। अग्रोहा बैंक विकसित करे यही कामना करते हैं और भारत देश को विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने में सहकारी बैंक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।

जिला सहकारी संयुक्त रजिस्ट्रार आर. संगीता ने कहा कि कोऑपरेटिव की शुरुआत पंडित जवाहरलाल नेहरू ने शुरुआत की और इन वर्षों में सहकारी क्षेत्र ने काफी विकास किया है और वर्तमान में अर्बन बैंक इसमें अच्छी भूमिका निभा रहे हैं। अर्बन बैंक को नियंत्रित करने के लिए सहकारी विभाग के साथ-साथ आरबीआई के मार्गदर्शन का अनुसरण किया जाता है। बैंक के एनपीए से ही उसके मजबूती का पता चलता है। उन्होंने कहा कि बैंक सहकारी अधिनियमों की धारा का पालन करते हुए अपने कार्य को अंजाम दे। जिला सहकारी उप रजिस्ट्रार टी.वेंकट रेड्डी ने कहा कि अर्बन बैंक को चाहिए की जब वे अपनी एजीएम का आयोजन करते हैं तो उसमें कोऑपरेटिव विभाग के अधिकारी को भी बुलायें ताकि समय पर वे भी उचित सुझाव दे सकें तथा बैंक को जो दिक्कत आ रही है उसका उचित समाधान दे। जिला सहकारी सहायक रजिस्ट्रार रानी बाई ने भी अपने विचार रखते हुए सहकारी विभाग द्वारा किये जा रहे कार्य की जानकारी दी। कार्यक्रम में सभी का स्वागत अग्रोहा बैंक के सीईओ नंदकिशोर बाहेती ने करते हुए बैंक की प्रगति के बारे में सभी को जानकारी दी।

अवसर पर जिला सहकारी विभाग के सिनियर इन्स्पेक्टर संदीप सिंह, मो.अजीमउद्दीन, जूनियर इंस्पेक्टर समरोस खान, फिर्जोज जुबीन, मुस्तफा हुसैन, अली, अग्रोहा बैंक के सीईओ नंदकिशोर बाहेती, हरिशचन्द्र शर्मा, वाई सुरेश कुमार, टी.पद्मावती, के.स्वप्न प्रिया, बी.विनय, मो.अब्दुल रऊफ, जी. प्रेमलता, वी. श्रीनाथ, एम.श्रीकला, एम.श्रीकांत, जी.कावेरी, एल.आकांक्षा, पार्वतुलु, संतोष कुमार पंवार, सी.रेणुका एवं बी.अंजना देवी व अन्य उपस्थित थे।

छठ पूजा के लिए सामीरपेट झील घाट का निरीक्षण करते हुए बिहार एसोसिएशन हैदराबाद के उत्तम यादव, मनोज कुमार, दीपक पांडा, चौधरी पंडित, अवधेश सिंह, रंजीत यादव, हरेराम यादव, गोविंद यादव, बालकृष्ण यादव, विनोद गुप्ता, प्रमोद गुप्ता, दीपक यादव।

सीरवी समाज प्रीमियर लीग-6 प्रतियोगिता 19 से

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। सीरवी फ्रेन्डस् क्लब हैदराबाद द्वारा आयोजित सीरवी समाज प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता के छठे संस्करण का शुभारम्भ रविवार 19 नवम्बर को सीरवी समाज क्रिकेट ग्राउंड अलियाबाद एवं त्यागी क्रिकेट ग्राउंड में आयोजित किया जाएगा। फ्रेन्डस् क्लब के सुरेश सैंणचा ने बताया कि हर वर्ष की भांति सीरवी समाज प्रीमियर लीग-6 का भव्य आयोजन मुख्य प्रायोजक सोहनलाल सेपटा सुधाकर पाईप श्री गणेश मार्केटिंग पेदा अम्बरपेट, को-स्पॉन्सर रुपेश चौधरी, मां आई प्रोडक्शन जगद्गिरीगुट्टा, ट्रॉफी शिवराज लक्ष्मीचन्द जैन ज्वैलर्स सोमाजीगुड़ा, लाईव खरताराम, प्रवीन आगलेचा नेक्सोन पेन्टस् जुबलीहिल्स, बॉल सुरेश चौधरी भारत स्पोटर्स एम.जी रोड़, नगद पुरुस्कार विजेता सुरेश, दिलीप चोयल नंदी टफ बोईनपल्ली, फाईनल मैच भोजन प्रायोजक पुजा गोल्ड, मोहनलाल सानपरा मोहन ज्वैलर्स पोट मार्केट, सिल्वर कॉइन टॉस विजेता ओमप्रकाश, राजुराम बर्फा रॉयल गोल्ड पोट मार्केट, जूस स्पॉन्सर तुलसाराम सिन्दड़ा न्यु बालाजी ज्वैलर्स चिल्कानगर, बांउड्री रोप अमराराम बर्फा गणेश ट्रेडर्स नाचारम, भोजन राजाराम, प्रकाश राठौड़ आसटिक सिंक एंड सीपी फिटिंग अलवाल, वेनाराम, मांगीलाल चोयल शुभम् ज्वैलर्स एल.बी.नगर, आनंद चौधरी ओम स्पोर्टस चिंतल, छोगाराम चौधरी पाबुजी प्लाईवुड वनस्थलीपुरम, मारुति एंटरप्राईजेज न्यु बाईपल्ली मोहनलाल, प्रदीपकुमार आगलेचा, कानाराम, गोविन्द देवड़ा, तिरुमला एजेंसी जिडीमेटला, मेड़चल क्रिकेट टीम, मांगीलाल सैंणचा अम्बिका सिल्बर पॉट मार्केट, घेवरराम सैंणचा आरएस सिल्वर पॉट मार्केट, हरि ओम मार्केटिंग एलबीनगर अशोक आगलेचा, ललित भायल, सीए जसराज चौधरी सिकंदराबाद, मोतीलाल आगलेचा जगदम्बा ज्वैलर्स मल्काजगिरी के विशेष सहयोग से आयोजित किया जाएगा। प्रतियोगिता मे 24 टीमें भाग लेंगी। जिसमें एल.बी.नगर, करमनघाट, संगारेड्डी, गजवेल, कोरेमुला, कापरा किंग्स, कुकटपल्ली, आनन्दबाग, रामनगर, ऑल विन 11, धम्माईगुडा, गुट्टा 11, शंकरपल्ली, शमशाबाद, तिरुमलगिरी, निजामपेट, मेड़चल, बालनगर, सुराराम, अलवाल, बिरमगुडा, द शील्ड रेबल्स, सैनिकपुरी, ईशनापुर टीमें भाग लेंगी। इस बार प्रतियोगिता में प्रत्येक टीम 5 लीग मैच, 8 प्री-क्वाटर, 4 क्वाटर फाईनल, 2 सेमी-फाईनल और फाईनल मुकाबला खेला जाएगा।

एनटीपीसी बीईई राज्यस्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। एनटीपीसी बीईई राज्यस्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित किया गया। कार्यक्रम में देबाशीष चट्टोपाध्याय, आरईडी (दक्षिण) मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर पर उपस्थित थे। उन्होंने बच्चों से दुनिया को रहने की एक बेहतर जगह बनाने के लिए अपने दैनिक जीवन में सीख का उपयोग करने के लिए कहा। बच्चों में जागरूकता पैदा करने के लिए पेंटिंग से बेहतर कोई तरीका नहीं हो सकता। और परिणाम देखने लायक हैं क्योंकि आज बच्चों ने कवाडीगुडा, सिकंदराबाद में एनटीपीसी कार्यालय में ऊर्जा कुशल दुनिया के अपने दृष्टिकोण को खूबसूरती से चित्रित किया है। ऊर्जा संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करने के साथ ऊर्जा दक्षता ब्यूरो और विद्युत मंत्रालय की एक पहल, कार्यक्रम तेलंगाना में एनटीपीसी द्वारा आयोजित किया गया था। राज्य स्तर पर, लगभग 394 बच्चों ने दो समूहों में भाग लिया: ग्रुप-ए (कक्षा 5, 6 और 7) और ग्रुप-बी (कक्षा 8, 9 और 10)। आज के अंतिम दौर का विषय था।

राज्य स्तर पर प्रत्येक समूह यानी 'ए' और 'बी' में सर्वश्रेष्ठ 13 (प्रथम, द्वितीय, तृतीय और 10 सांत्वना) को पुरस्कार दिया जाएगा, जबकि प्रत्येक समूह से शीर्ष 3 को राष्ट्रीय स्तर की पेंटिंग में भाग लेने के लिए भेजा जाएगा। प्रत्येक समूह में राज्य स्तर पर प्रथम पुरस्कार विजेता को 50 हजार, दूसरे पुरस्कार विजेता को 30 हजार और तीसरे पुरस्कार विजेता को 20 हजार रुपये दिए गए।

इंटर कॉलेज फेंसिंग चैम्पियनशिप आयोजित

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। हिन्दी महाविद्यालय में उस्मानिया इंटर कॉलेज फेंसिंग चैम्पियन (पुरुष-महिला) का आयोजन किया गया। इस टूर्नामेंट में 10 कॉलेज के छात्रों ने और में 12 कॉलेज की छात्राओं ने हिस्सा लिया। इस टूर्नामेंट में हिन्दी महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने बाजी मारी।

टूर्नामेंट के उद्घाटन के अवसर पर उस्मानिया विश्वविद्यालय के फिजिकल एजुकेशन डिपार्टमेंट के प्रिंसिपल एवं आईयूटी सचिव प्रो. सत्यनारायण, आईसीटी मेन्स सचिव डॉ. कृष्णा, हिन्दी महाविद्यालय समिति के अध्यक्ष सीए लक्ष्मीनिवास शर्मा, कोषाध्यक्ष सीए सतीश काबरा तथा प्राचार्य डॉ. बी. श्रीदेवी उपस्थित थे। महिला वर्ग में फेंसिंग ओवरऑल चैम्पियनशिप में हिन्दी महाविद्यालय प्रथम रहा। द्वितीय बीजेआर नारायणगुड़ा, तीसरा स्थान उस्मानिया विश्वविद्यालय लॉ कॉलेज का रहा। पुरुष वर्ग में फेंसिंग ओवरऑल चैम्पियन शिप में हिन्दी महाविद्यालय प्रथम, द्वितीय एचपीम कॉलेज ऑफ फिजिकल एजूकेशन शामीरपेट, तृतीय जी. पुल्ला रेड्डी कॉलेज रहा।

मुरलीनगर में अन्नकूट महोत्सव 19 को

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। संकट मोचन हनुमान मन्दिर मुलीनगर के मंडल पापा लाल व्यास ने जारी प्रेस विज्ञप्ति द्वारा बताया गया कि सायं 6 बजे हनुमानजी का श्रृंगार किया जायेगा। सायं 6.30 बजे भव्य रूप से हनुमान जी आरती की जायेगी। हनुमान जी को भोग लगाने के बाद अन्नकूट प्रसाद का आयोजन किया जायेगा। सभी धर्मप्रेमियों और भक्तों से निवेदन किया जाता है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर हनुमान जी के दर्शन एवं तीर्थ-प्रसाद का लाभ उठाये।

दीपावली मिलन पर अन्नकूट प्रसाद आयाजित

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। अग्रवाल समाज तेलंगाना की बालानगर शाखा द्वारा दीपावली मिलन पर अन्नकूट प्रसाद आज राम मन्दिर के पास अयप्पा स्वामी मन्दिर फतेहनगर में किया गया। सर्वप्रथम श्रीराम मंदिर में प्रसाद का भोग लगाया गया। तत्पश्चात महाराजा श्री अग्रसेन जी की पूजा कर शाखा अध्यक्ष सुरेश गर्ग, मानद मंत्री सुनील मित्तल एवं ओमप्रकाश भड्डुन्दा वाले एवं पवन सिंघानिया ने प्रसाद का शुभारम्भ किया। शाखा के पदाधिकारी, सदस्यों भाग लिया, इस प्रसाद में प्रमोद मोदी, सुरेश गर्ग, सुनील मित्तल, ओमप्रकाश भड्डुंदा वाले, पवन सिंघानिया, श्यामसुंदर सिग्नोडिया, नारायण सर्राफ, महेन्द्र सिग्नोडिया, सुरेश भड्डुदा वाले, सुशील पसारी, पवन चौधरी, ललित अग्रवाल, सुरेश सिंघानिया, विनोद भड्डुन्दा वाले, प्रदीप तुलस्यान, कांतिप्रसाद कामदार, अनिल अग्रवाल, नरेश अग्रवाल, नरेन्द्र शाह, शिवकुमार अग्रवाल, रवि सिंगनोडिया, राजेन्द्र अग्रवाल, नवीन अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

पीएमकेवीवाई 4.0 के तहत केंद्रीय विद्यालय एसवीपी एनपीए में "घरेलू डेटा एंट्री ऑपरेटर" पाठ्यक्रम

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम ने व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय विद्यालय एसवीपी, एनपीए को कौशल हब केंद्र के रूप में नामित किया है। कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम में, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के तहत संचालित राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) ने प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना के तहत(पीएमकेवीवाई) 4.0 योजना, केंद्रीय विद्यालय एसवीपी, एनपीए को कौशल हब केंद्र के रूप में चुना है।

यह निर्णय राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में उल्लिखित दिशानिर्देशों के अनुरूप है और इसका उद्देश्य 15-45 वर्ष के आयु वर्ग के बेरोजगार युवाओं और स्कूल छोड़ने वाले छात्रों को "घरेलू डेटा एंट्री ऑपरेटर कोर्स" में मुफ्त प्रशिक्षण प्रदान करना है। यह कार्यक्रम उन व्यक्तियों के लिए एक उल्लेखनीय अवसर है जो अपनी रोजगार क्षमता बढ़ाने और मूल्यवान कौशल हासिल करना चाहते हैं। चाहे आप वर्तमान में बेरोजगार हों, स्कूल छोड़ चुके हों, या केंद्रीय विद्यालय एसवीपी एनपीए के छात्र हों, आप इस पहल में भाग लेने के लिए पात्र हैं। इच्छुक उम्मीदवार "घरेलू डेटा एंट्री ऑपरेटर कोर्स" के लिए www.skillindiadigital.gov.in/home पर अपना पंजीकरण करा सकते हैं। वैकल्पिक रूप से, आप अधिक जानकारी और पंजीकरण के लिए केंद्रीय विद्यालय एसवीपी एनपीए शिवरामपल्ली में स्कूल के प्राचार्य से संपर्क कर सकते हैं। यह पहल युवाओं को व्यावहारिक कौशल से लैस करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करती है, जो अंततः उनके व्यक्तिगत विकास और रोजगार क्षमता में योगदान देती है। इस निःशुल्क प्रशिक्षण अवसर का लाभ उठाने का मौका न चूकें और अपने आप को एक उज्ज्वल भविष्य की राह पर अग्रसर करें।

6 दिसंबर को रविंद्र भारती सभागार में गौमाता को छप्पन भोग एवं अन्नकूट

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। रविंद्र भारती सभागार लकड़ी का पुल हैदराबाद में आगामी बुधवार दिनांक 6 दिसंबर को शाम 6 बजे सर्वदलीय गौरक्षा मंच का भाग्यनगर के गौभक्तों हेतु अन्नकुट प्रसादी एवं गौमाता, नंदी भगवान को 56 भोग का दिव्य एवं भव्य भंडारा कार्यकर्म किया जा रहा है। आज पारिख भवन कोलसावडी, बेगम बाजर में लव फॉर काऊ के चेयरमैन गौभक्त जसमत भाई पटेल के अध्यक्षता में हुई एक बैठक के बाद प्रेस विज्ञप्ति में सर्वदलीय गौरक्षा मंच तथा नमो गौ सुरक्षा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर जयपाल सिंह नयाल तथा कार्यक्रम के प्रचार मंत्री रामदेव नागला ने बताया कि शाम 6 बजे से रात 10 बजे तक होने वाले महा महोत्सव में शहर भर के संत सम्मानित गौभक्त बड़ी संख्या में सामिल होंगे । कार्यकर्म में सीताराम कल्याणम्म उत्सव के अंतर्गत 40 जूनियर कलाकारों द्वारा श्री राम के जन्म से विवाह तक की अद्भुत नाट्य लीला का मंचन किया जायेगा तथा पर्यावरण बचाने पेड़-पौधों से मानव का व्यौहार पर शानदार जूनियर कलाकारों द्वारा नृत्य नाटिका भी प्रस्तुत की जायेगी तथा बाल कृष्ण की ग्वाल बाल लीला, गौ चारण लीला एवं देवी दुर्गा के 9 अवतार की नृत्य नाटिका भी के सहयोग से होगा। बैठक में ठाकुर जयपाल सिंह नयाल, जसमत भाई पटेल, प्रमोद जी गोयनका, रामदेव नागला, श्री लाल पारिख, वासुदेव अग्रवाल, रामकिशोर शर्मा रांकावत, सूर्य कुमार यादव, साई यादव, चंचल सुगंध, और चौथ माता महिला मंडल की अनेक माताओं बहनों ने भाग लिया।

मणिकोंडा स्थित पूनम महिला मंडल ग्रुप द्वारा आयोजित दीपावली स्नेह मिलन कार्यक्रम में उपस्थित अध्यक्षा सुशीला देवड़ा, सीतादेवी देवड़ा, सुशीला, सोनिया देवड़ा व अन्य।

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच होगा फाइनल

साउथ अफ्रीका फिर चोकर्स साबित, 5वीं बार वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल में हारी

कोलकाता, 16 नवंबर (एजेंसियां)। ऑस्ट्रेलिया ने कोलकाता के ईडन गार्डन्स ग्राउंड पर खेले गए दूसरे सेमीफाइनल में साउथ अफ्रीका को 3 विकेट से हरा दिया। ऑस्ट्रेलिया की टीम 8वीं बार इस टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंची है। वहीं, साउथ अफ्रीका एक बार फिर बड़े टूर्नामेंट चोकर्स टीम साबित हुई। यह पांचवां मौका है, जब अफ्रीकी टीम वनडे वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल में हारी है।

साउथ अफ्रीका ने गुरुवार को हुए इस मुकाबले में टॉस जीतकर पहले बैटिंग करने का फैसला किया। टीम 49.4 ओवर में 212 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। डेविड मिलर ने सबसे ज्यादा 101 रन बनाए। मिचेल स्टार्क और पैट कमिंस ने 3-3 विकेट लिए। जवाब में ऑस्ट्रेलिया ने 47.2 ओवर में 7 विकेट खोकर टारगेट हासिल कर लिया। ओपनर ट्रेविस हेड ने 48 बॉल पर 62 रन की आक्रामक पारी खेली। बीच में स्टीव स्मिथ ने 30 और जोश इंग्लिस ने 28 रन बनाए।

पावर प्ले के पहले 6 ओवर में ऑस्ट्रेलिया ने शानदार शुरूआत की। ट्रैविस हेड और डेविड वॉर्नर ने 6 ओवर्स में 60 रन बना लिए। छठे ओवर में रबाडा ने 21 रन दिए।

7वें ओवर में कप्तान टेम्बा बावुमा ने बदलाव किया और ऐडन मार्करम ने वॉर्नर का विकेट दिलाया। यहां से साउथ अफ्रीका का कमबैक हुआ और 8वें ओवर में मिचेल मार्श भी आउट हो गए। आखिरी 4 ओवर में ऑस्ट्रेलिया 14 रन ही बना सका और साउथ अफ्रीका को 2 विकेट हासिल हुए।

अफ्रीकी टीम टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 49.4 ओवर में 212 रन पर ऑलआउट हो गई। डेविड मिलर ने 101 रन की शतकीय पारी खेली। उन्होंने दूसरा वर्ल्ड कप शतक जमाया। मिलर ने छक्के के साथ सेंचुरी पूरी की। वे वर्ल्ड कप के नॉकआउट में सेंचुरी जमाने वाले पहले साउथ अफ्रीकी बल्लेबाज बन गए हैं।

खैरताबाद में दानम नागेंद्र की डगर आसान नहीं

कांग्रेस व भाजपा के चक्रव्यूह में उलझे

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद शहर की प्रतिष्ठा की सीट बन चुकी खैरताबाद में चुनावी रंगत चढ़ने लगी है। यहां की जंग जीतने कांग्रेस व भाजपा उम्मीदवार बीआरएस प्रत्याशी पर भारी पडते नजर आ रहे हैं। कांग्रेस उम्मीदवार विजया रेड्डी, दिवंगत पूर्व सीएलपी नेता पीजेआर की बेटी हैं उनके चक्रव्यूह में बीआरएस उम्मीदवार दानम नागेंद्र पूरी तरह उलझ चुके हैं। रही-सही कसर भाजपा के चिंतला रामचंद्र रेड्डी ने पूरी कर दी है। विधानसभा चुनाव नजदीक आने के साथ ही सभी पार्टियों के उम्मीदवारों ने अपनी रणनीति पर काम करना शुरू कर दिया है। कांग्रेस उम्मीदवार पीजेआर की बेटी विजया रेड्डी तथा भाजपा के नेता चिंतला रामचंद्र ने बीआरएस के उम्मीदवार दानम नागेंद्र की जबर्दस्त घेराबंदी करते हुए उन्हें पूरी तरह से उलझा दिया है। बता दें कि पीजेआर की राजनीति की विरासत के लोग आज भी कायल हैं। आज भी उनके लाखों की संख्या में समर्थक उनकी बेटी के पक्ष में मैदान में डटे हैं। क्षेत्र में अपेक्षित विकास न होने के कारण बीआरएस उम्मीदवार दानम नागेन्द्र को लोगों के कड़े विरोध का सामना करना पड़ रहा है। लोग खुल कर विधायक दानम का विरोध कर रहे हैं। दूसरी ओर कांग्रेस व भाजपा प्रत्याशी की सभाओं में लोग भारी तादाद में जुट रहे हैं। दानम की क्षेत्र में निष्क्रियता की वजह से स्थानीय कार्यकर्ता व मतदाता उनसे किनारा कर रहे हैं। दानम नागेंद्र की वजह से कुछ कार्यकर्ताओं ने पार्टी छोडने का भी दावा किया है, जो चुनाव में उनके लिए शुभसंकेत नहीं है। जबकि अन्य दलों के कार्यकर्ता एकजुट होकर मतदाताओं से संपर्क बनाने में दिनरात एक किए हुए हैं। दूसरी ओर बीआरएस के वरिष्ठ नेता निर्वाचन क्षेत्र में अपनी पकड़ बनाए रखने की हर संभव कोशिश कर रहे हैं। इसके बाद भी उन्हें आशंका है कि समन्वय की कमी का असर विधानसभा के चुनाव परिणाम को प्रभावित कर सकता है।

कांग्रेस उम्मीदवार विजया रेड्डी व भाजपा नेता ने अपने कैंपेन में स्पष्ट आरोप लगाया है कि विधायक दानम नागेंद्र ने जनता के विकास के लिए कुछ कार्य नहीं किया है। इसलिए मतदाता उन्हें इस बार सबक सिखाने से नहीं चूकेगी।

मानव सेवा कल्याण संघ ने लिया छठ घाट का जायजा

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मानव सेवा कल्याण संघ, हैदराबाद द्वारा रेनबो हॉस्पिटल के पीछे स्थित चितलकुटा एमसी, पेदाचरम तालाब में छठ पूजा का आयोजन किया जायेगा। 17 नवम्बर को नहाये खाये से यह आरंभ होगा और 18 नवम्बर को खरना प्रसाद, 19 नवम्बर को शाम प्रथम अर्घ्य दिया जाएगा और 20 नवम्बर को सोमवार को प्रथम उगते सूरज को प्रथम अर्घ्य देकर छठ पूजा का समापन होगा।

इस सम्बन्ध में मानव कल्याण सेवा संघ, हैदराबाद समिति के संस्थापक कैलाश सिंह, अध्यक्ष मनोहर सिंह, उपाध्यक्ष राजकुमार पांडेय, बी. भास्कर, कोषाध्यक्ष राजीव वर्मा, संगठन मंत्री पंकज सिंह, आई. गणेश पाटिल, सतीश सिंह, अशोक झा, केएन त्रिपाठी और गुड्डू सिंह ने समाज बंधुओं से कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का आग्रह किया है। आज मंसूराबाद के कॉर्पोरेटर के. नरसिम्हा रेड्डी की देखरेख में तालाब की साफ सफाई का संघ के अध्यक्ष कैलाश सिंह, ओम प्रकाश, मनोहर सिंह, दिनेश मिश्रा एवम संगठन के कार्यकर्ताओं ने जायजा लिया।

प्रथम पृष्ठ का शेष भाग...

हवा में है...

तेलंगाना में 50 प्रतिशत से ज्यादा ओबीसी आबादी

2014 के घरेलू सर्वे के अनुसार, तेलंगाना की आबादी में 52% ओबीसी शामिल हैं, जबकि रेड्डी आबादी का लगभग 7% हिस्सा हैं। अनुसूचित जाति (एससी) लगभग 17% हैं जबकि अनुसूचित जनजाति (एसटी) लगभग 9% हैं।

हाल ही में, तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस कमेटी (टीपीसीसी) के प्रमुख रेवंत रेड्डी ने बीआरएस पर महिलाओं को दरकिनार करने का आरोप लगाया और कांग्रेस के सत्ता में आने पर महिलाओं को चार मंत्री पद देने का वादा किया। हालांकि, उनकी पार्टी ने भाजपा के विपरीत केवल 11 महिला उम्मीदवारों को मैदान में उतारा है, जिसने 15 महिलाओं को टिकट दिया है। बीआरएस ने भी आठ महिला उम्मीदवारों को मैदान में उतारा है।

2014 में राज्य के विभाजन तक मुसलमानों के बीच सबसे अधिक समर्थन रखने वाली कांग्रेस ने 2018 में 7 की तुलना में 4 मुसलमानों को मैदान में उतारा है, जबकि बीआरएस ने पिछली बार की तरह ही समुदाय से दो उम्मीदवारों को मैदान में उतारा है। हालांकि, एआईएमआईएम, जो 9 सीटों पर चुनाव लड़ रही है और एक गैर-मुस्लिम उम्मीदवार को मैदान में उतारा है, उसको बीआरएस के साथ गठबंधन के रूप में देखा जा रहा है।

भाजपा के पास पिछली बार की तरह इस बार भी कोई मुस्लिम उम्मीदवार मैदान में नहीं है। तेलंगाना की आबादी में 13% मुस्लिम हैं। तीनों दलों ने केवल आरक्षित सीटों पर एससी और एसटी उम्मीदवारों को मैदान में उतारा है। तेलंगाना में 19 एससी-आरक्षित सीटें हैं और 11 एसटी के लिए रखी गई हैं।

जयपुर में सोनिया...

हालांकि पोस्टर्स में इसकी शुरूआत हो चुकी है, जहां दोनों नेता साथ नजर आ रहे हैं। रैली में इसकी शुरूआत होगी। कांग्रेस कुछ उसी तरह का संकेत देना चाहती है, जैसे पिछले चुनाव में दोनों मोटरसाइकिल पर साथ प्रचार करते दिखे थे। वहीं सूत्रों के मुताबिक, जल्द ही कांग्रेस राजस्थान को लेकर अपना मेनिफेस्टो भी जारी कर सकती है। सीनियर नेता सीपी जोशी की अगुवाई में बना कांग्रेस के घोषणापत्र में कुछ अहम घोषणाएं हो सकती हैं। बताया जाता है कि कांग्रेस ने पंचायत स्तर पर इस लोगों से फीडबैक लेकर तैयार करवाया है। इसमें 25 लाख रुपये के स्वास्थ्य बीमा की राशि बढ़ाई जा सकती है।

नीतीश कुमार ...

बिहार को लेकर नीतीश कुमार ने आगे कहा कि बिहार दुनिया में सबसे आगे था लेकिन अब पीछे हो गया है तो केंद्र को जल्द ही विशेष राज्य का दर्जा देना चाहिए ताकि ये फिरसे बिहार आगे बढ़ जाए।

सीएम नीतीश कुमार ने केंद्र सरकार को चेतावनी देते हुए कहा, अब ये (केंद्र सरकार) इतना देर कर रहे हैं तो हम आंदोलन शुरू करेंगे ताकि विशेष राज्य का दर्जा मिले। नीतीश कुमार ने पत्रकारों से विनती भी कि और कहा, आप लोग मेरी एक बात बोल दीजिए कि नीतीश ने कुमार ने बोला है कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा मिलना चाहिए।

स्वतंत्र वार्ता
Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

पीएम मोदी ने दी भारत को जीत की बधाई
मोहम्मद शमी की तारीफ में कही बड़ी बात

नई दिल्ली, 16 नवंबर (एजेंसियां)। भारत ने सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड को रौंद कर फाइनल में प्रवेश कर लिया है। भारत और न्यूजीलैंड के बीच बेहद ही रोमांचक मुकाबला हुआ, कई दफा यह मुकाबला हार और जीत की तराजू पर रखा दिखा, लेकिन आखिरकार भारत ने इस मुकाबले को अपने नाम कर लिया है। भारतीय टीम को शानदार जीत के लिए देश भर से बधाई मिल रही है। इस कड़ी में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी भारतीय टीम को जीत की बधाई दी है।

भारतीय टीम को फाइनल के लिए शुभकामनाएं- पीएम

पीएम मोदी ने भारत की जीत पर ट्वीट कर बधाई दी है। पीएम ने 2 ट्वीट किए हैं। पहले ट्वीट में पीएम ने देश को बधाई देते हुए कहा कि भारत ने शा न दा र प्रदर्शन किया और शानदार अंदाज में फाइनल में प्रवेश किया। अच्छी बल्लेबाजी और अच्छी गेंदबाजी ने हमारी टीम के लिए मैच पक्का कर दिया। भारतीय टीम को फाइनल के लिए शुभकामनाएं। पीएम मोदी ने जीत की बधाई देने के साथ-साथ अगले मुकाबले के लिए शुभकामनाएं भी दी है।

पीएम मोदी ने की मोहम्मद शमी की तारीफ

पीएम मोदी ने इसके बाद एक और ट्वीट किया है। इस ट्वीट में पीएम ने भारत के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी कि जमकर तारीफ की है। पीएम ने शमी की तारीफ में बड़ी बात बोल दिया है।

पीएम ने कहा कि आज का सेमीफाइनल शानदार व्यक्तिगत प्रदर्शन की वजह से और भी खास हो गया है। इस मैच में भारत के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी की गेंदबाजी को क्रिकेट प्रेमी आने वाली पीढ़ियों तक याद रखेंगे। बता दें कि मोहम्मद शमी ने न्यूजीलैंड के खिलाफ 7 विकेट लेकर इतिहास रच दिया है। शमी ने आज कई रिकॉर्ड्स अपने नाम कर लिए हैं। शमी विश्व कप में सर्वाधिक पर 5 विकेट लेने वाले खिलाड़ी भी बन गए हैं।

पाकिस्तान क्रिकेट में हुआ बड़ा बदलाव
अहम पद पर विराजमान हुए 'प्रोफेसर'

इस्लामाबाद, 16 नवंबर (एजेंसियां)। मोहम्मद हफीज को पाकिस्तान क्रिकेट टीम का डायरेक्टर नियुक्त किया गया है। हफीज ग्रीन टीम की टेस्ट क्रिकेट में अगुवाई कर चुके हैं।

पूर्व खिलाड़ी मोहम्मद हफीज को पाकिस्तान पुरुष क्रिकेट टीम का डायरेक्टर नियुक्त किया गया है। वर्ल्ड कप 2023 में ग्रीन टीम के निराशाजनक प्रदर्शन के बाद पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने यह निर्णय लिया है। हफीज इससे पहले पीसीबी में क्रिकेट तकनीकी समिति का हिस्सा थे, लेकिन व्यक्तिगत विवाद के बाद हाल ही में अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। हफीज को फैंस प्यार से 'प्रोफेसर' नाम से भी पुकारते हैं।

आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2017 का खिताब पाकिस्तान ने अपने नाम किया था। इस चैंपियन टीम का हिस्सा हफीज भी थे। इस दौरान उनका प्रदर्शन भी सराहनीय रहा

था। 43 वर्षीय पूर्व क्रिकेटर अपने क्रिकेट करियर के दौरान ग्रीन टीम के लिए कुल 392 इंटरनेशनल मुकाबले खेलने में कामयाब रहा था।

इस दौरान उनके बल्ले से 429 पारियों में 12780 रन निकले। हफीज के नाम इंटरनेशनल क्रिकेट में 21 शतक, एक दोहरा शतक और 64 अर्धशतक दर्ज है। वहीं गेंदबाजी के दौरान उन्हें इतने ही मुकाबलों की 333 पारियों में 253 सफलता हाथ लगी है।

शाहीन अफरीदी और शान मसूद को मिली है अहम जिम्मेदारी

इससे पहले पाकिस्तान क्रिकेट टीम में शाहीन अफरीदी को टी20 का नया कप्तान चुना गया है। वहीं टेस्ट क्रिकेट की कमान शान मसूद के हाथों में दी गई है।

इन दोनों खिलाड़ियों से पूर्व पाकिस्तान की सभी फॉर्मेट में अगुवाई बाबर आजम कर रहे थे। वनडे कप्तान का ऐलान अब तक नहीं हो पाया है।

बाबर आजम ने लाहौर में पीसीबी प्रमुख जका अशरफ से मुलाकात के बाद हाल ही में कप्तानी से इस्तीफा फिया है। उन्होंने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर घोषणा करते हुए का कि, 'आज, मैं सभी प्रारूपों से कप्तान के रूप में अपना पद छोड़ रहा हूं।'

उन्होंने कहा, 'यह एक कठिन निर्णय है, लेकिन मुझे लगता है कि यह मौजूदा परिस्थिति के लिए सही निर्णय है। मैं तीनों प्रारूपों में एक खिलाड़ी के रूप में पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व करना जारी रखूंगा।' 29 वर्षीय बाबर नवंबर 2019 से ग्रीन टीम का नेतृत्व कर रहे थे।

न्यूजीलैंड पर ऐतिहासिक जीत के बाद ऐसा था टीम इंडिया के ड्रेसिंग रूम का माहौल

मुंबई, 16 नवंबर (एजेंसियां)। सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड को हराने के बाद टीम इंडिया के खिलाड़ियों ने ड्रेसिंग रूम में जमकर जश्न मनाया।

विश्व कप 2023 के पहले सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड टीम को हराकर टीम इंडिया ने फाइनल में जगह बना लगी है। अब टीम इंडिया का फाइनल में मुकाबला दूसरे सेमीफाइनल में जीतने वाली टीम के साथ होगा। भारत ने कीवी टीम पर 70 रनों से जीत दर्ज की, इस जीत के बाद टीम इंडिया के ड्रेसिंग रूम का माहौल काफी शानदार था। सभी खिलाड़ी इस पल पर काफी गौरव भी महसूस कर रहे थे जिसका वीडियो अब सामने आया है। फाइनल में पहुंचने के बाद टीम इंडिया के खिलाड़ियों ने खूब मस्ती की जो वीडियो में देखा जा सकता है।

जीत के बाद शानदार था ड्रेसिंग रूम का माहौल

फाइनल में पहुंचने के बाद टीम इंडिया के ड्रेसिंग रूम का माहौल काफी दिलचस्प था इस दौरान खिलाड़ियों ने काफी इन्जॉय भी किया। इस दौरान होटल से निकलने से लेकर और बस में बैठने तक फैंस ने टीम को घेर रखा था। टीम इंडिया की इस ऐतिहासिक जीत पर फैंस भी काफी गदगद थे। होटल के अंदर तक हजारों फैंस की भीड़ जमा थी। बता दें, हर मैच में फैंस का टीम इंडिया को भरपूर सपोर्ट मिल रहा है। सेमीफाइनल मैच जीतने के बाद टीम इंडिया फाइनल मुकाबले के लिए अहमदाबाद निकल गई।

बता दें, सेमीफाइनल मुकाबले में टीम इंडिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 50 ओवर में 4 विकेट खोकर 397 रन बनाए थे। भारत की तरफ से बल्लेबाजी करते हुए विराट कोहली और श्रेयस अय्यर ने शानदार शतक जड़े। बता दें, विराट कोहली का ये वनडे इंटरनेशनल में 50वां शतक है और ऐसा करने वाले वे दुनिया के पहले बल्लेबाज बन गए है।

इसके अलावा गेंदबाजी करते हुए मोहम्मद शमी ने 7 विकेट अपने नाम किए और उनको मैन ऑफ द मैच भी चुना गया।

टी20 वर्ल्ड कप में मिली हार ने रोहित की उड़ा दी थी नींद, कर लिया था प्रण
नासिर हुसैन ने बताई डीके की जुबानी

मुंबई, 16 नवंबर (एजेंसियां)। भारत की शानदार जीत में सभी खिलाड़ी अपना अहम योगदान दे रहे हैं, लेकिन इंग्लैंड के पूर्व कप्तान नासिर हुसैन असल हीरो रोहित शर्मा को मानते हैं।

वर्ल्ड कप 2023 में भारतीय बल्लेबाजों की धमक देखी जा रही है। कैप्टन रोहित शर्मा ने लेकर केएल राहुल तक, सभी बल्लेबाज अपने सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में नजर आ रह हैं। सेमी फाइनल मुकाबले में भी भारतीय धुरंधरों का बल्ला जमकर चल रहा है। विराट कोहली और श्रेयस अय्यर ने जहां शतक जड़ा। वहीं शुभमन गिल ने नाबाद अर्धशतक लगाया। इसके अलावा कैप्टन रोहित शर्मा और

राहुल अपना अर्धशतक पूरा करते-करते रह गए।

वहीं गेंदबाजी की बारी आई तो मोहम्मद शमी ने अपनी कहर बरपाती गेंदबाजी से सबको अपना दीवाना बना दिया। उन्होंने 9.5 ओवरों की गेंदबाजी करते हुए 5.79 की इकोनॉमी से 59 रन खर्च कर सर्वाधिक सात सफलता प्राप्त की। न्यूजीलैंड के खिलाफ

इस उम्दा गेंदबाजी के लिए उन्हें 'प्लेयर ऑफ द मैच' चुना गया।

मसाबा गुप्ता का रमीज राजा पर कड़ा प्रहार
विव रिचड्र्स पर की गई नस्लवादी टिप्पणी पर हंसना पड़ा भारी

खेल डेस्क, 16 नवंबर (एजेंसियां)। पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटर अपने बेतुके बयान से बाज नहीं आ रहे हैं हाल ही में अब्दुल रज्जाक ने बॉलीवुड एक्ट्रेस एश्वर्या राय को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। जिसके बाद सोशल मीडिया पर उनकी जमकर क्लास भी लगी थी और उनको माफी मांगनी पड़ी थी। वहीं अब पाक टीम के दूसरे पूर्व क्रिकेटर रमीज राजा ने पूर्व वेस्टइंडीज टीम के दिग्गज खिलाड़ी विव रिचड्र्स को लेकर नस्लवादी टिप्पणी की है जिसके बाद विव रिचड्र्स की बेटी मसाबा गुप्ता ने रमीज राजा को जमकर लताड़ लगाई है।

मसाबा ने रमीज राजा को दिया करारा जवाब

दरअसल एक पाकिस्तानी टीवी शो में रमीज राजा ने विवि रिचड्र्स और नीना गुप्ता के ऊपर की गई नस्लवादी टिप्पणी पर जमकर हंसी के ठहाके लगाए। हालांकि रमीज राजा का ये वीडियो 2 महीने पुराना है लेकिन अब उनकी इस वीडियो पर नीना गुप्ता और विवि रिचड्र्स की बेटी मसाबा ने जवाब दिया है।

एक्स पर पोस्ट शेयर करके मसाबा ने लिखा कि, "रमीज सर ग्रेस एक ऐसा गुण होता है जो बहुत कम लोगों में है और जो आपके पास तो बिल्कुल भी नहीं है। टीवी शो में बैठकर आप जिस जोक पर हंस रहे है उस पर दुनिया ने 30 साल पहले ही हंसना छोड़ दिया है। आपकों भविष्य में जीने की जरूरत है।"

मसाबा का ये वीडियो अब सोशल मीडिया पर काफी तेजी से वायरल हो रहा है। दरअसल एक पाकिस्तानी शो में कॉमेडियन नीना गुप्ता सर विवियन रिचड्र्स की चुटकी लेता है जिसके बाद कॉमेडियन सर रिचड्र्स को कालिया कहता है। इस दौरान शो में अतिथि के रूप में शामिल हुए रमीज राजा काफी हंसने लगते है।

जब शो के होस्ट ने कॉमिक से पूछा कि क्या वह क्रिकेट को फॉलो करती हैं या नहीं, तो उन्होंने जवाब दिया, "मैं क्रिकेट मैच देखती हूं और जब विवियन रिचड्र्स नीना गुप्ता के साथ रिलेशनशिप में गए तो मेरा दिल टूट गया। मैंने तब एक दोहा लिखा था, 'जो लड़कियां खुद' को कहती हैं मलिका-ए-आलिया, उनको फिर मिलता है मिस्टर कालिया।"

विश्व कप की शर्मनाक हार पचा नहीं पा रहा पाकिस्तान
अब टॉस में धांधली का लगाया आरोप

इस्लामाबाद, 16 नवंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान के पूर्व गेंदबाज सिकंदर बख्त ने भारत पर टॉस में गड़बड़ी करने का आरोप लगाया है।

विश्व कप में मिली शर्मनाक हार के बाद पाकिस्तान में बवाल थमने का नाम नहीं ले रहा। पाकिस्तान क्रिकेट में दो बड़े बदलाव हो चुके हैं। बाबर आजम ने सभी फॉर्मेट की कप्तानी छोड़ दी है तो वहीं पूर्व क्रिकेटर मोहम्मद हफीज को पाकिस्तान क्रिकेट का नया डायरेक्टर नियुक्त किया गया, लेकिन इसके बाद भी पाकिस्तानी हार को पचा नहीं पा रहे और भारत पर उल्टे-सीधे आरोप लगा रहे हैं। पूर्व पाकिस्तानी गेंदबाज सिकंदर बख्त ने अब टीम इंडिया पर टॉस में धांधली का आरोप लगा दिया है।

रोहित दूर क्यों फेंकते हैं सिक्का?

दरअसल, सोशल मीडिया पर सिकंदर बख्त का एक वी डि यो वायरल हो रहा है जिसमें वह एक टीवी डिबेट में आरोप लगा रहे हैं कि भारतीय टीम टॉस में धो खा ध ड़ी कर रही है। बख्त ने कहा है कि रोहित शर्मा जब टॉस करते हैं तो वह सिक्के को दूर फेंकते हैं और विपक्षी टीम का कप्तान जाकर देखता भी नहीं है कि जो कॉल किया गया है वह सही है या गलत। सिकंदर बख्त की इस बात के बाद वीडियो में रोहित शर्मा के टॉस वाले कुछ क्लिप जोड़े गए हैं, जिसमें रोहित से टॉस का सिक्का दूर गिरता नजर आ रहा है।

रेफरी ही देखता है टॉस का

सिक्का

सिकंदर बख्त का यह सवाल मजाकिया इसलिए है क्योंकि टॉस के समय सिक्के को देखने का काम मैच रेफरी का ही होता है। अक्सर दोनों टीम के कप्तान सिक्का उछलने के बाद अपनी-अपनी जगह पर ही रहते हैं और रेफरी के द्वारा ही सिक्के को देखा जाता है। फिर रेफरी ही बताता है कि किस टीम ने टॉस जीता है और फिर टॉस जीतने वाला कप्तान अपना फैसला बताता है कि वह पहले बल्लेबाजी करेगा या फिर गेंदबाजी। पाकिस्तान के इस पूर्व खिलाड़ी ने एक तरह से रेफरी पर भी सवाल उठाए हैं।

पिच को लेकर भी लगे हैं आरोप

वर्ल्ड कप से बाहर होने के बाद पाकिस्तान की ओर से यह कोई पहली बार भारत पर ऐसे आरोप लगे हैं। इससे पहले पाकिस्तान ने भारतीय पिचों को लेकर भी सवाल उठाए हैं। इसके अलावा पाकिस्तान के कोच मिकी ऑर्थर ने तो विश्व कप को आईसीसी का नहीं बल्की बीसीसीआई का इवेंट बता दिया था। उन्होंने कहा था कि स्टेडियम में 'दिल-दिल पाकिस्तान' नहीं बजाया जाता। बता दें कि पाकिस्तान की टीम लीग स्टेज पर ही टूर्नामेंट से बाहर हो गई। लीग स्टेज पर पाकिस्तान को लगातार चार हार का सामना करना पड़ा था। इसमें से एक भारत ने भी दी थी।

टूट गया श्रेयस अय्यर का रिकॉर्ड
कीवी बल्लेबाज ने जड़ दिया गगनचुंबी छक्का

मुंबई, 16 नवंबर (एजेंसियां)। डेरिल मिशेल ने भारत के खिलाफ मुकाबले के दौरान गगनचुंबी छक्का जड़ दिया है। इसके साथ ही उन्होंने श्रेयस अय्यर का रिकॉर्ड तोड़ दिया है।

भारत बनाम न्यूजीलैंड के बीच आईसीसी विश्व कप 2023 के पहले सेमीफाइनल मुकाबले में भारत के स्टार खिलाड़ी श्रेयस अय्यर का बड़ा रिकॉर्ड टूट गया है। आज के मुकाबले से पहले इस विश्व में सबसे लंबा छक्का जड़ने का रिकॉर्ड भारत के खिलाड़ी श्रेयस अय्यर के नाम था। अय्यर ने 106 मीटर का छक्का जड़ा था। अब कीवी बल्लेबाज ने इस रिकॉर्ड को ध्वस्त कर दिया है। न्यूजीलैंड के दिग्गज खिलाड़ी डेरिल मिशेल ने श्रेयस अय्यर का रिकॉर्ड तोड़ दिया है।

स्टेडिम के ऊपरी फ्लोर पर लगी गेंद

डेरिल मिशेल ने रविंद्र जडेजा की गेंद पर इतना लंबा छक्का जड़ा कि गेंद स्टेडियम के सबसे ऊपरी हिस्से पर जा लगा। गेंद सबसे ऊपरी फ्लोर पर जा लगा और नीचे गिरा। यह छक्का देखने में काफी शानदार था। आपको जानकर हैरानी होगी कि ये छक्का 107 मीटर का था। इस छक्के के साथ ही इस विश्व में सबसे लंबा छक्का जड़ने का रिकॉर्ड डेरिल मिशेल के नाम हो गया है। डेरिल मिशेल ने आज कमाल की पारी खेली है।

भारत ने न्यूजीलैंड के खिलाफ टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए स्कोर बोर्ड पर 397 रन लगा दिए। ऐसे में कीवी टीम को 398 रन बनाने की जरूरत है। यह टारगेट इतना आसान नहीं है, भारत की ओर से विराट कोहली और श्रेयस अय्यर ने शतकीय पारी खेली है। इसके अलावा शुभमन गिल ने भी 80 रनों की नाबाद पारी खेली है। आखिरी समय में राहुल ने 20 गेंदों में 39 रनों की पारी खेली। सभी खिलाड़ियों की मिली जुली साझेदारी के कारण भारत ने कीवी के सामने इतना बड़ा लक्ष्य रखा।

पिच विवाद में अब केन विलियमसन की एंट्री
सेमीफाइनल में मिली हार पर बोले कीवी कप्तान

मुंबई, 16 नवंबर (एजेंसियां)। वानखेड़े की पिच को लेकर सेमीफाइनल मुकाबले के बाद न्यूजीलैंड के कप्तान केन विलियमसन ने बड़ी बात करते हुए पिच का तारीफ की है।

बीते दिन सेमीफाइनल मुकाबले में भारत का सामना न्यूजीलैंड से हुआ। इस मैच को जीतकर टीम इंडिया ने फाइनल में जगह बना ली है।

यह मैच मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में खेला गया था। वहीं मैच इस्तेमाल हुई पिच को लेकर काफी बाते भी हुई और पिच बदलने की बात भी सामने आई थी। लेकिन न्यूजीलैंड के कप्तान केन विलियमसन ने माना की वानखेड़े की पिच काफी अच्छी थी। बता दें, इस पिच पर टूर्नामेंट में पहले भी मुकाबले खेले जा चुके हैं।

पिच को लेकर विलियमसन ने कही बड़ी बात

कीवी कप्तान ने माना की इस्तेमाल होने के बाद भी ये पिच काफी शानदार थी। मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेस में बोलते हुए केन विलियमसन ने कहा कि "भले ही ये इस्तेमाल हुआ विकेट था लेकिन फिर भी पिच काफी शानदार थी और भारतीय खिलाड़ियो ने बल्लेबाजी के दौरान इसका भरपूर फायदा उठाया। वहीं हमने देखा की शाम होते-होते यहां स्थिति बदल गई थी। लेकिन फिर भी वास्तव में हमने अच्छा खेल खेला।" भले ही सेमीफाइनल जैसे मुकाबले में न्यूजीलैंड हार गई हो लेकिन फिर भी टीम ने आखिर तक हिम्मत नहीं हारी और विलियमसन को अपनी टीम पर काफी गर्व भी है।

बात दें, इस मैच में टॉस जीतकर टीम इंडिया ने पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया था और पहले बल्लेबाजी करते हुए टीम इंडिया ने 50 ओवर में 397 रन बनाए थे। भारत की तरफ बल्लेबाजी करते हुए विराट कोहली ने 117, श्रेयस अय्यर 105, शुभमन गिल 80, रोहित शर्मा 47 और केएल राहुल ने नाबाद 39 रनों की पारी खेली थी। वहीं गेंदबाजी में मोहम्मद शमी का कहर देखने को मिला। शमी ने अकेले 7 कीवी बल्लेबाजों को आउट किया था। 398 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए न्यूजीलैंड की टीम 327 रनों पर ही ढेर हो गई। न्यूजीलैंड की तरफ से डेरिल मिचेल ने सबसे ज्यादा 134 रनों की पारी खेली थी। इसके अलावा कप्तान केन विलियमसन ने 69 रनों की पारी खेली थी। अब विश्व कप 2023 का फाइनल मुकाबला अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में 19 नवंबर को खेला जाएगा।

तेलंगाना की प्रगति को खतरे में डालना चाहती कांग्रेस : केसीआर

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। बीआरएस अध्यक्ष और मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव ने गुरुवार को यहां कहा कि कांग्रेस पार्टी बिचौलियों की व्यवस्था को पुनर्जीवित करने और बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने का प्रयास कर रही है, जिससे तेलंगाना में कृषि और किसानों की प्रगति खतरे में पड़ रही है, जिसे कांग्रेस नेता कृषि व्यय को कर राजस्व का दुरुपयोग बता रहे हैं। सीएम ने गुरुवार को आदिलाबाद और बोथ निर्वाचन क्षेत्रों में प्रजा आशीर्वाद सभा की बैठकों में विशाल सभा को संबोधित करते हुए कहा कि बीआरएस सरकार किसानों के कल्याण पर ध्यान केंद्रित कर रही है और कृषि के पिछले गौरव को पुनर्जीवित कर रही है।

यह दोहराते हुए कि कल्याण बीआरएस सरकार के लिए प्राथमिकता बनी हुई है और किसान-केंद्रित योजनाओं को समर्थन निरंतर जारी रहेगा, चंद्रशेखर राव ने कहा कि बीआरएस सरकार ने कृषि को मजबूत करने के लिए एक नीतिगत निर्णय लिया और रैतुबंधु, रैतु बीमा, निर्बाध बिजली आपूर्ति सहित कई पहल शुरू की और दूसरों के बीच जल उपकर भी समाप्त कर दिया।

कुछ नुकसान के बावजूद, राज्य सरकार किसानों से धान की पूरी फसल खरीद रही है, जिससे तेलंगाना में कृषि के सुधार में महत्वपूर्ण योगदान मिल रहा है। लेकिन एन. उत्तम कुमार रेड्डी जैसे कांग्रेस नेताओं को लगता है कि किसानों का समर्थन करने के लिए रैतु बंधु पर खर्च कर राजस्व की बर्बादी है। क्या यह फिजूल खर्च है? उन्होंने सभा से पूछा, जिसने ज़ोर से और दृढ़ता से 'नहीं' में उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि अपने तीसरे कार्यकाल में, बीआरएस चरणबद्ध तरीके से रैतु बंधु समर्थन को बढ़ाकर 16,000 रुपये प्रति एकड़ प्रति वर्ष करेगा।

मुख्यमंत्री ने कृषि के लिए तीन घंटे बिजली आपूर्ति का सुझाव देने के लिए टीपीसीसी अध्यक्ष ए. रेवंत रेड्डी पर भी कटाक्ष किया और उनके कृषि ज्ञान पर सवाल उठाया। टीपीसीसी अध्यक्ष चाहते हैं कि किसान तीन घंटे के भीतर अपनी भूमि की सिंचाई करने के लिए 10 एचपी मोटरें फिट कर लें, लेकिन कृषि कनेक्शन के लिए इन 10एचपी मोटरों को खरीदने का खर्च कौन वहन करेगा?

चन्द्रशेखर राव ने धरणीलैंड पंजीकरण प्रणाली के क्रांतिकारी प्रभाव की ओर इशारा किया, जिसने बिचौलियों और भ्रष्टाचार को खत्म कर दिया और किसानों/भूमि मालिकों को उनकी भूमि पर पूर्ण अधिकार के साथ सशक्त बनाया। राहुल गांधी की इस घोषणा की आलोचना करते हुए कि यदि कांग्रेस निर्वाचित हुई, तो धरणी पोर्टल को रद्द कर देगी, मुख्यमंत्री ने चेतावनी दी कि इस तरह के कदम से किसानों को आवश्यक सरकारी सहायता बाधित होगी, जिसमें रैतुबंधु, रैतु बीमा भी शामिल है और यहां तक कि सरकार को धान की बिक्री के माध्यम से किसानों को भुगतान का वितरण भी बाधित होगा।

बीआरएस अध्यक्ष ने मतदाताओं से कांग्रेस पार्टी को चुनने के परिणामों पर विचार करने का आग्रह किया, जो पिछले 10 वर्षों में राज्य की प्रगति को नष्ट कर देगी। 50 वर्षों तक, कांग्रेस ने हर चुनाव के दौरान लोअर पेंगंगा परियोजना के निर्माण का केवल वादा किया और फिर भी कोई भी वादा पूरा नहीं किया। हालाँकि, बीआरएस ने चनाका कोराटा बैराज का निर्माण करके अपना वादा पूरा किया, जो आदिलाबाद और बोथ निर्वाचन क्षेत्रों का भाग्य बदल देगा। हालांकि अधिकांश कार्य पूरे हो चुके हैं और वितरण नहरों से संबंधित कार्य प्रगति पर हैं। विधानसभा चुनाव के बाद हम 50,000 एकड़ से अधिक को सिंचाई का पानी उपलब्ध कराने के लिए इन्हें पूरा करेंगे।

राहुल गांधी आज 5 विधानसभा क्षेत्रों में रैलियों को संबोधित करेंगे

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। कांग्रेस सूत्रों ने बताया कि एआईसीसी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी शुक्रवार को तेलंगाना में पांच विधानसभा क्षेत्रों को कवर करते हुए नुक्कड़ सभाओं और रोड शो को संबोधित करेंगे। सूत्रों ने गुरुवार को बताया कि वह यहां राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर उतरेंगे और हेलिकॉप्टर से पिनापाका पहुंचेंगे, जहां वह एक रोड कॉर्नर मीटिंग को संबोधित करेंगे। पिनापाका से वह नरसंपेट जाएंगे जहां वह विभिन्न कार्यक्रमों में दो से तीन घंटे बिताएंगे।

पूर्व तट रेलवे

निविदा सूचना सं.eT-East-WAT-45-2023, दिनांक : 09.11.2023

कार्य का नाम : वरिष्ठ मण्डल अभियन्ता/ईस्ट/वाल्टियर के अधिकार क्षेत्र के अधीन संबंधित सेक्शन के लिए सीनियर सेक्शन इंजीनियर/कार्य/विजयनगरम एवं सीनियर सेक्शन इंजीनियर/कार्य/श्रीकाकुलम रोड के उपयोग हेतु दो वर्षों की समयावधि के लिए मजदूर एवं सामग्रियों को ले जाने के लिए प्रत्येक 1 टन क्षमता युक्त 2 संख्यक ट्रक किराये पर लेना।

कार्य की अनुमानित लागत (रुपये में) : 21,71,745.62, EMD(रुपये में) : 43,400/-, कार्य पूरा होने की अवधि : 24 (चौबीस) महीने

निविदा बंद होने की तिथि व समय : दिनांक : 05.12.2023 को 1330 बजे।

ऐसी ई-निविदा के तहत डाक/कूरियर/फैक्स या व्यक्तिगत रूप से भेजा गया कोई भी मैनुअल प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जायेगा, भले ही यह फर्म (Firm) के लेटर हेड एवं नियत समय पर प्राप्त किया गया हो। ऐसे सभी मैनुअल प्रस्ताव को अवैध माना जायेगा तथा उसके बारे में किसी विचार के बिना तत्काल निरस्त कर दिया जायेगा।

उपरोक्त ई-निविदा के ई-निविदा दस्तावेज सहित संपूर्ण जानकारी वेबसाइट http://www.ireps.gov.in पर उपलब्ध होंगे।

दृष्टव्य : प्रत्याशित निविदाकारों को यह सलाह दी जाती है कि इस ई-निविदा के लिए जारी कोई भी परिवर्तन/शुद्धिपत्र की ओर ध्यान देने के लिए वे निविदा खुलने से कम से कम 15(पंद्रह) दिन पहले वेबसाइट का पुन:अवलोकन करें।

मण्डल रेल प्रबंधक (इंजीनियरिंग), वाल्टियर

PR-775/O/23-24

केंद्र ने एक बार फिर तेलंगाना में रिकॉर्ड चावल उत्पादन को स्वीकार किया

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने एक बार फिर तेलंगाना के रिकॉर्ड चावल उत्पादन को स्वीकार किया है, और कहा है कि सबसे युवा राज्य देश में अग्रणी चावल उत्पादक है। खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के अनुसार, तेलंगाना का चावल उत्पादन 160.14 लाख मीट्रिक टन होने का अनुमान लगाया गया था। यह 2022-23 के दौरान तीसरे अग्रिम अनुमान के अनुसार विभाग के राज्य-वार चावल उत्पादन के अनुसार है।

एससीआर में जनरल व स्लीपर श्रेणी के यात्रियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। दक्षिण मध्य रेलवे (एससीआर) समाज के विभिन्न वर्गों के यात्रियों की सेवा करने में सबसे आगे रहा है। ज़ोन अपने नेटवर्क में अधिक संख्या में यात्रियों को रेल सेवाएं प्रदान करने के लिए नई ट्रेन सेवाओं की शुरूआत, विशेष ट्रेनों को चलाने, अतिरिक्त स्टॉपेज का प्रावधान और कोचों की वृद्धि आदि जैसे विभिन्न उपाय कर रहा है। नतीजतन, एससीआर ने यात्री खंड में महत्वपूर्ण वृद्धि देखी है और मौजूदा अवधि वित्तीय वर्ष यानी 2023-24 अक्टूबर तक के दौरान सामान्य और स्लीपर श्रेणी के यात्रियों की संख्या में प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की गई है।

अप्रैल से अक्टूबर, 2023 के दौरान जोन ने कुल 15.75 करोड़ यात्रियों को परिवहन सुविधा प्रदान की है। जोन ने सामान्य एवं सामान्य श्रेणी में 14.32 करोड़ यात्रियों को ढोया है। स्लीपर कोच जो कुल यात्रियों की संख्या का 90.9% है, वहीं इसी अवधि के दौरान एसी कोच में यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या 1.43 करोड़ है। पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में, जोन में नॉन एसी कोचों में यात्रियों की संख्या में 1.01 करोड़ और एसी कोचों में 27 लाख अतिरिक्त यात्रियों की वृद्धि हुई है।

दक्षिण मध्य रेलवे उन मार्गों की लगातार निगरानी कर रहा है जहां गंतव्य-वार और त्योहारों जैसे विशेष अवसरों के लिए यात्रियों की उच्च मांग है। तदनुसार, एससीआर ने विभिन्न क्षेत्रों के यात्रियों की सुविधा के लिए प्रति दिन 664 ट्रेनें संचालित की हैं। प्रति दिन संचालित होने वाली ट्रेनों की कुल संख्या में से 349 मेल/एक्सप्रेस ट्रेनें हैं। 209 यात्री विशेष ट्रेनें हैं और 106 एमएमटीएस ट्रेन सेवाएं हैं। राष्ट्रीय स्तर पर, भारतीय रेलवे वर्तमान में देश भर में प्रतिदिन 10,748 ट्रेनों का संचालन कर रहा है। रेलवे ने कुल 372 करोड़ यात्रियों को पहुंचाया है। जनरल और स्लीपर क्लास कोच, वहीं इसी अवधि के दौरान एसी कोच में यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या 18.2 करोड़ है। चालू वित्तीय वर्ष के दौरान अक्टूबर तक, पिछले वित्तीय वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 38 करोड़ यात्रियों ने गैर एसी कोच (जनरल और स्लीपर) में अतिरिक्त यात्रा की है और 3.1 करोड़ यात्रियों ने एसी कोच में यात्रा की है।

1 ईएमई सेंटर, सिकंदराबाद में सेना भर्ती रैली 9 दिसंबर से

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। यूनिट हेडक्वार्टर कोटा (यूएचक्यू) के तहत सेना भर्ती रैली 9 दिसंबर को 1 ईएमई सेंटर, सिकंदराबाद में अग्निवीर (जीडी), अग्निवीर तकनीकी, अग्निवीर एडमिन असिस्टेंट और अग्निवीर टीडीएन 10वीं शिक्षा मानक श्रेणी (शेफ समुदाय, ड्रेसर और सहायक कर्मचारी (ईआर)) और तैराकी और ड्राइविंग के क्षेत्र में उत्कृष्ट खिलाड़ियों के लिए ओपन श्रेणी के लिए भर्ती सैनिकों/पूर्व सैनिकों की संख्या और केवल वॉलीबॉल युद्ध विधवा/विधवा/पूर्व सैनिक/सैनिकों के बेटे और अपने भाई के लिए आयोजित की जाएगी।

रैली में भाग लेने के लिए सभी पात्र उम्मीदवारों को 9 दिसंबर, 2023 को सुबह 6 बजे कोटेश्वर द्वार, 4 ट्रेनिंग बटालियन, 1 ईएमई सेंटर, सिकंदराबाद में रिपोर्ट करना आवश्यक है। सभी श्रेणियों के लिए आयु सीमा साढ़े 17 वर्ष से 21 वर्ष है। अग्निवीर जनरल ड्यूटी (जीडी) के लिए शैक्षिक योग्यता कुल मिलाकर 45% अंकों के साथ 10वीं/मैट्रिक कक्षा उत्तीर्ण और प्रत्येक विषय में 33% है।

टीपीसीसी के पूर्व उपाध्यक्ष गली अनिल कुमार ने पार्टी छोड़ी

संगारेड्डी, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मेदक जिले में कांग्रेस को उस समय झटका लगा जब टीपीसीसी के उपाध्यक्ष गली अनिल कुमार, जिन्होंने एक विद्रोही के रूप में नरसापुर निर्वाचन क्षेत्र के लिए अपना नामांकन दाखिल किया था, ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया। टिकट की चाहत रखने वाले अनिल कुमार उस समय निराश हो गए जब पार्टी नेतृत्व ने अवुला राजी रेड्डी को टिकट देते समय उन्हें कोई अन्य पद देने का वादा नहीं किया। वित्त मंत्री टी हरीश राव ने पटनचेरु विधायक गुडेम महिपाल रेड्डी के साथ गुरुवार सुबह अनिल कुमार से अमीनपुर स्थित उनके आवास पर मुलाकात की और उन्हें बीआरएस में आमंत्रित किया।

तेलंगाना विधानसभा चुनाव : 2,290 उम्मीदवार चुनावी मैदान में

हैदराबाद, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य में 30 नवंबर को होने वाले चुनाव के लिए 119 निर्वाचन क्षेत्रों में 2,290 उम्मीदवार मैदान में हैं। जांच के बाद चुनाव अधिकारियों द्वारा कुल 2,898 वैध नामांकित उम्मीदवारों की पहचान की गई। इनमें से 608 ने बुधवार को नाम वापसी के आखिरी दिन अपना नामांकन वापस ले लिया। तदनुसार, अब 2,290 उम्मीदवार विभिन्न राजनीतिक दलों और निर्दलीय के रूप में चुनाव लड़ रहे हैं। सभी निर्वाचन क्षेत्रों में, एलबी नगर निर्वाचन क्षेत्र में 48 दावेदार हैं - जो राज्य में सबसे अधिक है। बांसवाड़ा और नारायणपेट में सात-सात दावेदार हैं, जो सबसे कम है।

सबसे अधिक 70 नामांकन गजवेल निर्वाचन क्षेत्र से वापस लिए गए, जहां से मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव चुनाव लड़ रहे हैं। मेडचल निर्वाचन क्षेत्र में, 45 नामांकन वापस ले लिए गए, जो सभी निर्वाचन क्षेत्रों में दूसरा सबसे अधिक है।

इस बीच, मतदाता सूची की अंतिम सूची के अनुसार, तेलंगाना में पुरुषों की तुलना में 1,63,02,261 मतदाताओं के साथ महिला मतदाताओं का दबदबा रहा। चुनावी अंतिम सूची के अनुसार, राज्य में 1,63,13,268 पुरुष मतदाता हैं और सेवा मतदाताओं की संख्या 15,406 है। तीसरे लिंग के मतदाताओं की संख्या 2,676 है, यानी तेलंगाना में मतदाताओं की कुल संख्या 3.26 करोड़ से अधिक है। युवा मतदाताओं (18 से 19 वर्ष के बीच) की संख्या 9,99,667 है और 80 वर्ष से अधिक आयु वालों की संख्या 4,40,371 है।

हैदराबाद जिले में कुल 45,36,852 मतदाता हैं। सेरिलिंगमपल्ली में 7,32,560 मतदाता हैं, जो राज्य में सबसे अधिक है और भद्राचलम में मतदाताओं की संख्या सबसे कम है, जो 1,48,713 है। चुनाव 30 नवंबर को होंगे और परिणाम 3 दिसंबर को घोषित किए जाएंगे।

वैजाग स्टील प्लांट का निजीकरण रोका गया : जीवीएल

विशाखापत्तनम, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। भाजपा के राज्यसभा सदस्य जीवीएल नरसिम्हा राव ने बुधवार को कहा कि विशाखापत्तनम स्टील प्लांट का निजीकरण रोक दिया गया है। यहां मीडियाकर्मियों से बात करते हुए उन्होंने कहा कि वास्तव में, प्लांट का निजीकरण शुरू ही नहीं हुआ था और यह निकट भविष्य में भी नहीं होगा, क्योंकि इरादा प्लांट को मुनाफा कमाने में मदद करना था। सांसद ने यह भी कहा कि विशाखापत्तनम से वाराणसी के लिए एक्सप्रेस ट्रेन 22 नवंबर को शुरू की जाएगी और यह उन लोगों के लिए वरदान होगी जो तीर्थस्थल की यात्रा करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि मैं सभी केंद्रीय परियोजनाओं में तेजी लाने की दिशा में प्रयास करूंगा। उन्होंने आरोप लगाया कि जगन सरकार श्रमिक वर्ग की उपेक्षा कर रही है। उन्होंने कहा कि अगर राज्य सरकार ईएसआई अस्पताल नहीं चला सकती तो उसे इन्हें केंद्र को सौंप देना चाहिए।

340 करोड़ रुपये की वरिकापुडिसेला लिफ्ट सिंचाई योजना का काम शुरू

माचेरला, 16 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। पर्यावरण, वन और वन्यजीव विभागों से सभी आवश्यक मंजूरी प्राप्त करने के बाद, मुख्यमंत्री वाईएस जगनमोहन रेड्डी ने बुधवार को यहां 340.26 करोड़ रुपये की लागत से वारिकापुडिसेला लिफ्ट सिंचाई योजना के कार्यों का औपचारिक रूप से शुभारंभ किया।

वाईएसआर पलनाडु सूखा शमन परियोजना के तहत शुरू की गई इस योजना में 20,000 लोगों को पीने का पानी उपलब्ध कराने और वेल्दुर्थी, उप्पलापाडु, गोट्टीपल्ला, श्रीगिरिपाडु, बोडिलावीडु, गंगालाकुंटा और कांडलाकुंटा गांवों को कवर करने वाली 24,900 एकड़ जमीन की सिंचाई करने की परिकल्पना की गई है।

इस अवसर पर बोलते हुए, जगन ने कहा कि हालांकि यह स्थान नागार्जुन सागर परियोजना के बगल में था, लेकिन लोग दशकों से सिंचाई और पीने के लिए पानी की जरूरतों से वंचित थे। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछली तेलुगु देशम पार्टी सरकार ने 2019 के चुनावों से ठीक पहले जमीन खरीदे बिना या आवश्यक मंजूरी प्राप्त किए बिना ही नारियल तोड़ दिया और लोगों को धोखा दिया।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.